चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 301, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शुक्रवार 01 दिसंबर 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

कन्नूर विश्वविद्यालय के वीसी को फिर से नियुक्त करने का फैसला रद्द

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को केरल के कन्नूर विश्वविद्यालय के वीसी को बड़ा झटका दिया। शीर्ष कोर्ट ने गोपीनाथ रवींद्रन को उनकी सेवानिवृत्ति के बाद भी कन्नूर विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में फिर से नियुक्त करने के राज्य सरकार के फैसले को रद्द कर दिया। साथ ही कोर्ट ने इस मामले में रवींद्रन के अनुचित तरीके से हस्तक्षेप करने की आलोचना की। इस मामले की चीफ जस्टिस डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने सुनवाई की। पीठ ने गोपीनाथ रवींद्रन को वीसी के पद पर दोबारा नियुक्त करने के कुलाधिपति और राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान के आदेश में गलती पाई। पीठ ने रवींद्रन की दोबारा नियुक्ति को बरकरार रखने वाले केरल हाई कोर्ट के फैसले को रद्द कर दिया।

राज्यपाल राज्य में विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति होते हैं

बता दें कि राज्यपाल किसी भी राज्य में विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति होते हैं। राज्यपाल कुलाधिपति के रूप में सभी विश्वविद्यालय के मामलों पर निर्णय लेने में मंत्रिपरिषद से स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं।

दूषित आयुर्वेदिक सिरप पीने से पांच की मौत, दुकानदार समेत तीन गिरफ्तार

गांधीनगर

गुजरात के खेड़ा जिले में दूषित आयुर्वेदिक सिरप पीने से पांच लोगों की मौत हो गई। वहीं दो अन्य लोगों की हालत गंभीर है, जिनका अस्पताल में इलाज चल रहा है। पुलिस का कहना है कि दूषित आयुर्वेदिक सिरप में मिथाइल एल्कोहल पाया गया है। बता दें कि मिथाइल एल्कोहल जहरीला तत्व है। आयुर्वेदिक सिरप को 'कलमेघासव- असव अरिष्ट' नाम से बेचा जा रहा था। पुलिस जांच में पता चला है कि खेड़ा जिले के नाडियाड शहर के नजदीक स्थित बिलोदारा गांव में एक दुकानदार ने करीब 50 लोगों को यह आयुर्वेदिक सिरप बेचा था। खेड़ा के एसपी राजेश गढ़िया ने बताया कि गांव वालों की जांच में उनके रक्त में मिथाइल एल्कोहल पाया गया है।

एग्जिट पोल: राजस्थान में भाजपा को बढ़त

राजस्थान में भाजपा और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की जीत का अनुमान, बीआरएस को लगेगा झटका

नई दिल्ली

हिंदी पट्टी के 3 प्रमुख राज्यों- राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के एग्जिट पोल नतीजों के अनुमान सामने आ गए हैं। वोटर्स से मिले इन अनुमानों में राजस्थान में भाजपा और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की जीत होती दिख रही है। सबसे ज्यादा 230 सीटों वाले मध्य प्रदेश में भी कांग्रेस को बढ़त है। 12 से 27 नवंबर के बीच 33 हजार से ज्यादा लोगों से संभावित हार-जीत के बारे में फीडबैक लिया।

राजस्थान में भाजपा को पूर्ण बहुमत, रिवाज बरकरार

राजस्थान के वोटर्स रिवाज को कायम रखते हुए राज बदलने के संकेत दे रहे हैं। 200 सीटों वाले राजस्थान में 17 नवंबर को एक सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी के निधन के कारण 199 सीटों पर वोटिंग हुई थी। पोल में यहां भाजपा को 98 से 105 सीटें मिलने का अनुमान है। लग रहा है कि कांग्रेस इस बार दो अंकों में सिमटती हुई 85 से 95 सीटों के बीच ही ला पाएगी।

बागी और निर्दलीय प्रत्याशी 10 से 15 सीटें ला सकते हैं, लेकिन 2018 की तरह किंगमेकर नहीं बन पाएंगे क्योंकि भाजपा पूर्ण बहुमत अपने दम पर लाती दिख रही है।

मध्य प्रदेश में कांग्रेस को बढ़त, हंग असेंबली के आसार

230 सीटों वाले मध्य प्रदेश में इस बार चुनावी इतिहास का सबसे दिलचस्प मुकाबला है। यहां के एग्जिट पोल में जीत-हार की बजाय कांटे की ऐसी टक्कर है जिसमें सिर्फ 10 सीटों से बाजी पलट सकती है। कांग्रेस को 105 से 120 सीटें मिल सकती है, जबकि भाजपा 95 से 115 तक पहुंच सकती है। निर्दलीय और बागी 15 सीटों के साथ किंगमेकर बन सकते हैं। यहां लगभग 2018 के नतीजों जैसी ही स्थिति है जब कांग्रेस ने निर्दलीय और बागियों के समर्थन से सरकार बनाई थी।

छत्तीसगढ़ में कांग्रेस को पूर्ण बहुमत, भाजपा का बेस बढ़ा छत्तीसगढ़ के वोटर्स कांग्रेस और भूपेश बघेल पर फिर से भरोसा दिखाते लग रहे हैं। पोल में यहां कांग्रेस को 45 से 55 सीटों के साथ पूर्ण बहुमत मिलने का अनुमान है। हालांकि कांग्रेस 2018 जैसा एकतरफा प्रदर्शन दोहराती नहीं दिख रही, लेकिन इसे पूर्ण बहुमत मिल रहा है।

2018 में कांग्रेस ने 90 में से 68 सीटें जीतकर भाजपा को सिर्फ 15 सीटों पर समेट दिया था। दोनों मुख्य पार्टियों के बागी, अमित जोगी की जनता कांग्रेस और निर्दलीय करीब 10 सीटें पा सकते हैं, लेकिन सरकार बनाने में इनकी कोई भूमिका नजर नहीं आती।

तीनों राज्यों में वोट स्विंग प्रतिशत का हिसाब

राजस्थान : यहां सरकार में लौट रही भाजपा को 4% निर्णायक वोट ज्यादा मिलने का अनुमान है। जबकि कांग्रेस के 3% वोट घट रहे हैं। निर्दलीय और छोटी पार्टियों के वोटों में भी 1% की कमी हो सकती है।

मध्य प्रदेश: सिंधिया के साथ आने और उपचुनाव के जरिये फिर से सत्ता पाने वाली भाजपा को करीब 5% वोटों का नुकसान होता लग रहा है। कांग्रेस का वोट शेयर 6% बढ़ रहा है। यहां निर्दलीय और छोटी पार्टियों के वोट शेयर में 1% की कमी हो सकती है।

छत्तीसगढ़: सत्ता बरकरार रखने में कामयाब होती दिख रही कांग्रेस का वोट शेयर 2% घट सकता है, जबकि भाजपा का बेस 3% बढ़ सकता है। यहां भी निर्दलीय और छोटी पार्टियों के वोट शेयर में 1% की कमी हो सकती है।

राजस्थान में 3 प्रमुख फैक्टर: कांग्रेस की फूट से नुकसान: यहां वोटर्स के मन में कांग्रेस की फूट का असर साफ दिख रहा है। गहलोत और पायलट के बीच 4 साल से चली आ रही भारी खींचतान ने कांग्रेस को भारी नुकसान पहुंचाया है। यहां के नतीजों में भाजपा अपने दम पर नहीं जीत रही, बल्कि उसे कांग्रेस की फूट से जीत मिल रही है। वोटर्स को लगता है कि चुनावी साल में अपनी डांवाडोल स्थिति को संभालने में सीएम गहलोत ने देर कर दी। उनकी लुभावनी योजनाओं का असर वोट में नहीं बदल पाया।

यूपी के प्रति धारणा बदलने को लेने पड़े कठोर निर्णय: मुख्यमंत्री

गीडा के 34वें स्थापना दिवस समारोह में बोले सीएम योगी आदित्यनाथ

गोरखपुर

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उत्तर प्रदेश के प्रति देश और दुनिया के लोगों में घर कर गई नकारात्मक धारणा को बदलने के लिए कठोर निर्णय लेने पड़े। गंभीर प्रयास के साथ कई रिफॉर्म करने पड़े। बिना थके और बिना डिगे किए गए कार्यों से यूपी के प्रति देश और दुनियां के लोगों की धारणा तो बदली ही, आज देश-दुनिया का हर बड़ा उद्यमी उत्तर प्रदेश में निवेश करने का आकांक्षी है। सीएम योगी गुरुवार को वर्तमान प्रगति को संजोने और सुनहरे भविष्य की संभावनाओं को आकार देने के उद्देश्य से आयोजित गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकरण (गीडा) के 34वें स्थापना दिवस समारोह को संबोधित कर रहे थे। भव्य और विविधतापूर्ण समारोह के दौरान मुख्यमंत्री ने गीडा में निजी क्षेत्र की 800 करोड़ रुपये की निवेश परियोजनाओं का लोकार्पण-शिलान्यास किया। 500 करोड़ रुपये के निवेश को धरातल पर उतारने के लिए नए भूखंडों का आवंटन पत्र सौंपा। 150 करोड़ रुपये के अवस्थापना विकास कार्यों का लोकार्पण-शिलान्यास किया।

पहले की सरकारें खुद को माई-बाप समझती थीं: पीएम नरेंद्र मोदी

सबसे बड़ी जाति गरीब, युवा, महिलाएं, किसान, इनको मजबूत बनाकर भारत को विकसित बनाएंगे

नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार 30 नवंबर को विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों को वर्चुअली संबोधित किया। मोदी ने कहा कि पहले की सरकारें खुद को माई-बाप समझती थीं। पीएम ने आगे ये भी कहा कि मेरे लिए सबसे बड़ी जाति गरीब, महिलाएं, युवा और किसान हैं। इन्हें मजबूत बनाकर भारत को विकसित राष्ट्र बनाएंगे। हमारे अमृत स्तंभ हैं- हमारी नारीशक्ति, हमारी युवा शक्ति, हमारे किसान और हमारे गरीब परिवार।

2 करोड़ महिलाओं को लखपति बनाने का मेरा सपना- मोदी

प्रधानमंत्री ने कहा कि मैंने लाल किले से गांव की दीदियों को ड्रोन दीदी बनाने की घोषणा की थी। मैंने देखा कि कोई दसवीं पास हैं, कोई 11वीं तो कोई 12वीं पास, लेकिन हजारों बहनों ने ड्रोन चलाना सीख लिया है। खेती में कैसे इसका उपयोग करना है, फर्टिलाइजर और दवाएं छिड़कने में कैसे इस्तेमाल करना है, ये सब उन्होंने सीख लिया है। अब इन ड्रोन दीदियों को नमन करने का मन करता है। इस योजना को मैं नमो ड्रोन दीदी नाम देता हूं।

प्रधानमंत्री के विकसित भारत संकल्प को पूरा करेगी यात्रा: सीएम योगी आदित्यनाथ

सीएम योगी विकसित भारत संकल्प यात्रा के निशातगंज आगमन कार्यक्रम में हुए शामिल

लखनऊ

विकसित भारत के संकल्प को साकार करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साढ़े 9 वर्षों में अपने महत्वपूर्ण निर्णयों, दूरदर्शी सोच एवं योजनाओं से देश भर में जो माहौल बनाया है, वह किसी भारतीय से छिपा नहीं है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस संकल्प में केंद्र और राज्य सरकार की योजनाएं काफी सहायक बनी हैं, जिसका भव्य रूप आज हम सभी को देखने को मिल रहा है। विकसित भारत संकल्प यात्रा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आने वाले कुछ वर्षों में विकसित भारत की संकल्पना को स्थापित करेगी। इसमें हम सब का भी योगदान जरूरी है। इसी उद्देश्य से 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस पर विकसित भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ किया गया।

ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विकसित भारत संकल्प यात्रा के आगमन पर गुरुवार को निशातगंज स्थित वाल्मीकि नगर में कहीं। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये देश के विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों से संवाद किया। इससे पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को चेक, प्रमाण पत्र, आवास की चाबी एवं आयुष्मान कार्ड वितरित कर सीधा संवाद भी किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि देश 1947 में आजाद हुआ था। उसके बाद कई सरकारें बनीं।

सीएम योगी की पहल, गोंडा में निराश्रित गोवंशों को मिलेगा एक 'नया घर'

गोवंश सहभागिता योजना के तहत शस्त्र रखने वाले हर व्यक्ति को गोवंश गोद लेने के लिए किया जाएगा प्रोत्साहित

लखनऊ/गोंडा

निराश्रित गोवंश के पोषण और उनकी देखभाल के लिए समर्पित योगी सरकार ने उनकी सुरक्षा और संरक्षा के लिए अब एक और कदम उठाया है। इसके तहत जनपद गोंडा में शस्त्र रखने वाले हर व्यक्ति के लिए एक-एक गोवंश को गोद लेने की व्यवस्था लागू की गई है। इस पहल को जनपद में निराश्रित गोवंशों की समस्या के समाधान के रूप में देखा जा रहा है। साथ ही निराश्रित गोवंश के लिए 'नए घर' का रास्ता भी साफ हो गया है। उल्लेखनीय है कि जनपद के सभी 12 हजार 42 शस्त्र अनुज्ञापियों को जिला प्रशासन की ओर से कम से कम एक-एक गोवंश सहभागिता योजना में लेने के निर्देश दिए गए हैं। गोद लेने पर गोवंश के पोषण और देखभाल हेतु पशुपालन विभाग गोद लेने वाले को प्रति गोवंश प्रति माह 1500 रुपए का भुगतान भी करेगा।

शास्त्र रखने वालों को किया जाएगा प्रोत्साहित

डीएम नेहा शर्मा ने सभी एडीएम को इस संबंध में कार्यवाही सुनिश्चित करने के संबंध में निर्देश दिए हैं। उन्हें निर्देशित किया गया है कि वह अपने सबडिवीजन क्षेत्र में प्रभारी निरीक्षक, थाना प्रभारी के माध्यम से सहभागिता योजना में शस्त्र अनुज्ञापियों की भागीदारी सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने बताया कि इस संबंध में थाना स्तर पर शस्त्र अनुज्ञापियों की बैठक का आयोजन किया जाएगा। बैठक में उन्हें निकटवर्ती गो-आश्रय स्थल से कम से कम एक गोवंश लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। बैठक में मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी तथा उनके सहयोगी अधिकारी के अतिरिक्त खण्ड विकास अधिकारी भी मौजूद रहेंगे।

जुलाई-सितंबर में 7.6 फीसदी की रफ्तार से दौड़ी इकोनॉमी, जारी हुए आंकड़े

वित्त वर्ष 24 के पहले तिमाही के मुताबिक भारत की अर्थव्यवस्था गिरी है।

नई दिल्ली

चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही (जुलाई-सितंबर) के दौरान देश के जीडीपी के आधिकारिक आंकड़े सरकार ने जारी कर दिए हं। दूसरी तिमाही में भारत की अर्थव्यवस्था 7.6 फीसदी की रफ्तार से आगे बढ़ी है। वित्त वर्ष 24 के पहले तिमाही के मुताबिक भारत की अर्थव्यवस्था गिरी है। पहले तिमाही में विकास दर 7.8 प्रतिशत पर था।

97 तेजस और 156 प्रचंड हेलिकॉप्टर खरीदेगी सेना

केंद्र ने 1.1 लाख करोड़ का सौदा मंजूर किया; स्वदेशी निर्माताओं से सबसे बड़ी सैन्य डील

नई दिल्ली

केंद्र सरकार ने सेना और डिफेंस प्रोडक्शन को बढ़ावा देते हुए रक्षा मंत्रालय की रक्षा अधिग्रहण परिषद ने 97 तेजस और 156 प्रचंड लड़ाकू हेलिकॉप्टर की खरीद को मंजूरी दे दी है। ये दोनों स्वदेशी कॉम्बैट प्लेन-हेलिकॉप्टर हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक इन सौदों का मूल्य लगभग 1.1 लाख करोड़ रुपए है। इसके अलावा रक्षामंत्री की अध्यक्षता वाली परिषद ने Su-30 लड़ाकू बेड़े को अपग्रेड करने के वायुसेना के प्रस्ताव को भी मंजूरी दे दी है। दावा किया जा रहा है कि इस डील से सरकारी खजाने पर 1.3 लाख करोड़ रुपए का खर्च बढ़ सकता है। हालांकि ये स्वदेशी निर्माताओं से हुई अबतक की सबसे बड़ी डील है।

सेना में शामिल होने तक 10 साल का समय लगेगा

रिपोर्ट्स में कहा गया है कि फाइनल अमाउंट पर बातचीत हो जाने के बाद इसपर कैबिनेट सुरक्षा समिति साइन करेगी। इसके बाद भी सेना में अंतिम रूप से शामिल होने में कम से कम 10 साल लग सकते हैं। IAF के पास 260 से ज्यादा Su-30 विमान हैं। अपग्रेड करने के लिए इसमें भारत में ही बने रडार, एवियोनिक्स और सबसिस्टम लगाए जाएंगे।

प्रचंड हेलिकॉप्टर

प्रचंड लाइट कॉम्बैट हेलिकॉप्टर का पहला बैच पिछले साल वायुसेना और सेना में शामिल किया गया था।

हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड ने इस 5.8 टन वजनी ट्विन इंजन हेलिकॉप्टर को डेवलप किया है।

इसकी सर्विस लिमिट लगभग 21 हजार फीट है।

प्रचंड को मुख्य रूप से सियाचिन, लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश के ऊंचे इलाकों में तैनाती के लिए डिजाइन किया गया है।

सेना में प्रचंड हेलिकॉप्टरों के शामिल होने से भारतीय वायुसेना के हमले वाले हेलिकॉप्टर बेड़े में विविधता आएगी। फिलहाल इस बेड़े में एचएएल रुद्र, अमेरिका में बना अपाचे और रूसी एमआई -35 शामिल हैं।

तेजस

तेजस मार्क-1ए लाइट कॉम्बैट प्लेन है। यह फोर्थ जनरेशन का ऑपरेशनल फाइटर जेट है।

इसमें एक्टिव इलेक्ट्रॉनिक-स्कैन किए गए एरे रडार, इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर सूट शामिल है।

यह हवा से हवा में फ्यूल भरने में सक्षम है।

इसे हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड ने डेवलप किया है।

यह भारत का पहला स्वदेशी फाइटर जेट है और इसे फरवरी 2019 में पूरी तरह से हथियारबंद फाइटर जेट के रूप में भारतीय वायु सेना में शामिल किया गया।

समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधि मंडल ने पुलिस कमिश्नर को सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

करछना। प्रयागराज समाजवादी पार्टी यमुनापार एवं गंगापार का प्रतिनिधि मंडल प्रयागराज के पुलिस कमिश्नर प्रयागराज को पार्टी के कार्यकर्ताओ के उत्पीड़न एवं जनपद में बढ़ रहे अत्याचार के विरोध में पुलिस मुख्यालय पर अपना ज्ञापन सौंपा। प्रतिनिधि मंडल में यमुनापार जिलाध्यक्ष पप्पू लाल निषाद, जिला महासचिव इ. जगदीश यादव, राकेश यादव राष्ट्रीय सचिव अधिवक्ता सभा, करछना विधानसभा अध्यक्ष ननकेश बाबू, बारा विधानसभा अध्यक्ष भागीरथी बिन्द, समाजवादी अधिवक्ता सभा के यमुनापार अध्यक्ष नीरेंद्र सिंह यादव तथा गंगापार समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष अनिल यादव, राम मूरत नाटे चौधरी, राम अवध पाल, महबूब उस्मानी के साथ सैकड़ो पार्टी कार्यकर्त्ता मौजूद रहे पप्पू लाल निषाद कहा की पुलिस कमिश्नर को चार बार ज्ञान सौपाने हेतु समय माँगा परन्तु आज तक पार्टी नेताओ को मिलने का समय नहीं दिया जिससे कार्यकर्ताओ में काफी आक्रोश देखा गया। शहर उत्तरी विधानसभा प्रत्याशी रहे संदीप यादव को गलत धाराओं तथा गैगेस्टर एक्ट में फंसाकर उन्हें जिलाबदर करने का भी आरोप लगाया गया जबकि उनके खिलाफ कोई भीअपराधिक मुकदमा दर्ज नही है। पुलिस मुख्यालय पर मौजूद महिला आईपीएस पुलिस अधिकारी श्रद्धा पाण्डेय को ज्ञापन सौपा गया।

अनिल यादव ने कहा की यदि सरकार के अधिकारी पार्टी कार्यकर्ताओ का लगातार उत्पीड़न करते रहे तो हम सड़क पर उतर कर जेल भरो आंदोलन चलाएंगे जिसकी जिम्मेदारी पुलिस प्रशासन की होगी।

करंट की चपेट में आने से मवेशी की मौत पर पशुपालक ने की शिकायत

मेजा। मेजा क्षेत्र के सुकाठ गांव में करंट की चपेट में आने से एक मवेशी की मौत हो गई। घटना से दुखी पशुपालक ने विद्युत विभाग के खिलाफ एसडीएम से शिकायत करते हुए कार्रवाई की मांग की है।सुकाठ गांव के पशुपालक दुर्गा सिंह पुत्र वंश बहादुर सिंह ने बताया कि गांव के रामलीला प्रांगण के निकट ट्रांसफार्मर रखा हुआ है। ट्रांसफार्मर में खराबी के कारण विद्युत कर्मचारियों द्वारा कुछ मरम्मत का कार्य किया गया था। आरोपित किया कि मरम्मत कार्य के दौरान उक्त कर्मचारियों द्वारा लापरवाही बरती गयी, जिसका खामियाजा दुधारू भैंस की मौत से चुकानी पड़ी। पशुपालक ने बताया कि ट्रांसफार्मर में सही ढंग से मरम्मत कार्य न होने से आस-पास करंट दौड़ रहा था, जिससे उनकी मवेशी की मौत हो गयी। उक्त पशुपालक ने घटना की लिखित शिकायत एसडीएम मेजा से करते हुए कार्रवाई की मांग की है। शिकायत के बाद पोस्टमार्टम के लिए पशु चिकित्सकों की टीम मौके पर पहुंचे जांच पड़ताल में जुटी रही।

बारिश से बदला मौसम का मिजाज, जल्द ठंड बढ़ने के दिख रहे आसार

अखंड भारत संदेश

बारा। इनदिनों पूरे उत्तर भारत में मौसम का मिजाज बदल गया है। उत्तर भारत के पहाड़ी इलाकों में बर्फबारी देखी जा रही है।अब उत्तर प्रदेश में भी मौसम अपना मिजाज तेजी से बदल रहा है। ठंडी हवाओं से पारा लगातार गिरता जा रहा है। दिसंबर की शुरूआत के साथ ही पारा और नीचे जाएगा। मौसम विभाग ने 2 दिसंबर तक बारिश को लेकर अलर्ट जारी किया है। मंगलवार को अधिकतम तापमान 25.3 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया जबकि सोमवार को दिन का तापमान 22.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था।न्यूनतम तापमान सबसे कम 10 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो प्रदेश में सबसे कम था। मंगलवार को पूरे दिन बादल छाए रहे।जैसे-जैसे दिसंबर नजदीक आएगा वैसे-वैसे ठंडक बढ़ती जाएगी। आने वाले दिनों को लेकर मौसम विभाग ने भविष्यवाणी की है।

3 दिसंबर से पड़ेगा कोहरा

30 नवंबर को एक बार फिर यूपी के कुछ हिस्सों में बारिश हो सकती है। मौसम विभाग की माने तो 30 नवंबर को पूर्वी यूपी में अलग-अलग स्थान पर बारिश और गरज के साथ बौछारें पड़ सकती है।बारिश के साथ ही राज्य में कड़ाके की ठंड देखने को मिल सकती है। मौसम विभाग की मानें तो बुधवार से आने वाले 4 दिनों तक आसमान में बादल छाए रहेंगे और गरज-चमक के साथ बूंदाबांदी हो सकती है। उसके बाद 3 दिसंबर से कोहरा पड़ेगा।

2-3 डिग्री की गिरावट बढ़ाएगी सर्दी

आंचलिक मौसम विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक के मुताबिक पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता के कारण प्रदेश का मौसम बदल गया है। मध्य विक्षोभ मंडल में अरब सागर तक एक ट्रफ के रूप में पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय हो गया है। इसके कारण प्रदेश के अधिकतम तापमान में दो डिग्री सेल्सियस की गिरावट आने के आसार हैं। हालांकि ऐसा अनुमान है कि रात का पारा दो डिग्री तक बढ़ सकता है। वहीं इस पश्चिमी विक्षोभ के कमजोर हो कर आगे बढ़ने के कारण आगे बढ़ने और बादल के छंटने के कारण मौसम शुष्क होगा और पछुआ हवा चलने के आसार हैं। इसके कारण रात के पारे में भी दो से तीन डिग्री तक गिरावट आ सकती है।

मांडा सीएचसी में सात आशा बहुओं की नियुक्ति पर क्षेत्र में तरह तरह की चचाएं

मांडा। विकास खण्ड मुख्यालय अन्तर्गत सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मांडा में रिक्त आशा बहुओं की आपूर्ति करने के लिए शासनादेश जारी होने पर रिक्त पदो पर नियुक्ति किया गया। जिसकी चर्चा क्षेत्र में तरह- तरह की फैली हुई है। मांडा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के अन्तर्गत कुल 69 ग्राम पंचायतो से 14 आशा बहुओं की पद रिक्त होने से स्वास्थ्य विभाग को सरकारी योजनाओं को जन जन तक पहुंचाने में भारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। उक्त समस्याओं के निस्तारण हेतु स्वास्थ्य विभाग ने शासनानुसार खाली पदो पर नियुक्ति करने के लिए अधीक्षक को जिम्मेदारी सौंप दी गई। वही मांडा सीएचसी अधीक्षक डॉ अजीत सिंह ने सात आशा बहुओं की नियुक्ति कर प्रशिक्षण कराया गया। लेकिन मांडा विकास खण्ड के प्रधानों ने मनमानी का आरोप लगाते हुए तरह तरह की चचाएं शुरू कर दिया है।

वर्जन

मांडा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के डॉ अधीक्षक ने बताया कि ग्राम प्रधान ने अपने सगे संबंधियों की नियुक्ति करने के लिए आवेदन किया था। जिसकी शिकायत सीएमओ प्रयागराज से होने पर उक्त ग्राम पंचायत में आशा बहुओं की पद रिक्त छोड़ दिया गया है। और नेवढ़िया बयालिस में आशा बहुओं की पद पर कोई आवेदन नहीं किया गया था। जो शासनादेशानुसार नई नियुक्ति किया गया है उसमें बामपुर, महेवाकला, दसवार, चकडीहा, गेरूआडीह, केडवर, मझिगवा में आशा बहुओं की नियुक्ति कर प्रशिक्षण कराया गया है। और जो मांडा क्षेत्र में तरह- तरह की अफवाहे फैलाई जा रही है निराधार हैं। आदेश के अनुपालन में किए निर्वहन पर आशा बहुओं की पद पर नियुक्ति करने से मुझे बदनाम किया जा रहा है। उक्त जानकारी मांडा अधीक्षक डॉ अजीत सिंह ने दिया।

दबंगों ने घर में घुस कर मारा पीटा जान से मारने को दिये धमकी चार के खिलाफ मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा के मोहन का पूरा घीननपुर में दबंगों ने घर में घुस कर लाठी डंडो से मारा पीटा एक को जख्मी हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने चार के खिलाफ मुकदमा दर्ज लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के मोहन का पूरा घीनपुर गांव निवासी मोहम्मद अकरम पुत्र कुर्बान अली का आरोप है कि गांव के दबंगों ने उसके घर में घुस कर उसे मार डालने के लिए हमला बोल कर उंगली तोड डाले और जान से मारने की धमकी देते हुए गालियां देकर भाग गए। जख़्मी मोहम्मद अकरम ने मऊआइमा थाने में तहरीर दे कर सुभाष, मनोज, फूलचंद्र,राम कृपाल के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

किसानों ने पराली जलाने पर दंडात्मक कार्यवाही के विरोध मे एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

कोरांव। फसल अवशेष पराली जलाने पर किसानों पर हो रही दंडात्मक कार्यवाही व आर्थिक दंड के विरोध में भारतीय किसान संघ काशी प्रांत के मंत्री भोला सिंह मुन्ना के नेतृत्व में क्षेत्रीय किसानों ने प्रधानमंत्री भारत सरकार व मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार को संबोधित उप जिलाधिकारी कोरांव अविनाश यादव को पांच सूत्रीय ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन के माध्यम से मांग की गई है कि पराली प्रबंधन हेतु माननीय उच्चतम न्यायालय की भावना के अनुसार आप राज्य सरकारों को किसानों के लिए नलवर सुपर सीडर एवं प्लाऊ आदि मशीन निशुल्क उपलब्ध कराने का निर्देश करें, उपरोक्त मशीनों के प्रयोग में होने वाले आवश्यक ईंधन अनशक्ति के श्रम राशि को भी माननीय उच्चतम न्यायालय के निदेर्शानुसार सरकारों द्वारा किसानों को उपलब्ध कराया जाए, किसानों की संपूर्ण पराली को सरकार द्वारा न्यूनतम मूल्य निर्धारित कर खरीदा जाए, विश्व स्तरीय भारतीय कार्बन क्रेडिट योजना द्वारा किसानों को भी ऑक्सीजन उत्पादन के लिए प्रोत्साहन राशि उपलब्ध कराई जाए, जब तक किसान की पराली के प्रबंधन की समुचित व्यवस्था सरकारों द्वारा न हो और किसान परली प्रबंधन के लिए प्रशिक्षित न हों तब तक किसानों पर किसी भी प्रकार का आर्थिक दंड सजा आदि जैसी कार्यवाही न की जाए। इस दौरान भारतीय किसान संघ काशी प्रांत के मंत्री भोला सिंह मुन्ना ने कहा कि सरकार परली प्रबंधन के उपयोग में आने वाले कृषि यंत्रों को निशुल्क व उसमें आने वाले खर्च को सरकार वहन करे जिससे पराली का उचित प्रबंधन किया जा सके। इस दौरान उपस्थित रहे लोगों में प्रमुख रूप से प्रांत महिला प्रमुख उर्मिला सिंह, जिला प्रचार प्रमुख धीरज सागर, जिला सह मंत्री प्रेम शंकर सिंह, ब्लॉक अध्यक्ष राजेश सिंह सहित कई अन्य किसान मौजूद रहे।

पराली प्रबंधन के कृषि यंत्रों को निःशुल्क व आने वाले खर्च को वहन करे सरकार : भोला सिंह

मनसैयता नदी को खनन माफिया अपनी सुविधा के लिए पाटे

मऊआइमा। मऊआइमा में अवैध खनन बंद होने का नाम नहीं ले रहा है। ग्रामीणों की शिकायत पर पकडी गयी डंपर को छोड देने का आरोप लगाया जा रहा है। मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सिंसई सिपाह में अवैध खनन पूरे चरम पर मनसैयता नहर को पाट पर जमकर अवैध खनन की जा रही है। सिंसई सिपाह निवासी मोहम्मद अकरम, अहमद अली, अब्दुल हक आदि ने जिले के समस्त अधिकारियों को शिकायतीपत्र देकर आरोप लगाया है कि नाबालिग बच्चों से डंपर और जेसीबी मशीन लगा कर मनसैयता नहर को पाट कर आरोपित है कि हल्का दरोगा की मिलीभगत से अवैध खनन किया जा रहा है। ग्रामीणों का आरोप है कि गत दिनों उनकी शिकायत पर पकडी गयी बिना नम्बर की डंपर एंव जीसीबी में डंपर को छोडने का आरोप लगाया जा रहा है जबकि जीसीबी को पकडा जरुर गया परन्तु खनन की धारा में मुकदमा न दर्ज कर मामूली में निपटा दिया गया।आरोपित है कि यदि यही दशा रही तो मनसैयता नहर का अस्तित्व मिट जाएगा।तथा पानी गांवों में भर जाएगा। आरोप है कि पुलिस का संरक्षक प्राप्त खन्न माफियाओं के हौसले बुलंद हैं।

मांडा पंचायत भवन पर हमारा संकल्प विकसित भारत के तहत कार्यक्रम का आयोजन

मांडा। विकास खण्ड मांडा मुख्यालय अन्तर्गत मांडा ग्राम पंचायत भवन के सभागार में हमारा संकल्प विकसित भारत के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। गुरुवार को मांडा पंचायत भवन पर एडीओ पंचायत रमाकांत पाण्डेय के नेतृत्व में मांडा पंचायत भवन सभागार में हमारा संकल्प विकसित भारत के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमे एडीओ पंचायत मांडा ने मांडा ग्राम पंचायत के उपस्थित लोगों से इस कार्यक्रम को विशेष अभियान के तौर पर आगे बढ़ाने की अपील की। साथ ही विकास खण्ड मांडा के 69 ग्राम पंचायतो में वैन चलाकर कार्यक्रम को सफल बनाया जाएगा। बीडीओ मांडा अमित मिश्रा ने मांडा ब्लॉक मुख्यालय पर सचिवों व रोजगार सेवकों के साथ बैठक कर हमारा संकल्प विकसित भारत के तहत कार्यक्रम को वृहद स्तर पर काम करने के लिए प्रेरित किया। बैठक में ग्राम प्रधान मांडा डॉ.असद अली, रोजगार सेवक मांडा संजय कुमार सोनकर, वीडीओ ब्रजेन्द शुक्ल, सहायक कंप्यूटर ऑपरेटर आदि के अलावा सदस्य गण उपस्थित रहे।

मनाया गया पूर्व जिलाध्यक्ष विभव नाथ भारती का जन्मदिन

लालापुर। गुरुवार को लालापुर में भाजपा यमुनापार के पूर्व जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती का जन्मदिन ग्राम प्रधान शंकरलाल पाण्डेय की अगुवाई में मनाया गया। इस दौरान शंकरलाल पाण्डेय ने भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती की लंबी उम्र की कामना करते हुए मिठाईयां बांटी। इस मौके पर कल्याण चंद्र द्विवेदी,मंडल महामंत्री शैलेंद्र पाण्डेय, मनोज त्रिपाठी, सतीश शुक्ला, शिवपूजन उपाध्याय, पेंटर शुक्ला, नितेश पाण्डेय, दीपक पाण्डेय, अवधेश पाण्डेय,होरीलाल केसरवानी,अतुल तिवारी, दीपचंद्र शुक्ला, हिमांशु तिवारी, अरविंद पाण्डेय सहित अन्य कई लोग रहे।

भागवत जीवन की आध्यात्मिक शैली: धीरू भाई महाराज

बारा। तहसील मुख्यालय स्थित त्रिपाठी आवास पर श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ हुआ। कथाव्यास धीरूभाई महाराज ने भागवत कथा का प्रारंभिक ज्ञान देते हुए बताया कि भा का अर्थ भक्ति, ग का अर्थ ज्ञान, व का अर्थ वैराग्य तथा त अर्थ तृष्णा है।सभी अर्थ एक दूसरे के पूरक हैं। अट्ठारह हजार श्लोकों से परिपूर्ण भागवत महापुराण जीवन जीने की आध्यत्मिक शैली का अद्भुत संगम है। शुकदेव महाराज द्वारा परीक्षित जी को सुनाई गई कथा का श्रवण मात्र से सभी के कष्ट दूर हो जाते हैं। आयोजक त्रिपाठी परिवार ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। मुख्य यजमान सुशीला त्रिपाठी सहित अनन्त प्रसाद त्रिपाठी, अभिराम त्रिपाठी, दुर्गा केसरवानी,जय नारायण त्रिपाठी, महेश त्रिपाठी, अर्जुन विश्वकर्मा, रामबाबू शुक्ला, कृष्णा कांत त्रिपाठी, शशिकांत त्रिपाठी, रजनीकांत त्रिपाठी, सुमन्त भार्गव, केसरी नंदन मिश्र, सुरेश मिश्र सहित दर्जनों महिला पुरुष भक्तगणों ने कथा का श्रवण किया।

गिरधरपुर में मोटी रकम लेकर दी गई दोबारा आवास, जांच की मांग

गिरधरपुर ग्राम पंचायत की प्रधान के पति है रोजगार सेवक, दस साल की प्रधानी में नहीं बना पाए अपना आवास, वही वर्तमान प्रधान ने तीन साल में ही बनवा डाला आवास

अखंड भारत संदेश

मांडा। विकास खण्ड मांडा मुख्यालय अन्तर्गत ग्राम पंचायत गिरधरपुर में दोबारा आवास देने की चर्चा सुर्खियों में हैं। वहीं उक्त ग्राम पंचायत में दस साल तक पति, पत्नी ने प्रधान पद पर आसीन होकर जनता के बीच काम किया। लेकिन वह स्वयं अपने रहने के लिए एक छतयुक्त आवास नहीं बनवा पाए। जब कि अपने कार्यकाल में निष्पक्ष एवं पात्र लोगों को सरकारी धन मुहैया कराया और शोषित, कमजोर लोगों को आवास योजना जैसी सुविधा देकर मजबूत बनाया वहीं वर्तमान प्रधान ने उन्हीं लोगों से मोटी रकम लेकर आवास, शौचालय दिया। जिसकी जानकारी पर ग्राम पंचायत के फरियादियो ने लिखित प्रार्थना पत्र देकर जांच करने की मांग की। अधिकारियो की ढुल मुल रवैए से जांच न होने पर वर्तमान प्रधान अपने मनमानी ढंग से सरकारी धन को गबन कर आय से अधिक संपत्ति बना रखा है। गिरधरपुर ग्राम पंचायत के प्रधान व सचिव की साँठ गांठ की चर्चा क्षेत्र में फैली हुई है। प्रधान के पति प्रेम कुमार रोजगार सेवक के पद पर कार्यरत हैं। जिससे मांडा ब्लॉक के अधिकारी ,कर्मचारी प्रभावित होकर भ्रष्टाचार के सामने घुटने टेक दिया करते हैं। भ्रष्टाचार को प्रकाशित करने के लिए पूर्व में दिए गए फरियादी के प्रार्थना पत्र की छाया प्रति के साथ हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के पत्रकार ने लिखित प्रार्थना पत्र देकर जांच कर आख्या रिपोर्ट मांगी है। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत रुपये लेकर अपात्रों को लाभ दिलवाने का एक मामला सामने आया है। ग्राम पंचायत सचिव व प्रधान ने मिलकर अपात्रों से मोटी रकम लेकर पीएम आवास योजना में शामिल करा लिया। इतना ही नहीं, प्रधान व सचिव के मिली भगत से सरकारी योजनाओ को भी बंदर बांट कर ले रहे है जिससे गिरधरपुर ग्राम पंचायत के लोगों में काफी आक्रोश व्याप्त हैं।

बता दें कि गुरुवार को एक हिन्दी दैनिक पत्रकार ने खंड विकास अधिकारी अमित मिश्रा को प्रार्थना पत्र देकर बताया कि गिरधर पुर ग्राम पंचायत में आवास,शौचालय व रिबोर आदि योजनाओ को लेकर जम कर धन उगाही की और अपात्रो को दोबारा आवास, शौचालय, रिबोर में मनमानी करते हुए सरकारी योजनाओ के साथ खिलवाड किया। वही निष्पक्ष जांच कर आख्या रिपोर्ट के अनुसार प्रकाशित करने के लिए प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया है। शिकायत में बताया था कि गिरधरपुर ग्राम पंचायत में प्रधानमंत्री आवास अपात्र व्यक्तियों से रुपये लेकर दिए गए हैं। जो पात्र थे उनके पास रुपये न होने के कारण उन्हें लाभ नहीं दिया गया था। शिकायत को खंड विकास अधिकारी अमित मिश्रा ने गंभीरता से लेते हुए एडीओ पंचायत को जांच करने के निर्देश दिए।

अपना तो बनाया ही पूर्व प्रधान की भी पूरी की हसरत

गिरधरपुर ग्राम पंचायत के भूत पूर्व प्रधान गंगा देवी व उनके पति राम पदारथ पाल ने लगातार दस साल तक प्रधानी का कार्यकाल चलाया लेकिन रहने के लिए छतयुक्त आवास नहीं बनवा पाए। वही वर्तमान प्रधान ने उक्त प्रधान को अपने तीन साल के कार्यकाल में उन्हें भी आवास दिलाया और उनके द्वारा दिए गए लाभार्थियों को दोबारा आवास देकर मोटी रकम वसूली कर तथा सरकारी धन को गबन कर आय से अधिक संपत्ति बना लिया है। जिसकी चर्चा क्षेत्र में फैली हुई है।

पशु आरोग्य शिविर में 316 पशुओं का हुआ परीक्षण,दवाइयां वितरित

मेजा। बुधवार को विकास खंड मेजा अंतर्गत कुर्की कला में पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य शिविर का आयोजन किया गया।शिविर में लगभग 316 पशुओं का निःशुल्क उपचार और टीकाकरण किया गया। पशु चिकित्सकों ने पशु पालकों को दवाइयां वितरित कर नियमित रूप से पशुओं को दवाइयों की खुराक देने के लिए प्रेरित किया।शिविर का उद्घाटन भाजपा नेता रमण सिंह ने गाय की पूजा कर किया। उप मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डॉ आर पी सिंह ने बताया कि पशुओं में खुरपका, गलाघोंटू, मुंहपका जैसी बीमारी होने पर पशुपालक बचाव के लिए पशुओं को टीका लगवाएं। पशु चिकित्सकों के पैनल में डा.अमरजीत सरोज,पशु धन प्रसार अधिकारी बीरेंद्र, श्यामबहादुर, डा. बैजनाथ, ओमप्रकाश मिश्र और भारी संख्या में पशु मित्र मौजूद रहे।

महाकुंभ 2025 को भव्य स्वरूप देने के दृष्टिगत कुंभ मेला अधिकारी ने की समीक्षा

अखंड भारत संदेश

कटका तिराहे रोड पर कार्यों की गति धीमी पाए जान पर मांगा स्पष्टीकरण

शौचालय की क्वालिटी सुनिश्चित करने व निविदा में भाग लेने वाले वेंडर द्वारा क्वालिटी में शौचालयों एवं यूरिनलों का डिस्प्ले किया गया डिस्प्ले

प्रयागराज। महाकुंभ 2025 को भव्य स्वरूप देने के दृष्टिगत क्रियान्वित की जा रही विभिन्न परियोजनाओं की प्रगति समीक्षा हेतु आज मेला अधिकारी, कुंभ मेला, विजय किरन आनंद ने मेला प्राधिकरण कार्यालय स्थित आई ट्रिपल सी सभागार में संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक की। सर्वप्रथम नगर निगम द्वारा क्रियान्वित की जा रही विभिन्न परियोजनाओं की बिंदु वार समीक्षा की गई तथा अगली शीर्ष समिति की बैठक हेतु प्रस्तावित परियोजनाओं की सूची पर भी विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। मुख्य सचिव की अध्यक्षता में बनी शीर्ष समिति की 6 बैठक में नगर निगम की 79 परियोजनाएं अनुमोदन हेतु प्रस्तुत की जाएंगी। इनमें सड़क एवं जल निकासी की 10, मार्ग प्रकाश के 51, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की 16, जल आपूर्ति की 1 तथा अस्थाई कार्यों की 1 परियोजनाएं सम्मिलित है। प्रयागराज विकास प्राधिकरण द्वारा क्रियान्वित की जा रही परियोजनाओं की समीक्षा करते हुए कटका तिराहे रोड पर कार्यों की गति धीमी पाए जान पर तथा यूटिलिटी शिफ्टिंग के कार्यों में लापरवाही बरतने पर मेला अधिकारी ने अधिशासी अभियंता, विद्युत आंतरिक, प्रयागराज विकास प्राधिकरण, बीपी सिंह पर खासी नाराजगी व्यक्त करते हुए टीपीआईए से उन्हें स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। साथ ही काटका रोड पर जीएसबी ग्रेडिंग की भी समस्या के बारे में अवगत कराए जाने पर टीपीआईए के एक्सपर्ट्स को आसपास के जीएसबी प्लांट पर जाकर वहां पर उसकी क्वालिटी चेक करने के निर्देश दिए हैं।इसी क्रम में उन्होंने विभिन्न परियोजनाओं के क्रियान्वयन में भूमि अधिग्रहण संबंधित समस्याओं पर भी विस्तार पूर्वक चर्चा की तथा सभी संबंधित तहसील के उप जिला अधिकारियों को सभी समस्याओं का निराकरण अति शीघ्र कर उन्हें अवगत कराने के निर्देश दिए।आगामी माघ मेला 2023-24 में शौचालयों की क्वालिटी सुनिश्चित करने के दृष्टिगत निविदा में भाग लेने वाले वेंडरों से आज उनके शौचालयों एवं यूरिनलों का डिस्प्ले भी किया गया। मेला प्राधिकरण की टीम, जिसमें प्रभारी अधिकारी, माघ मेला 2023 -24, दयानंद प्रसाद, एडीएम, मेला प्राधिकरण, विवेक चतुवेर्दी तथा मेला प्रबंधक, विवेक शुक्ला समेत अन्य संबंधित अधिकारियों ने सभी वेंडर द्वारा लगाए गए शौचायलयों का निरीक्षण किया। निविदा प्रक्रिया में डेमोंसट्रेशन पर भी नंबर दिए जाएंगे।

मण्डलीय उद्योग बंधु समिति की बैठक सम्पन्न

प्रयागराज। अपर आयुक्त (प्रशासन) प्रयागराज मण्डल की अध्यक्षता में गुरूवार को गांधी सभागार में मण्डलीय उद्योग बंधु समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में निवेश मित्र पोर्टल पर प्राप्त प्रकरणों, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम/ मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना एवं एक जनपद एक उत्पाद योजना, अप्रेन्टिसशिप के लम्बित भुगतान के सम्बंध में मण्डल अधीनस्थ जनपदों में विभागवार प्राप्त निवेश प्रस्ताव सहित अन्य विषयों की बिंदुवार समीक्षा की गई। बैठक में अपर आयुक्त ने उद्यमियों की समस्याओं को शीर्ष प्राथमिकता पर निस्तारण किये जाने का निर्देश सम्बंधित विभाग के अधिकारियों को दिया है। लाभार्थीपरक योजनाओं की समीक्षा में कम प्रगति पर फतेहपुर/ प्रतापगढ़ के उपायुक्त उद्योग एवं अग्रणी बैंक प्रबन्धक को निर्देश दिए गये कि 15 दिसम्बर तक मानक के अनुरूप प्रगति सुनिश्चित किया जाए। इस अवसर पर संयुक्त आयुक्त उद्योग लालजीत सिंह, अध्यक्ष ई0यू0पी0 चैम्बर्स ऑफ कामर्स विनय टण्डन सहित मण्डल के सभी उपायुक्त उद्योग उपस्थित रहे।

डिग्री कालेज की उत्तर पुस्तिका की फोटो हुई वायरल , हड़कंप

अखंड भारत संदेश

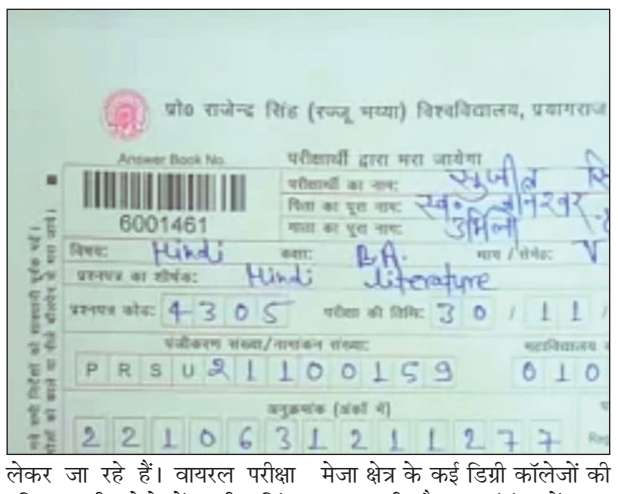

मेजा। मेजा में वैष्णवी डिग्री कॉलेज की एक परीक्षा पुस्तिका की फोटो सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। वायरल फोटो मेजा के कोहड़ार स्थित वैष्णवी डिग्री कॉलेज का बताया जा रहा है। आखिर परीक्षार्थी मोबाइल लेकर परीक्षा के अंदर कैसे पहुंचा यह जांच का विषय है और विद्यालय के जिम्मेदारों पर बड़ा सवाल खड़ा कर रहा है। बता दें कि राजेंद्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय से संबंधित वैष्णवी डिग्री कॉलेज मेजा प्रयागराज के परीक्षार्थियों ने मोबाइल अंदर ले जाकर उत्तर पुस्तिका की फोटो खींच कर वायरल कर दिए। जिसमें सबसे बड़ा सवाल यह खड़ा होता है कि आखिर परीक्षा के समय परीक्षार्थी मोबाइल अंदर कैसे ले जा रहे हैं। जबकि परीक्षा केन्द्रों में मोबाइल ले जाना वर्जित रहता है। फिरभी परीक्षार्थी मोबाइल अंदर लेकर जा रहे हैं। वायरल परीक्षा पुस्तिका की फोटो में सुजीत सिंह पुत्र स्व. ज्ञानेश्वर सिंह लिखा हुआ है। मजे की बात तो यह है कि परीक्षा के समय परीक्षार्थी द्वारा मोबाइल अंदर कैसे ले जाया गया। वहीं परीक्षा पुस्तिका की फोटो वायरल होने के बाद भी जिम्मेदार मामले से बेखबर हैं। देखा जाए तो मेजा क्षेत्र के कई डिग्री कॉलेजों की दशा यही है।इस संबंध में जब प्रबंधक सुरेन्द्र तिवारी से वार्ता की गई तो उन्होंने बताया कि कोई छात्र कैसे मोबाइल लेकर गया यह समझ में नहीं आ रहा है। कल से विद्यालय व्यवस्था पर कड़ाई की जाएगी। एक-एक छात्रों को बाकायदे चेक किया जाएगा। कड़ाई की जाएगी।

श्री सोमेश्वर नाथ मंदिर में भाजपा कार्यकताओं ने रुद्राभिषेक अनुष्ठान कर किया पूजन अर्चन

नैनी। नैनी अरैल में भाजपा यमुनापार जिलाध्यक्ष विनोद कुमार प्रजापति के नेतृत्व में पूर्व जिलाअध्यक्ष विभव नाथ भारती के जन्मदिन के शुभ अवसर पर अरैल स्थित श्री सोमेश्वर नाथ मंदिर मे भोलेनाथ के दरबार में माथा टेका कर पूजा-अर्चना, रुद्राभिषेक अनुष्ठान कर उनके स्वस्थ दीघार्यु होने की कामना की। इस अवसर पर अरैल स्थित श्री सोमेश्वर नाथ मंदिर मे भोलेनाथ के दरबार में पूर्व जिलाध्यक्ष विभव नाथ भारती, किसान मोर्चा जिलाउपाध्यक्ष संजय श्रीवास्तव, अल्पसंख्यक काशी प्रांत उपाध्यक्ष सरदार पतविंदर सिंह, मंडल अध्यक्ष नागेश निषाद, आशिक बाबा, मंडल अध्यक्ष पृथ्वी पाल सिंह, राम लखन विश्वकर्मा, सुनील विश्वकर्मा, मंडल अध्यक्ष नीरज शर्मा, महामंत्री अमित मिश्रा, महंत सोमेश्वर नाथ मंदिर कार्तिकेय पुरी ने 11 पंडितों के द्वारा अनुष्ठान एवं रुद्राभिषेक संपन्न कराया।

जिला अधिवक्ता संघ का चुनाव परिणाम घोषित

राजेंद्र मिश्र अध्यक्ष, दिनेश चंद्र पाण्डेय मंत्री चुने गए

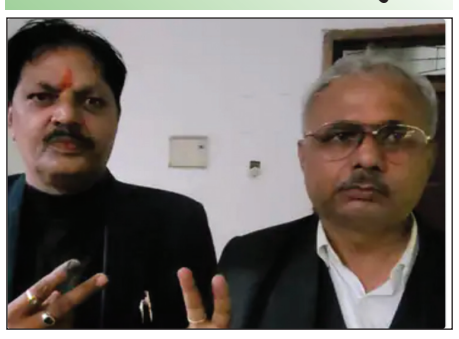

प्रयागराज। जिला अधिवक्ता संघ के 8 पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी के 10 सदस्यों के लिए बुधवार को मतदान हुआ। पर्यवेक्षक और एल्डर कमेटी के सदस्यों की निगरानी के बीच कुल 4378 सदस्यों ने मत डाले। जिला अधिवक्ता संघ के चुनाव में कुल मतदाताओं की संख्या 5972 है। मतपत्रों की गिनती गुरुवार को कलेक्ट्रेट परिसर स्थित संगम सभागार में हो रही है। अध्यक्ष पद पर राजेंद्र कुमार मिश्र उर्फ रज्जू भैया अध्यक्ष पद पर। विजई घोषित किए गए हैं। मंत्री पद पर दिनेश चंद्र पाण्डेय को सर्वाधिक वोट मिले हैं। सरिता शुक्ला को वाइस प्रेसीडेंट महिला चुना गया है।अध्यक्ष पद पर राजेंद्र प्रसाद मिश्र को कुल 1608 मत मिले, जबकि दूसरे स्थान पर रहे कृष्ण बिहारी तिवारी को 988 मतों से संतोष करना पड़ा। तीसरे स्थान पर 416 मतों के साथ कोशलेश कुमार सिंह रहे। मंत्री पद पर दिनेश चंद्र पाण्डेय को कुल 1306 मत मिले, जबकि दूसरे स्थान पर रहे ुं१४ल्ल कुमार सिंह को कुल 835 मत मिले। जितेंद्र सिंह जीतू यादव तीसरे स्थान पर रहे और 600 मत प्राप्त किए। मतगणना भी हाईकोर्ट द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षक, एडीएम सिटी तथा एल्डर कमेटी के सदस्यों की देखरेख में कराई गई।

बिना ड्रेस और पहचान पत्र के मत नहीं डाल पाए अधिवक्ता : जिला अधिवक्ता संघ के चुनाव में सख्त हिदायत थी कि अधिवक्ता फुल ड्रेस और यूपी बार काउंसिल द्वारा जारी पहचान पत्र लेकर ही मतदान स्थल पर आएं। कई अधिवक्ता ऐसे भी रहे जो या तो ड्रेस में नहीं आए या बार काउंसिल का पहचान पत्र साथ नहीं लाए। ऐसे लोगों को सख्ती से मतदान करने से रोका गया। पिछली डेट में हुए मतदान में हंगामा और बवाल को देखते हुए कोर्ट परिसर में भारी संख्या में पुलिस फोर्स तैनात रही। एल्डर कमेटी के चेयरमैन नरेंद्र देव पांडेय, सदस्य चुनाव अधिकारी राधा रमण मिश्र, सहायक चुनाव अधिकारी प्रमोद सिंह नीरज ने भी मतदान सकुशल संपन्न होने पर सभी अधिवक्ताओं का आभार जताया।

प्रमुख पदों पर यह रहे प्रत्याशी : अध्यक्ष : कृष्ण बिहारी तिवारी, राकेश कुमार तिवारी, शीतला प्रसाद मिश्र, कौशलेश कुमार सिंह, सुशील कुमार सिंह, राजेंद्र प्रसाद मिश्र रज्जू, कृष्ण चंद्र मिश्र बऊ, राकेश कुमार दुबे, अरुण कुमार पांडेय ।

मंत्री : ऋषि शंकर द्विवेदी, दिनेश चंद पांडेय, रत्नेश कुमार शुक्ल, वरुण कुमार सिंह, आलोक शुक्ल, विनय कुमार सिंह, राहुल शुक्ल, श्यामघर मिश्र उर्फ चंदन, जितेंद्र सिंह उर्फ जीतू, मंजेश कुमार शुक्ल, कमलेश्वर प्रसाद तिवारी, सुधाकर पांडेय, नितिन कुमार दुबे, अरुण प्रकाश।

नगर आयुक्त चंद्र मोहन गर्ग ने जोन 3 कटरा क्षेत्र के अन्तर्गत सलोरी में वेन्डिग जोन का किया निरीक्षण

प्रयागराज। नगर आयुक्त नगर निगम प्रयागराज चन्द्र मोहन गर्ग द्वारा गुरुवार की सांयकाल 04 बजे जोन नं0 3 कटरा क्षेत्र के अन्तर्गत सलोरी में वेन्डिग जोन के निर्माण का निरीक्षण तथा चमेली देवी धर्मशाला में हो रहे सी0सी0 रोड निर्माण कार्य का निरीक्षण किया गया। चमेली देवी धर्मशाला के निरीक्षण के दौरान सम्बन्धित कार्य के ठेकेदारा द्वारा मानक के अनुरूप कार्य न पाये जाने पर नगर आयुक्त द्वारा अधिशाषी अभियन्ता नजमी मुजफ्फर को निर्देशित किया गया कि सम्बन्धित फर्म/ठेकेदार पर कार्यवाही करते हुए सम्बन्धित फर्म को निर्देश दिया गया कि उक्त कमियो को मानक के अनुरू सुधार किया जाये। साथ ही सम्बन्धित क्षेत्र के अवर अभियन्ता हेमन्त रस्तोगी को कारण बताओ जारी किये जाने के निर्देश दिये गये। सलोरी में वेन्डिग जोन के निर्माण कार्य के निरीक्षण के दौरान सम्बन्धित फर्म/ठेकेदार को मानक के अनुरूप तथा कार्य की गुणवत्ता में कमियों के आधार पर नगर आयुक्त द्वारा अधिशाषी अभियन्ता अनिल मौर्या को फर्म/ठेकेदार के विरूद्ध कारण अताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिये गये एवं सम्बन्धित क्षेत्र अवर अभियन्ता एस0के0मिश्रा के कार्यो में शिथिलिता को देखते हुए कारण बताओ नोटिस जारी किये जाने के निर्देश दिये गये। इसी के साथ ही नगर आयुक्त द्वारा अधिशाषी अभियन्ता को निर्देशित किया गया कि वेन्डिग जोन के सभी कार्य को पुनः मानक के अनुरूप कराया जाये।इस दौरान अधिशाषी अभियन्ता अनिल मौया, नजमी मुजफ्फर, एस0के0 मिश्रा, हेमन्त रस्तोगी तथ टी0पी0आई0 की टीम उपस्थित रही।

निवर्तमान भाजपा जिलाध्यक्ष का धूमधाम से मनाया गया 51वां जन्मदिवस

शंकरगढ़। गुरुवार को हिंदी प्रवक्ता व भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती का 51 वां जन्म दिवस धूमधाम से एक, दूसरे का मुंह मीठा कर-के मनाया गया। शंकरगढ़ स्थित एनएसके कॉलेज के प्रबंधक संतोष त्रिपाठी ने बताया गया कि विभवनाथ भारती भाजपा के एक कर्मठ कार्यकर्ता हैं।आवश्यकता पड़ने पर वह सभी कार्यकताओं के हितों के लिये हमेशा तत्पर रहते हैं।यह कार्यकताओं तथा समाज के प्रति इतने कर्मशील हैं की इनका समय घर से अधिक कार्यकताओं तथा समाज की सेवाओं में व्यतीत होता है। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यकताओं की सभी को आवश्यकता होती है अतः ऐसे कार्यकताओं को हमें आगे बढ़ाने का कार्य करना चाहिए। इस अवसर पर मंडल उपाध्यक्ष सोमनाथ वर्मा द्वारा भी उनके कार्यों को सराहा गया।इस अवसर पर कॉलेज के प्रधानाचार्य प्रताप बहादुर सिंह, दीपक केसरवानी, ज्ञानेंद्र मिश्रा, अशोक त्रिपाठी, विजय शंकर मिश्रा, कमलाकर सिंह,उत्तम सिंह बघेल, दीपक विश्वकर्मा,प्रदीप मिश्रा, राजेश सिंह ,एसएन दुबे, एलेन वर्मा, पुष्पराज सिंह,अनिल सिंह,आभा मिश्रा ,कामिनी सिंह ,अनीता सिंह अर्चना सिंह, उमा वर्मा, शालिनी श्रीवास्तव, हेमराज मिश्रा, अन्य कॉलेज के स्टाफ तथा भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

विकसित भारत संकल्प यात्रा का आयोजन संपन्न

प्रयागराज। केन्द्र सरकार द्वारा निर्गत आदेश के क्रम में दिनांक 15 नवम्बर, 2023 से 26 जनवरी, 2024 तक विकसित भारत संकल्प यात्राह्लह्ल के अन्तर्गत योजनाओं के संतृप्तीकरण के लिए आउटरिच गतिविधियों का आयोजन नगर निगम, प्रयागराज द्वारा कराया जा रहा है। गुरूवार को प्रातः 11 बजे योजनाओं के संतृप्तीकरण के लिए आउटरीच गतिविधियों के माध्यम से जागरूकता बढ़ाये जाने हेतु जन-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन कराया गया। प्रधानमंत्री, भारत सरकार द्वारा केन्द्र सरकार की योजनाओं के सम्बन्ध में देशभर के लाभार्थियों से वार्ता की गयी। उक्त कार्यक्रम में कैम्प आयोजित करते हुए केन्द्र सरकार की प्रमुख योजनाओं यथा-वित्त पोषण सेवाएं, पी0एम0 उज्जवला योजना, पी0एम0 आवास योजना, खाद्य सुरक्षा योजना, आयुश्मान भारत योजना, पी0एम0 सौभाग्य योजना, पी0एम0भारतीय जन औशधीय परियोजना, अटल पेन्शन योजना एवं आधार कार्ड के सम्बन्ध में जागरूक करते हुए रजिस्टेज्शन कराया गया एवं पात्र लाभार्थियों को योजनाओं के लाभ प्राप्त होने के सम्बन्ध में जागरूक किया गया। कार्यक्रम के दौरान महापौर द्वारा केन्द्र सरकार/राज्य सरकार की योजनाओं के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से जानकारी दी गयी एवं मौके पर उपस्थित लाभार्थियों से वार्ताकर उनका अनुभव प्राप्त किया गया साथ ही लाभार्थियों द्वारा योजनाओं से हुए लाभ पर प्रसन्नता व्यक्त की गयी। सांसद महोदया द्वारा प्रयागराज जनपद में पी0एम0 आवास योजना, स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत व्यक्तिगत शौंचालय, आयुष्मान भारत योजना एवं पी0एम0 स्वनिधि योजना के सम्बन्ध में जानकारी दी गयी एवं उपस्थित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को योजनाओं के संतृप्तीकरण में किये गये सहयोग पर धन्यवाद व्यक्त किया गया। विकसित भारत संकल्प यात्रा के अन्तर्गत योजनाओं के संतृप्तीकरण के लिए आउटरिच गतिविधियों के सम्बन्ध में पत्थर गिरिजा चौराहे पर आई0ई0सी0 वैन, आडियो विजुअल ऐड, ब्रोशर, पैम्फलेट, बुकलेट आदि के माध्यम से प्रचार प्रसार का कार्य कराया गया। उक्त कार्यक्रम में सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग भारत सरकार द्वारा जागरूकता हेतु कैलेण्डर एवं पम्पलेट वितरित कराया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से उमेशचन्द्र गणेश केशरवानी महापौर, श्रीमती केशरी देवी पटेल सांसद, समस्त सम्मानित पार्षदगण, चन्द्र मोहन गर्ग नगर आयुक्त, प्रयागराज, दीपेन्द्र यादव, अरविन्द राय, अपर नगर आयुक्त, सुश्री दीपशिखा पाण्डेय सहायक नगर आयुक्त, श्रीराम मूरत नोडल अधिकारी सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय,भारत सरकार, समस्त जोनल अधिकारी एवं लाभार्थीगण उपस्थित रहे।

बे मौसम बारिश : किसानों की बढ़ाई चिंतां, धान फसल को भारी नुकसान

उपरौध व पाल क्षेत्र में रवि फसल के लिए संजीवनी है यह पानी

अखंड भारत संदेश

कोरांव। बे मौसम आसमान में आए बादल और बूंदाबांदी ने किसानों की चिंताएं बढ़ा दी हैं। किसान अपनी खून पसीने के मेहनत की गाढ़ी कमाई से खेतों में धान की फसल तो तैयार कर लिया है। लेकिन अब कटाई व मड़ाई के दौरान बे मौसम बारिश व आसमान में घिरे बादलों से किसानों के माथे पर चिंता की लकीरें स्पष्ट तौर पर दिख रही हैं। इस समय किसानों के धान फसल की कटाई जोरों से चल रही है। किसी की धान खेतों में कट कर पड़ी है तो किसी के खलिहान में एकत्रित कर दी गई है तो किसी की मलाई भी चल रही है।बुधवार के आधीरात से घनघोर बादल से बूंदा बांदी बरसात रुक रुक होती रही और सुबह होने के बाद भी दिन में भी बूंदा बांदी बरसात होती रही जिससे किसानों में चिंता देखने को मिला।ऐसे में अगर बरसात अधिक हुई तो धान का कटोरा कहे जाने वाले कोरांव क्षेत्र के किसानों की अपूरणीय क्षति होगी। इसके साथ ही

धान को विक्रय करने में भी किसानों को जलालत झेलनी पड़ेगी। इस समय की बरसात से लापर क्षेत्र व जहां

कावेरी धान की खेती की गई है उन स्थानों पर सर्वाधिक नुकसान पहुंचेगा। वहीं दूसरी ओर यह भी

मानना है कि उपरौध व पाल क्षेत्र के किसानों की रबी फसल के लिए यह पानी संजीवनी का काम करेगा।

क्या बोले किसान :

अचानक मौसम के बिगड़ने व बारिश होने से किसानों में मायूसी है। धान का कटोरा कहे जाने वाले क्षेत्र के कई गांव में बारिश न होने वजह से धान की फसल नहीं हुई है। जिन गांवों में किसान अपनी गाढ़ी कमाई की लागत पूंजी से तैयार फसल बे मौसम बारिश से बर्बाद हो जाएगी। जिससे किसानों की चिंताएं बढ़ गई है। अगर बारिश ज्यादा हुई तो क्षेत्रीय किसानों की भारी क्षति होगी।

पवन सिंघाल पटेल,किसान कोसफरा

बे मौसम बारिश से किसानों में हाहाकार मचा हुआ है। गाढ़ी कमाई की लागत पूंजी से तैयार फसल बे मौसम बारिश से बर्बाद हो जाएगी। जिससे किसानों की चिंताएं बढ़ गई है। अगर बारिश ज्यादा हुई तो क्षेत्रीय किसानों की भारी क्षति होगी। क्रय केंद्रों पर भी बिचौलिए सक्रिय हैं। अधिकारी क्रय केंद्रों का निरीक्षण कर सभी किसानों की धान तौल कराई जानी चाहिए।

अवध नारायण सिंह किसान बदौवा

अगर बारिश हुई तो खेतों में खड़ी फसल व कटी फसल दोनों को भारी नुकसान पहुंचेगा यहां तक की बारिश की वजह से वाउचर के नाम पर क्रय केंद्र प्रभारी वह मिलर भी किसानों का शोषण करेंगे जिससे किसानों की अपूरणीय क्षति होगी।

शिव शंकर पांडेय किसान करपिया

हरे राम सेवा संस्थान ने गरीब दिव्यांग लोगों को वितरण किया ट्राइसाइकिल

प्रयागराज। गुरुवार को हरे राम सेवा संस्थान के तत्वाधान में गरीब दिव्यांग लोगों को ट्राइसाइकिल का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन हरे राम सेवा संस्था के संस्थापक अनंत सिंह जेलियांग ,असिस्टेंट प्रोफेसर,सीएमपी पीजी कॉलेज , द्वारा स्टेट बैंक ऑफ इंडिया पुलिस लाइन के पास किया गया । दिव्यांग लोगों को संबोधित करते हुए संस्था के संथापक ने कहा नर सेवा ही वास्तविकता में नारायण सेवा है और जब भी हमे मौका मिले तो अपने व्यस्त समय से समय निकाल कर ऐसे गरीब और समाज के अंतिम तबके के लोगों की हमेशा मदद करनी चाहिए ।कार्यक्रम में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के डीजेएम श्रीनिवास तुला जी, एसबीआई की सीएमएचआर तनवी सिंह जी,सहायक ब्रांच मैनेजर समीर गांधी जी ने दिव्योंगो को संबोधित करते हुए कहा कि इस तरह के कार्यों से बड़ा कोई कार्य नहीं हो सकता । हर मानव का ये धर्म होना चाहिए की मानवता का धर्म निभाया ।यही वास्तविक सेवा और धर्म है। इस कार्यक्रम में तूफानी , रेनू यादव , बेला पत्ती, रंजना, राधा ,राम लक्ष्मण,इमरान खान ,राजकुमार जैसे असहाय दिव्यांगो को ट्राइसाइकिल स्वरूप सहयोग देकर पुनीत कार्य संपन्न किया गया ।इस कार्यक्रम में संदीप गुप्ता जी , सहायक मैनेजर एसबीआई,डेप्युटी मैनेजर विजय प्रकाश पांडेय जी , शांतनु मिश्रा, नर नारायण, सत्यम, योगेश, सुनील सहित अन्य गण उपस्थित रहे।

दुष्कर्म के दो आरोपियों को 25 वर्ष का कारावास, अर्थदण्ड भी लगा

प्रतापगढ़। अपर सत्र न्यायाधीश/विशेष न्यायाधीश पाक्सो अधिनियम आलोक द्विवेदी ने नाबालिक के साथ सामूहिक दुष्कर्म करने के आरोप में दोषी पाते हुए राघवेंद्र बिन्द व साहब अली उर्फ राजा निवासीगण थाना फतनपुर प्रत्येक को 25-25 वर्ष के कारावास तथा प्रत्येक को 40-40 हजार रूपया अर्थदण्ड से दंडित किया है। वादिनी मुकदमा के अनुसार 20 अक्टूबर 2016 की रात उसकी लड़की कहीं चली गई। काफी ढूंढने के बात पता चला कि उसे पड़ोस के गांव के राघवेंद्र बिन्द बहला फुसलाकर भगा ले गया है,जब वादिनी उसके घर पता लगाने गई तो उसके घर वालों ने उसे और उसके परिवार वालों को गाली तथा जान से मारने की धमकी देते हुए भगा दिया तब वादिनी ने थाना फतनपुर में मुकदमा दर्ज कराया। दौरान विवेचना पीडिता ने बताया कि घटना 20 अक्टूबर 2016 की रात डेढ़ बजे व शौच के लिए बाहर गई थी तभी आरोपीगण आये और उसका मुंह दबाकर जबरन गलत काम किया। राज्य की ओर से पैरवी विशेष लोक अभियोजक प्रदीप कुमार पान्डेय ने की।

शिक्षक की मौत पर आक्रोशित ग्रामीणों ने घंटों लगाया जाम

बारात में कुंए में गिरकर शिवप्रताप की मौत को लेकर राहाटीकर में फूटा गुस्सा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। शादी समारोह में साथी की खुशी साझा करने गए शिक्षक की मौत को लेकर गुरूवार की सुबह उदयपुर थाना क्षेत्र में परिजन तथा ग्रामीणों का गुस्सा सड़क पर उतर गया। परिजन मृतक शिक्षक की मौत को दुर्घटना मानने को तैयार नही देखे गए। परिजनों का रोते बिलखते दर्दनाक आरोप यही है कि शादी समारोह के नाम पर शिक्षक शिव प्रताप सिंह को बुलवा कर उसे पूर्व नियोजित ढंग से मौत के घाट उतार दिया गया। बाजार में परिजन के साथ बड़ी संख्या में व्यापारी तथा आसपास के ग्रामीण भी घटना के विरोध में चैराहे पर जाम लगाकर गुस्से का इजहार करने लगे। हालाकि मौके पर लालगंज के एसडीएम तथा सीओ ने पहुंचकर गमजदा परिजनों व आक्रोशित ग्रामीणों को समझाने बुझाने का प्रयास कर आक्रोश को नियंत्रित करने का प्रयास किया।

उदयपुर थाना क्षेत्र के राहाटीकर निवासी हरीशचंद्र बाजार में छोटा मोटा व्यवसायिक धंधा कर परिवार का भरण पोषण किया करता है। हरीशचन्द्र इस समय बीमार भी बताए जाते हैं। हरीशचन्द्र के शिवप्रताप एक मात्र पुत्र होने के साथ छह पुत्रियां हैं। इनमें से हरीशचन्द्र की चार पुत्रियों का विवाह हो गया है। जबकि दो बेटियों के हांथ उसे पीले करने हैं। इकलौता पुत्र शिवप्रताप दिल्ली में केन्द्रीय विद्यालय में शिक्षक था। हरीशचन्द्र की झोली में ईश्वर ने शिवप्रताप के शिक्षक होने के साथ बहू सुधा की भी वाराणसी के कोठवा प्राथमिक विद्यालय में शिक्षिका की दोहरी खुशी जरूर सौंपी। नियति को शायद यह दोहरी खुशी अखर गयी। मंगलवार को मृतक शिवप्रताप के बचपन के दोस्त सुभांग की शादी उसके गांव में हुई थी। इसी में वह साथी की खुशी साझा करने दिल्ली से सीधे पट्टी कोतवाली के शेखपुर अठगंवा में पहुंच गया। यहां बारात में हंसी खुशी के बीच अचानक डांस को लेकर विवाद हो गया। विवाद के बढ़ने के कारण मारपीट के दौरान भगदड़ मच गयी। सूत्रों के मुताबिक शिवप्रताप सिंह भगदड़ के दौरान पास के अंधे कुंए में गिर

परिजन दहाड़ मारकर बोले-साहब यह बेटे की हत्या है

शिक्षक की मौत पर लोगों को समझाते बुझाते क्षेत्र अधिकारी।

गया। सिर पर अधिक चोट लगने के कारण उसकी मौत हो गयी। शिवप्रताप की मौत को लेकर बारात में अफरा तफरी मच गयी। बुधवार को शिवप्रताप का जिला मर्चरी हाउस में पोस्टमार्टम कराया गया। देर रात करीब सात बजे उसका शव पीएम हाउस से गांव पहुंचा। गांव पहुंचने पर परिजन उसके शव से लिपट कर दहाड़ मारकर रोने बिलखने लगे। पत्नी सुधा का तो रो रोकर बुरा हाल हो गया। वह बार बार पति की मौत को लेकर दोस्त की भूमिका पर उंगली उठाते बेहोश हो रही थी। दुखी परिजन किसी तरह सुधा को संभालने में जुटे थे। परिजनों को शिवप्रताप की मौत का कारण स्वाभाविक दुर्घटना बताया जाना गले नही उतर रहा था। गुरूवार की सुबह शिवप्रताप की मौत गम के साथ गुस्से में तब्दील हो गयी। आक्रोशित परिजनों के साथ बाजार के लोग उदयपुर थाना के राहाटीकर बाजार में जाम लगा बैठे। बाजार में पनपा गुस्सा आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में भी पहुंच गया और देखते ही देखते बाजार में ग्रामीणों का भी आक्रोशित तेवर पुलिस के लिए सिर दर्द हो गया। उदयपुर एसओ निकेत भारद्वाज जाम की जानकारी पाकर भारी फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे। एसओ ने परिजनों को समझाने बुझाने का घंटो प्रयास किया किन्तु परिजन डीएम को बुलाने की मांग पर अड़े रहे। उदयपुर पुलिस की सूचना पर लालगंज एसडीएम लालधर सिंह यादव तथा सीओ रामसूरत सोनकर भी लावलश्कर के साथ करीब पौने ग्यारह बजे आक्रोशित ग्रामीणों के बीच पहुंचे। एसडीएम तथा सीओ ने परिजनों को समझाया बुझाया तथा उनकी मांगों को शासन तक पहुंचाए जाने का भरोसा दिलाया। मृतक शिवप्रताप की शिक्षिका पत्नी ने अफसरों के सामने बिलखते हुए बताया कि अभी उसके भी कोई संतान नही है।

ऐसे में उसके पति की साजिशन हत्या कर दी गयी है। सुधा का आरोप है कि पति को जानबूझकर सीधे दिल्ली से दोस्त ने घर बुलवाया और बारात में कुंए में धकेल कर उसकी हत्या कर दी गयी। सुधा ने अफसरों को यह भी बताया कि उसका पति अपनी दो अविवाहित बहनों सोनाली एवं खुशी की शादी को लेकर मन में हसरत पाले हुए था। परिजनों के आक्रोश के बीच शिवप्रताप की मां सुशीला भी बिलख रही थी कि आखिर उसके इकलौते चिराग बुझ जाने से अब किस हसरत के साथ उसकी दोनों बेटियों के हाथ पीले हो सकेंगें। इस बीच एसडीएम तथा सीओ के आश्वासन पर जाम समाप्त हो सका। परिजनों की ओर से एसडीएम को दिये गये ज्ञापन में सरकारी मदद, नौकरी, व आरोपितों के खिलाफ कारवाई की माँग की गई है। इसके बाद परिजन शव को अंतिम संस्कार के लिए ले गये। तब कहीं जाकर प्रशासन ने राहत की सांस ली।

युवक का शव नहर के किनारे मिला, पिता ने लगाया हत्या का आरोप

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। बारात के लिए घर से निकले युवक की लाश नहर के किनारे पटरी पर मिली। मौके पर सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर युवक की शिनाख्त करते हुए उनके परिजनों को सूचना दिया। मृतक के पिता ने हत्या की आशंका जताते हुए अज्ञात के खिलाफ शिकायती पत्र दिया है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के बरहूपुर गांव का रहने वाला विवेक पटेल (26) पुत्र राम जियावन पट्टी कोतवाली क्षेत्र के सरसतपुर गांव में बारात में आया हुआ था। उसके बाद सुबह उसकी लाश गुरुवार की सुबह पट्टी नहर पुलिया पर दिखाई दिया। लोगों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची उसकी जेब से आधार कार्ड पर लिखा पते से इसकी सूचना उसके पिता को दी गई। रोते बिलखते परिजन मौके पर पहुंचे और हत्या का आरोप लगाते हुए शिकायती पत्र दिया है। वहीं पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा करके पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

एक ही रात तीन घरों में चोरी की ताबड़तोड़ घटनांए, जांच में जुटी पुलिस

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। लीलापुर थाना क्षेत्र में अज्ञात चोरों ने चोरी की दुस्साहसिक घटनाओं को सिलसिले वार अंजाम देकर खाकी को बेखौफ चुनौती दी है। एक ही रात चोरों ने तीन घरों में चोरी की घटना को अंजाम देकर गांव में भय का माहौल बना दिया। घटना से प्रभावित पीड़ितों ने गुरूवार को थाने पहुंचकर तहरीर दी है। लीलापुर पुलिस चोरी की घटनाओं की जांच में जुटी हुई है। हालाकि पुलिस का इन घटनाओं के बावत रटा रटाया बयान ही सामने आया है कि घटनाओं की जांच का शीघ्र खुलासा किया जाएगा। चोरों ने प्रभावित घरों में महिलाओं के सोने चांदी के आभूषण समेत गृहस्थी के सामान पर हांथ फेर दिया। चोरों ने थाना क्षेत्र के परमेशरापुर दूल्हेपुर में बीती बुधवार की रात अहद अली की पत्नी रैफुन तथा अशद अली के पुत्र जैनुल आब्दीन व अकरम के घरों में दरवाजे की घुंड़ी तोड़ दिया। इसके बाद बाक्स के ताले तोड़ तीस हजार नकदी व आधा किलो चाँदी तथा दस तोला सोने के जेवरात उड़ा लिये। गुरुवार की सुबह परिजन सो कर उठे तो चोरी की वारदात देख दंग रह गये। घटना के बाबत पीड़ित ने थाने पहुँचकर तहरीर दी है। दरोगा अनिल पाण्डेय का कहना है तहरीर मिली है। मुकदमा दर्ज कर खुलासा किया जाएगा।

संग्रामगढ़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र को जनपद में दूसरा स्थान मिला

परियावां, प्रतापगढ़। प्रमुख सचिव चिकित्सा स्वास्थ्य परिवार कल्याण पार्थ सारथी सेन शर्मा ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी प्रतापगढ़ एवं अधीक्षक डॉक्टर मनोज सिंह को पत्र के माध्यम से बधाई दी। विगत वर्षों से सीएचसी संग्रामगढ इकाई को एन.क्यू.ए.एस. सर्टिफिकेशन के लिए चयनित किया गया था जिसका फाइनल असेसमेंट नेशनल टीम के सदस्यों में मणिपुर से डॉ.एल.आर. गोजेंद्र, दिल्ली से डॉ. सविता गहलोत तथा प्रयागराज की टीम द्वारा सितंबर 2023 में 8 डिपार्टमेंट का निरीक्षण किया गया, जिसमें लेबर रूम, फामेर्सी, इमरजेंसी, ओपीडी आईपीडी, पैथोलॉजी, एक्सलरी, तथा जनरल एडमिनकी गहनता से जांच की थी जिसमें 92.1 प्रतिशत अंक के साथ जनपद का इस साल का पहला अस्पताल एन.क्यू.ए.एस. सर्टिफिकेशन का सम्मान मिला जिसमें जनपद में संग्रामगढ़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र को 2023 में मिला। बीते वर्ष सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कुंडा को भी यह सम्मान हासिल हुआ था। इस मौके पर डॉ.संतोष, डॉ. रोहित, डॉ.हेमंत सिंह, डॉ. अफरोज मोइद, अरविंद कुमार, अमर सिंह, पी.पी.तिवारी, अनिल जायसवाल, विभा प्रकाश, शिप्रा अग्रहरि, समा सरोज, पवन श्रीवास्तव, बीके शुक्ला, दिनेश सिंह, संग्राम सिंह आदि मौजूद रहे।

वृद्धजनों को वितरित किया गया ऊनी वस्त्र

वृद्धाश्रम महुली में हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। वृद्ध आश्रम महुली माधवगंज प्रतापगढ़ में गत वर्षो की भांति वृद्ध जनों को ऊनी वस्त्र भेंट कर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वृद्ध आश्रम के सबसे वृद्ध जन 102 वर्ष के जगराम द्वारा विभिन्न गीतों के माध्यम से मौजूदा समाज में हो रही वृद्ध जनों की उपेक्षाओं पर प्रकाश डाला और आए हुए अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता अभिषेक तिवारी द्वारा किया गया अतिथि के रूप में मौजूद समाजसेवी रोशन लाल उमर वैश्य द्वारा कहां गया कि वृद्ध जनों की सेवा ही सबसे बड़ा पुण्य और प्रत्येक नागरिक को अपने जिम्मेदारियां का बखूबी अहसास होना चाहिए जिससे हमारे अभिभावक हम सब पर अपनी छाया सदैव बनाए रखें कार्यक्रम को संबोधित करते हुए परशुराम सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रदीप शुक्ला ने

वृद्धजनों को ऊनी वस्त्र देते आयोजकगण।

कहा यहां आकर वास्तव में सुखद अनुभूति हो रही है और वृद्ध जनों की सेवा करने का पुण्य अवसर प्राप्त हो रहा है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए वृद्ध आश्रम के प्रबंधक मान सिंह द्वारा आभार प्रकट करते हुए कहा कि इंसान के जीवन का सबसे भावुकक्षण यही होता है की जिनको हमने जन्म दिया वह एक समय बाद उनके द्वारा थोड़ी सी अभिलाषा और लालच में छोड़ देते हैं, परंतु समाज में आज भी ऐसे संवेदनशील लोग हैं जो प्रत्येक दशा में वृद्ध जनों की सेवा करने को तत्पर रहते हैं इस अवसर पर अनारकली तिवारी, अर्चना पांडे, अर्चना तिवारी, रंजना तिवारी, आयुष्मान शांडिल्य, आदित्य तिवारी, करुणेश पांडे, सचिन पांडे, सोनू उमरवैश्य आदि लोग मौजूद रहे।

प्रताप सदन में मना जनसत्ता दल लोकतांत्रिक का पांचवा स्थापना दिवस

जनसेवा संकल्प दिवस के रुप में कार्यकताओं ने मनाया जश्न

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जनसत्ता दल लोकतांत्रिक का पांचवां स्थापना दिवस शहर स्थित प्रताप सदन कार्यालय पर पार्टी के पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं की मौजूदगी में जिला अध्यक्ष राम अचल वर्मा की अध्यक्षता व जिला महासचिव राज कुमार सिंह के संचालन में हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ जनसेवा संकल्प दिवस के रूप में मनाया गया।

स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव पूर्व कोआपरेटिव बैंक अध्यक्ष के.एन.ओझा व विशिष्ट अतिथि के रूप में एमएलसी गोपाल के प्रतिनिधि

प्रताप सदन में केक काटकर जश्न मनाते पदाधिकारीगण।

अनिल कुमार सिंह लाल साहब रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ पार्टी के पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं ने सामूहिक रूप से अतिथियों की मौजूदगी में केक काट एक दूसरे को खिला कर किया। इस मौके पर पार्टी के पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं ने सामूहिक रूप से पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व कैबिनेट मंत्री रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया के नेतृत्व में पार्टी को मजबूती का संकल्प लिया।

उपस्थितजनों को सम्बोधित करते हुए बतौर मुख्य अतिथि पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव के0एन0 ओझा ने पार्टी की नीतियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पार्टी का उद्देश्य समाज के दबे-कुचले लोगों को न्याय दिलाना है।

इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया जनता के सुख दुःख में मदद हेतु सदैव तत्पर रहने वाले जन सुलभ राजनेता होने के चलते जहां राजा भैया ने अपना कीर्तिमान स्थापित किया है, वहीं पार्टी का जनाधार पूरे प्रदेश में धीरे-धीरे गति की ओर बढ़ रहा है। इतना ही नहीं प्रदेश भर में जनसत्ता दल लोकतांत्रिक के प्रति जनता का तेजी से रुझान बढ़ा है। ऐसे में दल के कार्यकताओं की जिम्मेदारी बढ़ी है,वह पार्टी संगठन को मजबूत करने का प्राणप्रण से प्रयास करें। इस मौके पर प्रमुख रूप से एमएलसी मीडिया प्रभारी मुक्कू ओझा,मुन्ना सुजाकर, कुंडा प्रमुख संतोष सिंह, पूर्व प्रमुख पंकज सिंह,अनुभव यादव, जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि कुलदीप पटेल, पूर्व प्रमुख बबलू सिंह, हरिओम शंकर श्रीवास्तव प्रतिनिधि राजा भैया, भानू सिंह, मुन्ना सिंह, विवेक त्रिपाठी, संतोष द्विवेदी, दिनेश तिवारी, महिला मोर्चा की अध्यक्ष वंदना उपाध्याय, प्रवीण चतुर्वेदी, रिगन श्रीवास्तव, प्रांशू शुक्ल, क्षीर सागर तिवारी, आनन्द देव पांडेय, राम समुझ तिवारी, ध्यानी सिंह, सुभद्रा सिंह, विनय सिंह, यश शुक्ल सहित सैकड़ों की संख्या में पार्टी के पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

परियावां बाजार मे अतिक्रमण को लेकर सड़क चौड़ी करण की हुई नाप जोख

अखंड भारत संदेश

लोक निर्माण विभाग के जेई व नवाबगंज पुलिस मौजूद रही

परियावां, प्रतापगढ़। प्रयागराज लखनऊ राजमार्ग को जोड़ने वाली परियावां लवाना मार्ग की सड़क की चैड़ाई को लेकर लोक निर्माण विभाग के जेई दिनेश पटेल ने अपने स्टॉफ के साथ पाइकगंज बाजार की सड़क की चैड़ाई की नाप करके जगह चिन्हित किया और लाल रंग का निशान लगाया और दुकानदारों से सड़क पर अतिक्रमण कर दुकान सजाने वाले दुकानदारो को अतिक्रमण हटाने को कहा। इस दौरान ब्यापारियों मे अफरा तफरी का माहौल दिखाई दिया ब्यापारी लोग सड़क चैड़ी करण को लेकर बड़े उत्सुक दिखाई दे रहे थे सड़क नाप को लेकर तरह तरह की लोग चर्चा करते रहे कुछ लोग यह कह रहे थे कि बाजार के किसी ब्यक्ति ने सड़क पटरी किनारे अतिक्रमण कों लेकर विभाग के साथ कई जगह आन लाइन शिकायत किया उसी को लेकर लोक निर्माण विभाग ने सड़क पर से अतिक्रमण हटाने के लिए चैड़ी करण के लिए नाप जोख किया जो रेलवे फाटक तक करने के बाद वापस चले गये । इस बाबत जानकारी करने पर विभाग के जेई दिनेश पटेल कुछ भी बोलने से कतराते रहे लोगो का कहना है कि शिकायत कर्ता की जाँच के लिए विभाग ने खाना पूर्ति के लिए सड़क चैड़ी करण का कदम उठाया जो नाप जोख मे लाल रंग के पेंट से निशान लगाकर रेलवे फाटक के पास से वापस चले गये। अब देखना है विभाग सड़क चैड़ी करण को लेकर आगे की क्या कारवाई करता है या फिर नाप जोख करने के बाद कुंडली मारकर बैठ जाता है यदि परियावां लवाना मार्ग से जुड़े पाइकगंज बाजार व परियावां मुस्लिम बस्ती तक सड़क का चैड़ी करण किया जाता है तो सबसे ज्यादा नुकसान परियावां मुस्लिम बस्ती व उसके बाद पाइकगंज बाजार मे कुछ ब्यापारियों को होगा सड़क चैड़ी करण को लेकर ब्यापारी बड़े उत्साहित भी है क्योकि सड़क का चैड़ी करण होने से परियावां बाजार की रौनक वापस आ जाएगी सड़क पर जगह न होनें से दुकान पर कोई ग्राहक खड़ें होने को तैयार नही है जिससे दुकानदारी नही हो पाती यदि सडक की चैड़ाई होती है तो फिर परियावां बाजार की रौनक वापस आने से इंकार नही किया जा सकता यह आने वाला समय ही बता सकता है।

ओटीएस पंजीकरण के अंतिम दिन उपभोक्ताओं की लगी लंबी कतार

बिजली बिल जमा करने के लिये लगी उपभोक्ताओं की भीड़।

अखंड भारत संदेश

विद्युत विभाग में की तरफ से उपभोक्ताओं को 30 नवंबर तक सौ फीसदी सरचार्ज माफी की घोषणा की गई है। जिसके लिए बाकायदा प्रचार प्रसार करके उपभोक्ताओं को प्रेरित भी किया जा रहा था। अंतिम तिथि 30 नवंबर होने के कारण गुरुवार की सुबह से ही विद्युत उपकेंद्र पट्टी में लंबी कतार में उपभोक्ता नजर

पट्टी, प्रतापगढ़। विद्युत उपकेंद्र पर गुरुवार को ओटीएस में सौ फीसदी सरचार्ज माफ होने के कारण सैकड़ों की तादाद में उपभोक्ता दिखाई दिए।

वही उनकी लंबी कतार देखकर विद्युत कर्मियों के पसीने छूट गए। एक मुफ्त समाधान योजना के अंतर्गत विद्युत विभाग में की तरफ से उपभोक्ताओं को 30 नवंबर तक सौ फीसदी सरचार्ज माफी की घोषणा की गई है। जिसके लिए बाकायदा प्रचार प्रसार करके उपभोक्ताओं को प्रेरित भी किया जा रहा था। अंतिम तिथि 30 नवंबर होने के कारण गुरुवार की सुबह से ही विद्युत उपकेंद्र पट्टी में लंबी कतार में उपभोक्ता नजर आए हालांकि महकमें के अधिकारियों को इसकी जानकारी पहले थी।

जनसेवा केंद्रों पर भी रजिस्ट्रेशन के लिए सुविधा प्रदान की गई है लेकिन उपभोक्ता अधिक से अधिक संख्या में विद्युत उपकेंद्र पर ही नजर आए जहां पर सैकड़ो लोगों ने रजिस्ट्रेशन करते हुए अपना बिल भी जमा किया। एसडीओ एसबी प्रसाद ने बताया कि अंतिम तिथि के बाद सरचार्ज में 80 फीसदी तक माफी उपभोक्ताओं को रजिस्ट्रेशन के बाद की जाएगी।

एमडीपीजी कालेज में छात्र-छात्राओं को नया मतदाता बनाने के लिये किया जागरुक

संयोजिका सारिका व जिलाध्यक्ष रुचि मिली छात्र-छात्राओं से

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भाजपा महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष रुचि केसरवानी एवं भाजपा की कालेज मतदाता जागरुकता अभियान की संयोजिका सारिका श्रीवास्तव ने आज एमडीपीजी कालेज में जाकर प्राचार्य मनोज मिश्रा के सहयोग से 95 छात्र-छात्राओं का मतदाता पहचान पत्र का फार्म भरवाया।

महिला नेत्रियों ने दो व तीन दिसम्बर को बूथों पर होने वाले मतदाता शिविर में छात्र-छात्राओं से आधार कार्ड, दो फोटो व हाईस्कूल के अंक पत्र ले जाकर फार्म-6 भरने की अपील की। महिला नेत्रियों ने अपना दोनों का मोबाइल नम्बर भी प्राचार्य के सहयोग से छात्र-छात्राओं को उपलब्ध कराया जिसका परिणाम यह रहा कि एमडीपीजी कालेज के छात्र-छात्राओं के मोबाइल फोन मतदाता बनने के लिये जानकारी प्राप्त करने हेतु आने लगे। जिलाध्यक्ष रुचि केसरवानी व संयोजिका सारिका श्रीवास्तव ने बताया कि नया मतदाता बनने में छात्र-छात्राओं में उत्साह है। छात्र-छात्राओं की चल रही परीक्षाओं को ध्यान में रखते हुए उनसे वाट्सअप पर भी आवश्यक सूचनाएं उपलब्ध कराने को कहा गया है। बता दें कि शहर व आसपास के विद्यालयों में नया

एमडीपीजी कालेज में छात्रा को फार्म भराती संयोजिका सारिका श्रीवास्तव।

मतदाता बनाने के लिये सारिका श्रीवास्तव को कालेज संयोजिका बनाया गया है जो महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष रुचि केसरवानी के साथ इस अभियान में लगी हैं। कार्यक्रम में रुचि केसरवानी, सारिका श्रीवास्तव के अलावा मंत्री भी मौजूद रहीं। कल एक दिसम्बर को भी अन्य कालेजों में इसी तरीके के कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे।

दूसरी शादी रचाने पहुंचे बरातियों सहित दूल्हे को बेरंग लौटाया

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। थाना आसपुर देवसरा क्षेत्र के केवटली गांव में शकुंतला पुत्री बलजोर निषाद की 28 नवंबर को शादी राजा उर्फ राज वर्मा पुत्र ननकू राम वर्मा गांव नरसिंहपुर थाना कंधई हनुमानगंज के साथ होनी थी। कन्या पक्ष से इस शादी की तैयारियां जोरों शोरो से चल रही थी टेंट भी लग गया जय माल भी सज गया और बारात आई भी लेकिन जैसे ही द्वार पूजा का कार्यक्रम शुरू हुआ एकाएक 112 नंबर की पुलिस आ धमकी और इस शादी को रुकवा दिया जब कन्या पक्ष वालों को पता चला कि लड़का राज वर्मा कोर्ट मैरिज किसी से और किया है और शादी शकुंतला के साथ कर रहा है। जिससे नाराज होकर कन्या पक्ष वाले दूल्हा राज और दूल्हे के पिता नन्हकू राम दूल्हे के मामा पारस को बंधक बना लिया मामला गरमाता देख सारे बाराती रात को ही भाग खड़े हुए पूरी रात इस शादी को रुकवाने के लिए पुलिस लड़की के घर बैठी रही, कन्या पक्ष के परिजनों का कहना है कि शादी में तीन लाख अट्ठाइस हजार रुपए खर्च हुए हैं वो सब पैसा दे दें तब जाकर हम इनको छोड़ेंगे मौके पर चैकी इंचार्ज लक्ष्मीकांत सिंगर अपने हमराही के साथ पहुंचकर मामला संभालने में लगे हैं। दूल्हा का कहना है कि लड़की से हमने कोर्ट मैरिज नहीं की है हां पहले हम लोगों का जरूर कुछ था लेकिन लिखा पढ़ी के साथ सुलह से अलग हो गए थे, दुल्हा राज ने यह भी बताया कि जब बारात घर से निकल रही थी तब भी पुलिस हमारे घर पर आई थी और बारात ले जाने के लिए मना कर रही थी लेकिन जब मैं ने सुलह समझौता का कागज दिखाया तो पुलिस वालों ने कोई आपत्ति नहीं की थी। तब बारात ले कर हम केवटली गांव आए मामले शाम तक देवसरा थाने पर पंचायत चलती रही।

खबर संक्षेप

कौशाम्बी के सम्पूर्ण सीमा क्षेत्र में दिनांक 30 नवम्बर से 31 जनवरी तक धारा-144 लागू

कौशाम्बी। अपर जिला मजिस्ट्रेट ने बताया कि जनपद कौशाम्बी के सम्पूर्ण सीमा क्षेत्र में एवं जनपद कौशाम्बी में निवास करने वाले तथा जनपद की सीमा में प्रवेश करने वाले समस्त व्यक्तियों पर दिनांक 30 नवम्बर 2023 से दिनांक 31 जनवरी 2024 तक सम्पूर्ण जनपद में धारा 144 प्रभावी होगा। विशेष परिस्थितियों में इस अवधि में इन आदेशों को संशोधित, परिवर्तित अथवा समाप्त किया जा सकता है। इन आदेशों का अथवा इनके किसी भी अंश का उल्लंघन भारतीय दण्ड संहिता की धारा-188 के अन्तर्गत दण्डनीय होगा।

सकिपा की मासिक बैठक आज

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी की मासिक बैठक एक दिसंबर दिन शुक्रवार समय 11 बजे से पार्टी कार्यालय मंझनपुर में होगी,उक्त जानकारी पार्टी नेता अजय सोनी ने दी है।अजय सोनी ने पार्टी के सभी कार्यकताओं को मासिक बैठक में शामिल होने का आग्रह किया है।

शराब के नशे में कार सवार चालक ने बच्चे को कुचला मौत

सिपाही की गाड़ी ने बच्चे को रौंदा आक्रोशित व्यापारियों ने शव रखकर चक्काजाम कर दिया

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। सराय अकिल थाना क्षेत्र के नगर पंचायत सराय अकिल भगवती गंज फकीरा बाद में पुलिस की प्राइवेट गाड़ी ने बच्चे को रौंद दिया जिससे बच्चे की दर्दनाक मौत हो गयी बच्चे की मौत से नाराज लोगों ने नारे बाजी प्रदर्शन करते हुए सड़क पर जाम कर दिया सैकड़ो लोगो का मजमा सड़क पर लगा हुआ है सिपाही के गाड़ी से बच्चे की मौत की जानकारी मिलते ही मौके पर चायल क्षेत्राधिकारी सहित कई थानों की पुलिस फोर्स पहुँच गयी है मामले को लेकर पुलिस और लोगों के बीच नोंक झोंक हुई मामला शान्त कराने में पुलिस के कुछ अधिकारी लगे है बताया जाता है कि हिमांशु केसरवानी उम्र 8 वर्ष सिपाही के वाहन से घायल हुआ है और अस्पताल ले जाते वक्त बच्चे की रास्ते में मौत हो गयी है प्रत्यक्ष दर्शियों के अनुसार सिपाही की गाड़ी ने बच्चे को रौंदा है और अंकुर नाम के सिपाही का नाम हादसे में आ रहा है लोगों के अनुसार शराब के नशे में सिपाही था जिससे हादसा हुआ है घटना को अंजाम दे कर सिपाही मौके से फरार हो गया है घटना से आक्रोशित व्यापारियों ने शव रखकर चक्काजाम कर दिया सर्किल सीओ सहित भारी पुलिस बल मौके पर भीड़ को नियंत्रित करने में लगी है।

बारिश से आलू की फसल को भारी नुकसान की आशंका

कौशाम्बी। बुधवार की देर रात से बारिश शुरू होने के बाद जहां सड़क गलियां कीचड़ युक्त हो गई है वहीं आलू के फसल को बड़ा नुकसान होने की आशंका जताई जा रही है। बारिश के कारण किसानों के चेहरे पर चिंता के भाव साफ देखने को मिल रहा है। प्रयागराज मंडल के चारो जिलों सहित प्रदेश के अन्य कई जिलों में आधी रात से शुरू हुई बरसात ने किसानों की चिंता बढ़ा दी है। बारिश के कारण किसानों के आलू की फसल खराब हो गई है तो वहीं गेहूं के फसल की बुआई भी फिछड़ रही है। मौसम विभाग ने 23 जिलों में तीन दिन बाद भीषण ठंड पड़ने का अलर्ट जारी किया है। देर रात बारिश होने से भीषण ठंड की शुरूआत अभी से हो गई है।

न्यूज झरोखा

दलित बेटियां खुशबू और संजना ने जूनियर एथलीट प्रतियोगिता में दूसरा स्थान प्राप्त कर जनपद का नाम किया रोशन

ग्रामीणों में खुशी डीजे बजाकर गांव में किया जोरदार स्वागत

कौशाम्बी। विकास खण्ड चायल के ग्राम पंचायत बालीपुर टाटा गांव के रहने वाले तीरथ लाल पासी मेहनत मजदूरी करके अपनी बेटियों को खेलकूद के प्रति पूरा सहयोग और समर्थन करता है जिससे तीरथ लाल के दो बेटियों खुशबू और संजना ने अभ्युदय यूथ क्लब के संभाग स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में जूनियर ऐथलीट दौड़ 200 मीटर की दौड़ में खुशबू ने दूसरा स्थान प्राप्त किया वही 400 मीटर की दौड़ में संजना ने भी दूसरा स्थान प्राप्त किया और मेडल जीत कर जब दोनों बेटियां अपने गांव पहुंची तो गांव वालों द्वारा उनका जोरदार स्वागत करते हुए माला पहनाकर और डीजे बजा कर किया गया। यह प्रतियोगिता प्रयागराज के फूलपुर में संपन्न हुए जिसमें दलित परिवार की दोनों बेटियों ने जनपद के साथ साथ अपने गांव और अपने पिता का नाम रोशन किया। जिससे परिवार जनों एवं ग्रामीणों में खुशी का मौहाल है और आसपास के लोगो द्वारा जीत की बधाई देने वालो का तांता लगा है।

फाजिलपुर गोपालपुर, उदहिन बुजुर्ग, टेंवा एवं पिण्डरा सहाबनपुर में आयोजित हुआ विकसित भारत संकल्प यात्रा

कौशाम्बी। जनपद की ग्राम पंचायत-फाजिलपुर गोपालपुर,उदहिन बुजुर्ग,टेंवा एवं पिण्डरा सहाबनपुर में विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम में सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी तथा छूटे हुए पात्र लाभार्थियों को विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित किया गया कार्यक्रम में बैंक के स्टॉल के माध्यम से कृषकों की ई-केवाईसी, आधार सीडिंग, केसीसी एवं अन्य लोन से सम्बन्धित समस्याओं का निस्तारण किया गया। किसानों को रासायनिक उर्वरकों के वैकल्पिक उर्वरकों यथा-नैनो यूरिया के विषय में जागरूक किया गया। स्वास्थ्य विभाग एवं कृषि विभाग आदि विभागों के स्टॉल भी लगायें गयें।

होमगार्ड बच्चू लाल को किया गया सम्मानित

कौशाम्बी। होमगार्ड के पद पर कार्यरत बच्चू लाल गुरुवार को अधिवर्षता आयु पूर्ण करने के पश्चात सेवानिवृत्त हुए। विशेष कार्याधिकारी सुनील मिश्रा अंगद सिंह एवं होमगार्ड्स ने बच्चू लाल को फूलों की माला पहनाकर एवं उपहार सप्रेम भेंट कर विदाई किया।और उनके कार्यकाल को याद करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

अनुसूचित जाति के नेवादा ब्लॉक प्रमुख महिला के कार्यों का हो रहा हनन

ब्लॉक प्रमुख के हस्ताक्षर में भी हो रही है बड़ी हेराफेरी यदि कर लिया जाए मिलान तो उजागर होंगे बड़े कारनामे

कौशांबी। नेवादा ब्लॉक के इमली गांव निवासी अनुसूचित जाति की महिला केलपती नेवादा ब्लॉक प्रमुख पद पर निर्वाचित हुई थी लेकिन ब्लॉक की कुर्सी पर यह काबिज नहीं दिखाई पड़ती हैं ब्लॉक प्रमुख की कुर्सी पर प्रतिनिधि का कब्जा है मीटिंग में भी ब्लॉक प्रमुख की कुर्सी पर प्रतिनिधि जमा रहते हैं प्रतिनिधि के नाम पर उनके अधिकारों को छीन लिया गया है अनुसूचित जाति के महिला के साथ खुले आम उत्पीड़न हो रहा है लेकिन इनका इतना साहस नहीं है कि यह खुलकर प्रतिनिधि का विरोध कर सकें सरकारी अभिलेखों में भी फर्जी तरीके से हस्ताक्षर बनाकर कार्य योजनाएं संचालित की जा रही है पदभार संभालने के बाद आज तक उन्होंने अपने पद के अनुरूप कोई भी कार्य नहीं किया है इन्होंने अपना प्रतिनिधि गांव के ही संदीप मिश्रा को बनाया है। आरोप है कि ब्लॉक के समस्त कार्य संदीप मिश्रा द्वारा किया जाता है इसकी कोई भी जानकारी ब्लॉक प्रमुख केलपती को नहीं होती है। लोगों का तो यहां तक कहना है कि चेकों पर भी प्रतिनिधि ही हस्ताक्षर करते हैं जिसका मिलान करके सच्चाई उजागर की जा सकती है क्षेत्र में चर्चा है कि ब्लॉक प्रमुख के प्रतिनिधि मनमाने ढंग से कार्य करते हैं जिससे क्षेत्र का विकास नहीं हो रहा है और क्षेत्र पंचायत सदस्यों में भी आक्रोश व्याप्त है। चुनाव जीतकर काबिज होने वाली अनुसूचित जाति की महिला ब्लॉक प्रमुख अपने अधिकारों के लिए परेशान हैं उनके अधिकार उन्हें नहीं दिए जा रहे हैं रबड़ के स्टांप बनकर महिला ब्लॉक प्रमुख रह गई है आम जनता ब्लॉक प्रमुख से विकास की मांग कर रही है लेकिन उनकी बात नहीं सुनी जा रही है जिससे मनमानी तरीके से विकास योजनाओं को अमली जामा पहनाया जा रहा है ब्लॉक प्रमुख से शिकायत करने पर प्रतिनिधि उनकी बात नहीं मानते लोगों का तो यहां तक कहना है कि ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि से क्षेत्र पंचायत सदस्य भी काफी नाखुश है और वह अविश्वास प्रस्ताव लाने पर विचार कर रहे हैं अनुसूचित जाति की महिला ब्लॉक प्रमुख के कुर्सी पर कब्जा करने के बाद ब्लॉक की योजनाओं में जमकर धांधली हो रही है पूरे ब्लॉक के कार्यों की शासन स्तर से जांच कराए जाने की जरूरत है और ब्लॉक प्रमुख की कुर्सी पर कब्जा करने वाले ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि के कारनामों को संज्ञान लेकर इन पर कठोर कार्रवाई करते हुए ब्लॉक प्रमुख की कुर्सी पर ब्लॉक प्रमुख को काबिज कराने का प्रयास प्रशासन को करना होगा लेकिन माननीयों के दबाव में ऐसा होता दिख नहीं रहा है।

अधिकारियों की लापरवाही से भीगे किसानों और सरकार का हजारों कुंतल धान

अखंड भारत संदेश

मौसम विभाग की चेतावनी के बावजूद मंडी समिति जिला बिपणन अधिकारी धान खरीद केंद्र के अधिकारियों की लापरवाही से भीग गए खरीदे गए सरकारी और किसानों के धान

धान खरीद केंद्र एजेंसियों के बद इंतजामी के चलते किसान और सरकार के नुकसान की आखिर किससे कराई जाएगी भरपाई

कौशाम्बी। मौसम विभाग की बारिश की चेतावनी के बावजूद सरकारी धान खरीद केंद्र में लगी सरकारी एजेंसियों जिला बिपरण अधिकारी धान खरीद केंद्र अधिकारी और कृषि मंडी समिति के अधिकारियों कर्मचारियों ने बड़ी लापरवाही की है जिससे मंडी में तौल के लिए रखा किसानों का हजारों कुंतल धान देर रात हुई बारिश से भीग गया वही सरकारी धान खरीद केंद्र में खरीद कर रखें सरकार के भी धान भीग गए हैं जिससे सरकार और किसान दोनों को बड़ा नुकसान हुआ धान खरीद केंद्र में बारिश के बाद धान भीग जाने के चलते किसानों को फिर से धान सुखाना पड़ेगा उनकी मुसीबत बढ़ गई है किसानों को धान तौल के लिए फिर कुछ दिनो तक इंतजार करना पड़ेगा। मौसम विभाग ने कई दिन पहले ही यूपी के कई जिलों में दो दिन बारिश होने की चेतावनी जारी कर दी थी,बारिश की चेतावनी के बावजूद भरवारी, अझुवा मंझनपुर ओसा मंडी नेवादा के तिलगोड़ी चायल के मनौरी सहित विभिन्न धान खरीद एजेंसी में तौल के लिए रखे गए किसानो के धान तौले नही गए और बोरे खुले में ही रखे रह गए,जिसके चलते देर रात हुई बारिश में किसानों के हजारों कुंतल धान के बोरे भीग गए,और किसानों का बड़ा नुकसान हो गया इतना ही नहीं किसानों से खरीदने के बाद केंद्रों में रखे सरकारी धान भी भीग गए हैं जिससे धान की क्वालिटी खराब होने का अनुमान लगाया जाता है खरीद केंद्र एजेंसियों के बदइंतजामी के चलते किसान और सरकार के नुकसान की भरपाई आखिर किससे कराई जाएगी व्यवस्था के सफल संचालन की जिम्मेदारी किसकी है लापरवाही करने वाले के कारनामे को क्या शासन प्रशासन संज्ञान लेकर दोषियों को दंडित कर उन्हें सबक देते हुए आने वाले दिनों के लिए व्यवस्था में सुधार करेगा या फिर इसी तरह धान खरीद एजेंसी में लापरवाही के चलते सरकार के साथ-साथ किसानों का बड़ा नुकसान होता रहेगा।

अपंजीकृत लोग कर रहे हैं पैथोलॉजी में जांच मरीजों का हो रहा बड़ा नुकसान

अखंड भारत संदेश

बिना लैब टेक्नीशियन के खुले पैथोलॉजी मरीज के लिए बने मुसीबत गली-गली में खुले कलेक्शन सेंटर

कौशाम्बी। स्वास्थ्य विभाग की लापरवाही के चलते जिले में अवैध पैथोलॉजी का धंधा तेजी से फल-फूल रहा है तमान पैथोलॉजी में लैब टेक्निशियन नहीं है कम पढ़े-लिखे लोग बिना स्वास्थ्य विभाग की डिग्री के पैथोलॉजी में जांच करते लोग देखे जाते हैं मरीजो को जांच की मनमानी रिपोर्ट दी जा रही है जिस पर भरोसा करना भी मुश्किल हो गया है गलत तरीके से खुले पैथोलॉजी में लैब टेक्नीशियन के बिना जांच किए जाने के बाद रिपोर्ट बनाए जाने से मरीजों का बड़ा नुकसान हो रहा है लेकिन जिम्मेदार उदासीन है जांच के लिए लगाए गए स्वास्थ्य अधिकारी केवल अवैध पैथोलॉजी से वसूली में मशगूल है सूत्रों की माने तो एक निश्चित रकम इन जिम्मेदारों तक पहुंच रही है गांव कस्बों तक कहीं एक कमरे में कही सकरी गलियों में अवैध पैथोलॉजी चल रही है। अप्रशिक्षित कर्मचारियों से काम चलाया जा रहा है। पैथोलॉजी जांच का हाल यह है कि एक ही सैंपल की अलग- अलग रिपोर्ट आती है। और अलग अलग रेट है इन रिपोर्ट पर कितना भरोसा किया जाए, यह चिकित्सक भी समझ नहीं पा रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग के आंकड़ों में जिले में लगभग 50 पैथोलॉजी बिना पंजीकृत हैं। जबकि हकीकत में कई गुना अधिक अवैध पैथोलॉजी खुलेआम खून मलमूत्र शुगर आदि की जांच करने में लगी हैं। अगर कस्बा की बात की जाए तो हर मोहल्ले में कई पैथालॉजी चल रही हैं। कोई एक कमरे में तो कोई बरामदे में मरीजों के ब्लड सैंपल लेकर जांच कर रहा है। जिला अस्पताल के सामने भी इस तरह की पैथोलॉजी की बाढ़ है। जिला अस्पताल आए मरीजो ने बताया कि एक पैथोलॉजी से जांच करवाई थी तो प्लेटलेट्स 80 हजार थी। कुछ देर बाद दूसरी पैथोलॉजी से प्लेटलेट्स जांच करवाई तो वह एक लाख निकली चिकित्सक भी दो रिपोर्ट देख हैरत में पड़ गए। उसके बाद जिला अस्पताल से जांच करवाई तो कहीं जाकर इलाज शुरू हो सका। यह हाल केवल कस्बा ही नहीं बल्कि पूरे जिले में बना हुआ है। बाजारों में तो हर गली-मोहल्ले में पैथोलॉजी की दुकानें हैं रोजाना इनकी संख्या बढ़ती जा रही है। यही हाल कनैली , सराय अकिल , पुरखास,नेवादा, तिल्हापुर मोड, बेनीराम कटरा, चायल, मनौरी, सैयद सरावां, चरवा, करारी, भरवारी, मूरतगंज, बेरुवा, सैनी, देवीगंज, सिराथू, मंझनपुर, कुम्हियावा, समदा, पश्चिम शरीरा, हिनौता, का बना हुआ है। मंझनपुर तहसील की हर गली में कलेक्शन एजेंट मौजूद हैं। अधिकतर पैथोलॉजी बिना पंजीकरण के चल रही हैं।मरीज के परिजनों का आरोप है कि कई बार चिकित्सक प्राइवेट जांच के लिए भी मौखिक रूप से कलेक्शन सेंटर का नाम लेकर जांच कराने को कहते हैं। यहां अप्रशिक्षित लोग ब्लड सैंपल निकालने से लेकर सभी जांचें करते हैं।

अवैध पैथोलॉजी को डॉक्टर भी देते हैं बढ़ावा

कौशाम्बी इन अवैध पैथोलॉजी के फलने-फूलने में झोलाछाप चिकित्सकों का भी आशीर्वाद रहता है। संचालक चिकित्सकों से जांच का कमीशन तय कर लेते हैं। इसके बाद अस्पताल आने वाले मरीजों को डॉक्टर इन्हीं पैथोलॉजी पर भेजते हैं। इससे उनको मोटा कमीशन मिलता है। अब तक ये लोग एक फोन पर घर जाकर भी सैंपल कलेक्ट कर लेते हैं।

पैथोलॉजी में जांच के रेट भी अलग-अलग

कौशाम्बी। इन अवैध पैथोलॉजी की जांच रिपोर्ट के दरें भी अलग-अलग हैं। कोई एलएफटी जांच के लिए पांच सौ लेता है तो कोई चार सौ में ही जांच कर देता है। तो इसी तरह डेंगू की जांच कहीं एक हजार में तो कहीं 1200 में हो रही है। मनमाने रेट व भरोसा न होने के चलते इसका खामियाजा मरीजों को भुगतना पड़ता है।

पहले देवर पति को पीटा फिर पत्नी को

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के ग्राम सिकन्दर पुर अइमा पतेरिया की रहने वाली मीरा देवी पत्नी राकेश कुमार ने चरवा थाने में शिकायती प्रार्थना देकर पुलिस को बताया कि दिनांक 29 नवम्बर को जब मेरा का पति राकेश और देवर देवनाथ एक जमीनी मुकदमें में चायल तहसील तारीख करने गए थे रास्ते में गांव के ही विनोद कुमार पुत्र महादेव व मल्हू पुत्र राम प्रसाद और विरेंद्र पुत्र मल्हु मिले जो पहले से उन लोगो का रास्ता ताक रहे थे। उक्त लोगों ने दोनो को रास्ते में रोककर गाली गलौज देने लगे और जान से मार डालने की धमकी दे रहे थे। मीरा के पति ने अपने साथ हुई घटना के बारे में घर में बताया तो मीरा देवी उक्त लोगों के घर उलाहना देने पहुंची और बोली कि मेरे पति और देवर को रास्ते में क्यो गाली गलौज करते हो, रास्ता क्यो ताकते रहते हो इतनी सी बात में उपरोक्त विपक्षी मीरा देवी को गाली गलौज देते हुए लात घूसा से मारपीट दिया। जिससे मीरा देवी के शरीर पर अंदरूनी चोट आई है। मीरा देवी की शिकायत दर्ज कर पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुट गई है।

मंडल स्तर के लिए चयनित किए गए 15 बाल वैज्ञानिकों के मॉडल पुरस्कृत किए गये उत्कृष्ट मॉडल वाले विद्यार्थी

बच्चों में वैज्ञानिक सोच विकसित होना आवश्यक जिला विकास अधिकारी विज्ञान क्लब द्वारा हुबलाल इंटर कॉलेज भरवारी में लगी विज्ञान प्रदर्शनी

कौशाम्बी। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद उत्तर प्रदेश (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग उत्तर प्रदेश शासन) के दिशा निर्देशन में जिला विज्ञान क्लब कौशांबी द्वारा 30 नवंबर को श्री हुबलाल इंटर कॉलेज भरवारी में जनपद स्तरीय विज्ञान मॉडल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों ने ट्रैफिक सेफ्टी, ड्राइविंग लाइसेंस स्कैनर, वूमेन सेफ्टी डिवाइस, स्मार्ट ब्रिज फॉर रेलवे, मिट्टी कूलर, साल्ट वाटर कार, शू फॉर ब्लाइंड, स्मार्ट कैप आदि वर्किंग मॉडल प्रस्तुत किये। प्रदर्शनी का उद्घाटन नगर पालिका परिषद भरवारी की अध्यक्ष कविता पासी ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से निश्चित ही बच्चों के अंदर वैज्ञानिक जागरूकता उत्पन्न होगी। उन्होंने कहा कि बच्चों द्वारा मॉडलों में स्थानीय समस्याओंएवं विकसित भारत को इंगित किया गया यह बहुत सराहनीय है। कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्य को बताते हुए समन्वयक जिला विज्ञान क्लब कौशांबी वसीम अहमद ने बताया कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा बच्चों में विज्ञान के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने, तार्किक क्षमता, कल्पनाशीलता, उनमें वैज्ञानिक पद्धति के कार्य कलापों एवं वैज्ञानिक व्यक्तित्व विकसित करने के उद्देश्य से कार्यक्रम का अयोजन किया गया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि जिला विकास अधिकारी विजय कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के लिए ऐसे कार्यक्रम बहुत ही उपयोगी है। उन्होंने कहा कि इससे बच्चों में वैज्ञानिक सोच विकसित होगी। उन्होंने कहा कि हमें अपने मित्र कार्य वैज्ञानिक तरीके से करने चाहिए और हमारी सोच वैज्ञानिक होनी चाहिए जनपद स्तर पर गठित तकनीकी मूल्यांकन समिति द्वारा 15 मॉडलों का चयन मंडल स्तर हेतु किया गया। उन्हीं15 चयनित मॉडलों में से प्रथम ,द्वितीय ,तृतीय पुरस्कार के रूप मे क्रमशः रु5000/, रु3000/, रु2000 एवं 2 विद्यार्थियों को सांत्वना पुरस्कार हेतु रु1000/ (प्रत्येक को) साथ ही सम्मान /प्रमाण पत्र, स्मृति चिन्ह एवं निर्धारित नकद धनराशि से सम्मानित किया। अन्य सभी प्रतियोगियों को भी प्रतिभागिता प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। प्रधानाचार्य जीवन लाल चौधरी, विद्यालय के प्रबंधक वीरेंद्र कुमार केसरवानी पूर्व प्रधानाचार्य रशीद अहमद खान पीयूष कुमार, विपिन कुमार, नितिन, डा0 शिवाकांत पाठक, एस0 के0 पाठक आदि शिक्षक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन विज्ञान संचालक आयुष कुमार साहू ने किया।

भट्ठे पर मजदूरी के नाम पर पैसा लेकर रफ्फूचक्कर हुआ लेबर

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के सिरसी गांव का रहने वाला एक युवक भट्ठे पर मजदूरी करने के लिए ठेकेदार से 20 हजार रुपए ले लिया और काम करने गया और चोरी से घर भाग आया। जिसकी शिकायती प्रार्थना चरवा थाना प्रभारी को ठेकेदार सोहनलाल पुत्र स्व० रामसजीवन सरोज निवासी चकमाहपुर पांडेमऊ थाना कोखराज ने देकर बताया कि वह भट्ठे पर मजदूरी के साथ साथ लेबर भर्ती का काम करता है। उसने बताया कि सिरसी गांव का रहने वाला प्रकाश सरोज पुत्र पंछी लाल ने उससे छह माह पूर्व भट्ठे पर झोकाई करने के लिए 20 हजार रूपए नगद पेशगी के रुप में लिया था। उसके बाद दिनाँक 21 नवम्बर को प्रकाश के साथ बदायू जिला शिव भट्ठा झोकई करने के लिए गया था। और दिनांक 26 नवम्बर को प्रकाश बिना बताए चोरी से भट्ठे पर से अपने घर भाग आया। जब सोहन लाल, प्रकाश के घर जाकर, उससे पूछा की चोरी से भट्ठे से क्यो भाग आए हो, तुमको दिक्कत क्या थी। प्रकाश ने बताने से इंकार कर दिया। उसके बाद सोहनलाल ने कहा की आपको भट्ठे पर नही जाना है तो मेरा 20 हजार रुपए मुझे वापस कर दो। प्रकाश ने पैसे वापस करने से माना कर दिया और गाली गलौज देने हुए लड़ाई झगड़ा पर आमादा हो गया। सोहनलाल को जान से मार डालने की धमकी देते हुए कहा की तेरा पैसा अब वापस नहीं करूंगा। सोहनलाल की शिकायत पर चरवा थाना मामले की जांच पड़ताल में जुट गई है।

यातायात जागरूकता कार्यक्रम में यातायात संबन्धी नियमों तथा गुड सेमेरिटन के विषय में बताया

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। यातायात माह नवम्बर 2023 के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी द्वारा थाना मंझनपुर अंतर्गत कस्बा मंझनपुर में यातायात जागरूकता कार्यक्रम में यातायात संबन्धी नियमों तथा गुड सेमेरिटन के विषय में उपस्थित लोगों को विस्तार से बताया गया व यातायात जागरूकता सम्बन्धी पम्पलेट्स वितरित किये गये इस दौरान कार्यक्रम में मौजूद लोगों से यातायात नियमों का पालन करने की अपील की गई यातायात माह का किया गया समापन किया गया पूरे महीने चले यातायात के प्रति लोगों को जागरूक करने के अभियान को अपर पुलिस अधीक्षक ने संबोधित किया और यातायात के सुरक्षा से संबंधित जानकारी दी इस दौरान क्षेत्राधिकारी मंझनपुर, एआरटीओ, यातायात निरीक्षक राकेश कुमार चौरसिया, प्रभारी निरीक्षक थाना मंझनपुर, प्रभारी महिला थाना व अन्य अधिकारी कर्मचारी आम जनमानस

संपादक की कलम से

कम नहीं हुआ है एड्स का खतरा

विश्व एड्स दिवस 1988 से हर साल 1 दिसंबर को मनाया जाता है। इसे मनाए जाने का मुख्य मकसद लोगों को एचआईवी संक्रमण से होने वाली बीमारी एड्स के बारे में जागरूक करना है। 2023 में विश्व एड्स दिवस की थीम एड्स से प्रभावित समुदायों को नेतृत्व करने की भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करना रखी गई है। यह थीम इस बात पर प्रकाश डालती है कि एड्स से प्रभावित लोग अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए अपनी आवाज उठाने और कार्रवाई करने में सक्षम बनें। एड्स से प्रभावित लोगों को स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा और रोजगार के समान अवसरों तक पहुंच होनी चाहिए। ताकि इस थीम का मकसद पूरा हो सके। एड्स नामक इस भयानक बीमारी ने देश की एक बड़ी आबादी को अपने प्रभाव में जकड़ रखा है। यूनिसेफ ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि अब तक 40 .4 मिलियन लोग एड्स के शिकार हुए हैं। इस रिपोर्ट के अनुसार कुछ देशों में नए संक्रमणों के बढ़ते रुझान की रिपोर्ट की जा रही है, जबकि पहले इसमें गिरावट आ रही थी। 2022 में लगभग 6 लाख तीस हजार लोग एचआईवी से संबंधित कारणों से मर गए और 1.3 मिलियन लोगों को एचआईवी हो गया। एड्स का खतरा दुनिया में अभी थमा नहीं है। अभी भी यह दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है।

भारत की बात करें तो भारत एचआईवी/एड्स उन्मूलन की दिशा में लगातार प्रयासरत कर रहा है। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार अफ्रीका के बाद भारत में एड्स के सर्वाधिक रोगी है जिनकी संख्या 23 लाख है। एड्स नामक इस भयानक बीमारी ने देश की एक बड़ी आबादी को अपने प्रभाव में जकड़ रखा है। एचआईवी से संबंधित मामलों को पूर्ण रूप से खत्म किये जाने के प्रयास किये जा रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत ने इस प्रयास में आंशिक सफलता भी पाई है। भारत में में एचआईवी/एड्स से निपटने के लिए सरकार ने राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम (एनएसीपी) की स्थापना की। 2010 के बाद से, जब एनएसीपी ने नए एचआईवी संक्रमण और एड्स से संबंधित मौतों को 80 प्रतिशत तक कम करने का लक्ष्य रखा था, जिसे हासिल कर लिया गया। एड्स से संबंधित मृत्यु दर में 82 प्रतिशत की गिरावट आई है। हालाँकि, नए एचआईवी संक्रमणों की वार्षिक संख्या में केवल 48 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। पिछले एक दशक के आकड़ों पर गौर करें तो पाएंगे की पीड़ितों को मौत के आगोश में सुलाने वाली यह महामारी धीरे ही सही मगर अब पकड़ में आ गई है। विश्व स्तर पर चेतना और जागरूकता के कारण इस पर विजय हासिल की जा सकी। मगर इसका मतलब यह कतई नहीं है कि एड्स हमारे पूरी तरह नियंत्रण में आगया है। भारत अभी भी विश्व के उन पांच देशों में शुमार है जहाँ एड्स का प्रभाव सर्वाधिक है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार 2030 तक एड्स को जड़ मूल से समाप्त कर दिया जायेगा। दुनिया के सबसे घातक बीमारियों में एक है एड्स। इस बीमारी का मुकम्मल इलाज अभी मुमकिन नहीं हो पाया है लेकिन कुछ रिसर्च हो रहे हैं। जिससे आप उम्मीद कर सकते हैं कि भविष्य में इसका एक मुकम्मल इलाज हो।

विश्व एड्स दिवस हर साल 1 दिसम्बर को मनाया जाता है। इस दिन इस वायरस और बीमारी से बचने के लिए कई जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं। लेकिन उसके बावजूद आम लोगों के दिमाग में कई सवाल घूमते रहते हैं। इसी वजह से इस जानलेवा बीमारी को लेकर कई तरह के मिथक बन जाते हैं। हर कोई अपनी जानकारी के हिसाब से दूसरे व्यक्ति को सलाह देता है, लेकिन कौन-सी बात कितनी सच है इसको लेकर लोग काफी कंफ्यूजन रहता है। एड्स हाथ मिलाने, गले लगने, छूने, छींकने से नहीं फैलता. इससे बचने के लिए जरूरी है कि लोग इस बीमारी के प्रति जागरूक हों। अगर एचआईवी पॉजिटिव हो, तो दवा लें, और अपना और अपने साथी का खास ख्याल रखें।

सीरिया को शांति और स्थिरता की आवश्यकता है न कि आयातित संघर्ष की

ईरान सीरिया के राष्ट्रपति बशर अल-असद के सबसे शक्तिशाली समर्थकों में से एक है। इसने पहले सीरियाई विद्रोहियों के खिलाफ डॉ. असद की रक्षा में मदद करने के लिए युद्ध में हस्तक्षेप किया और बाद में जिहादियों के खिलाफ सीरियाई सरकारी बलों की मदद की।

लगभग छह सप्ताह के युद्ध के बाद इजराइल और हमास एक अस्थायी युद्धविराम पर सहमत हुए हैं जो कुछ समय के लिए लड़ाई रोक देगा और बंदियों और कैदियों की अदला-बदली का रास्ता बनाएगा। लेकिन इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने जोर देकर कहा है कि युद्धविराम एक अस्थायी व्यवस्था है और इसके समाप्त होने के बाद युद्ध जारी रहेगा। इसलिए, इस बात की बहुत अधिक संभावना है कि यह संघर्ष सैन्य टकराव के अगले चरण में प्रवेश करेगा और निकटतम पड़ोसी देशों, विशेषकर सीरिया में फैल सकता है। गाजा में संघर्ष शुरू होने के बाद से अमेरिका ने सीरिया में उन स्थानों पर कई दौर के हवाई हमले किए हैं जिनके बारे में उसका कहना है कि वे ईरानी समर्थित मिलिशिया समूहों से जुड़े हुए हैं। अमेरिका का कहना है कि ये ईरान की छद्म सेनाओं द्वारा सीरिया और पड़ोसी इराक में अमेरिकी सेना पर किए गए कई हमलों के प्रतिशोध में हैं। इस बीच, इजराइल ने सीरिया से रॉकेट और मोर्टार हमलों के जवाब में सीरियाई क्षेत्र के अंदर कई हमले किए हैं। इजराइल ने सीरिया के दो मुख्य अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों, दमिश्क और अलेप्पो पर भी हवाई हमले किए हैं, जिससे दोनों कुछ समय के लिए अक्रियाशील हो गए हैं। सीरिया को पहले से ही कुछ हद तक इस संघर्ष में घसीटा जा चुका है। इस बात की बहुत अधिक संभावना है कि गाजा में अपने सहयोगियों की पूर्ण हार की स्थिति में ईरान सीरिया को इजराइल के खिलाफ दूसरे मोर्चे के रूप में इस्तेमाल कर सकता है।

ईरान सीरिया के राष्ट्रपति बशर अल-असद के सबसे शक्तिशाली समर्थकों में से एक है। इसने पहले सीरियाई विद्रोहियों के खिलाफ डॉ. असद की रक्षा में मदद करने के लिए युद्ध में हस्तक्षेप किया और बाद में जिहादियों के खिलाफ सीरियाई सरकारी बलों की मदद की। ईरान ने सीरिया के युद्ध की अराजकता का फायदा उठाकर वहां एक बड़ा सैन्य बुनियादी ढांचा तैयार किया है। इसने हजारों लड़ाकों के साथ बड़े शिया मिलिशिया का निर्माण और प्रशिक्षण किया है और अपने इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स कॉर्प्स (आईआरजीसी) के सलाहकारों को सीरियाई सैन्य ठिकानों पर भेजा है। सीरियाई सरकार की सहायता के नाम पर ईरानियों ने सीरिया को दक्षिणी लेबनान की तरह एक मजबूत मोर्चा बनाने की रणनीति अपनाई। ताकि इजराइल के साथ संघर्ष की स्थिति में इसका इस्तेमाल रक्षा और हमले, दोनों उद्देश्यों के लिए किया जा सके। ईरान ने सहयोगी शिया लड़ाकों को गोलान हाइट्स की ओर तैनात किया है और हिज्बुल्लाह को अधिक सटीक हथियारों की बेहतर आपूर्ति के लिए निर्देशित रॉकेट और रॉकेट उत्पादन को सीरिया में स्थानांतरित कर दिया। ईरान ने वायु रक्षा प्रणालियाँ भी स्थापित की हैं जो इजराइल के काफी अंदर तक मार कर सकती हैं। इसके अलावा, सीरिया में ईरानी प्रभाव पिछले दो वर्षों में ही बढ़ा है क्योंकि रूस, जोकि सीरियाई राष्ट्रपति का अन्य मुख्य सहयोगी, यूक्रेन में अपने युद्ध में व्यस्त है, इसलिए ईरान बहुत प्रमुख स्थान ले रहा है। स्वतंत्र थिंक-टैंक जुसूर फॉर स्टडीज के शोध के अनुसार, 2023 के मध्य तक सीरिया में ईरान के 570 सैन्य अड्डे या प्रतिष्ठान थे।

खालिस्तान समर्थकों की हताशा से उपजी अभद्रता

- ललित गर्ग-

अमेरिका के न्यूयार्क में लांग आइलैंड क्षेत्र में गुरुपर्व के मौके पर गुरुद्वारे में माथा टेकने गए भारतीय राजदूत तरणजीत सिंह संधू से खालिस्तान समर्थकों की धक्का-मुक्की और शर्मनाक व्यवहार न केवल निन्दनीय है बल्कि सिख धर्म की पवित्र, मयार्दामय एवं शांतिप्रिय परम्परा को धुंधलाने का कुत्सित प्रयास है। सिखधर्म के संस्थापक, मानवीय मूल्यों के प्रेरक एवं राष्ट्रीयता के सुदृढ़ आधार महान धर्मगुरु के जन्मोत्सव-गुरुपर्व जैसे पवित्र एवं पावन अवसर पर ऐसी हरकत करने वाले सच्चे सिख कैसे हो सकते हैं? ऐसे खालिस्तान समर्थकों ने आतंकवादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के लिए राजदूत संधू को जिम्मेदार ठहराते हुए उनके विरुद्ध नारेबाजी-धक्कामुक्की करना एवं अपने गुरुद्वारे की चौखट पर माथा टेकने आये इस विशिष्ट अतिथि एवं साधर्मिक पर हत्या की साजिश का आरोप लगाना हर दृष्टिकोण से तीव्र भर्त्सनापूर्ण है। कनाड़ा एवं अमेरिका में बढ़ रही हिन्दू विरोधी घटनाएं के पीछे छिपी दोनों देशों की मंशा एवं नियत की अनदेखी करना भारी भूल होगा क्योंकि इससे भारतीय संदर्भों में नई जटिलताएं खड़ी हो सकती है और इसका असर द्विपक्षीय संबंधों पर भी पड़ेगा।

जिस तरह दुनिया में मुस्लिम आतंकवाद चिन्ता का विषय है, ठीक उसी तरह खालिस्तानी आतंकवाद भी भारत सहित दुनिया के लिये एक बड़ा संकट बन रहा है। अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिये कनाड़ा, अमेरिका, ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया में कुछ खालिस्तान समर्थकों को संरक्षण मिलना, एक चिनगारी को आग बनाने एवं दुनिया में अशांति, हिंसा एवं आतंक के लिये उर्वरा भूमि तैयार करना है। कनाडा में प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो की लोकप्रियता महंगाई और बेरोजगारी तथा लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था के चलते घट चुकी है और वह जैसे-तैसे अपना पद बचाने के लिए जुगाड़ में लगे हैं और इसके लिये खालिस्तान समर्थकों की अलगाववादी गतिविधियों को बल दे रहे हैं या इन गतिविधियों से इतने अनजान हो जाते हैं कि वे चाहे-अनचाहे उनकी राह आसान कर देते हैं। कनाडा में खालिस्तानी तत्व लगातार हिन्दू मंदिरों के बाहर प्रदर्शन कर रहे हैं और गुरपतवंत सिंह पन्नू ने तो यह धमकी भी दी है कि कनाडा से हिन्दुओं को निकाला जाना चाहिए। पन्नू ने हाल ही में एयर इंडिया के विमानों को निशाना बनाने की धमकी दी थी और वह लगातार भारत के विरुद्ध जहर उगल रहा है। प्रधानमंत्री ट्रूडो का इन साजिशों एवं धमकियों को नजरअंदाज करने का कारण उनका खालिस्तान समर्थकों से समझौता होना बताया जाता है। इसी के चलते जस्टिन ट्रूडो एक के बाद एक गलतियां कर रहे हैं, जिसके चलते कनाडा में किसी दूसरे देश की तुलना में ज्यादा ड्रग तस्कर, आतंकी और गैंगस्टर मौजूद हैं। यह वही खालिस्तानी हैं जिन्होंने भारत के कनिष्क विमान को उड़ा दिया था, जिसमें 300 से ज्यादा कनाडाई नागरिक मारे गए थे। वहां खालिस्तान समर्थक अपराधी खुलेआम घूम रहे हैं। क्या कनाड़ा अपनी धरती पर आतंकवाद को पोषण देकर बिन बुलाये एक गंभीर समस्या को नहीं न्यौत रहा है?

कनाड़ा की ही भांति अमेरिका भी खालिस्तानी आतंक को पनपा रहा है। यही कारण है कि अमेरिका ने तो भारत को यहां तक कह दिया था कि वह आतंकवादी निज्जर की हत्या की जांच में कनाडा को सहयोग करेगा। हैरानी इस बात की है कि जिस अमेरिका ने ओसामा बिन लादेन की तलाश में अफगानिस्तान की तेरा बोरा पहाड़ियों की खाक छानी और अंततः पाकिस्तान में घुसकर लादेन को मारा था, जिस अमेरिका ने अफगानिस्तान में छिपे बैठे अल जवाहरी को ड्रोन मिसाइल से मार गिया और जिस अमेरिका ने इराक में घुसकर सद्दाम हुसैन को ढूंढकर फांसी पर चढ़ाया था उसे आतंकी निज्जर की हत्या और पन्नू पर हमले की साजिश की इतनी चिंता क्यों है? जबकि अमेरिका एक तरफ भारत से व्यापारिक और रणनीतिक साझेदारी बढ़ा रहा है। दूसरी तरफ वह खालिस्तानी आतंकवाद के मामले में दोगली चाल चल रहा है। अगर भारत और कनाडा के बीच तनाव बढ़ा तो अमेरिका की कूटनीतिक प्राथमिकताओं के चलते वह कनाड़ा का साथ देगा। इसका कारण कनाडा अमेरिका का सबसे बड़ा कारोबारी साझेदार एवं उनके पारम्परिक रिश्ते हैं।

ट्रूडो ने खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारत की भूमिका को लेकर गंभीर आरोप लगाए हैं, अमेरिका ने ही इस मामले में उन्हें खुफिया जानकारी उपलब्ध कराई थी। अमेरिका ने अपने देश की भूमि पर पन्नू की हत्या की साजिश को न केवल नाकाम किया बल्कि इस साजिश में भारत के शामिल होने का आरोप लगाया है।?इसके बाद अमेरिका की भूमिका को लेकर सवाल उठ खड़े हुए हैं। अमेरिका एवं कनाड़ा की खालिस्तान समर्थकों को लेकर भूमिका संदेह एवं शंकाग्रस्त ही रही है। पिछले कुछ समय से कनाडा, अमेरिका, ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया में कुछ खालिस्तान समर्थकों ने जिस तरह की हरकतें करनी शुरू कर दी हैं, उससे यही लगता है कि भारत में मनमानी करने में मिली हताशा को अब वे दूसरे देशों में अभिव्यक्त कर रहे हैं। लेकिन सरकार देश के साथ विदेश की धरती पर बढ़ रही खालिस्तान समर्थकों की घटनाओं को लेकर सतर्क एवं सावधान है। विशेषतः आतंकवादी पन्नू पर उसकी नजर है, क्योंकि वह अमेरिका में रहकर पंजाब में खालिस्तानी अलगाववादी मुहिम चला रहा है। भारत ने उसे आतंकवादी घोषित कर रखा है और उस पर एक दर्जन से ज्यादा केस दर्ज हैं। वह कथित खालिस्तान की स्थापना को लेकर डींगे हांकता एवं षड़यंत्र रचता रहता है। एक आतंकी इतना प्रभावशाली हो चुका है जो कनाडा में रह रहे भारतीय समुदाय को धर्म के आधार पर विभाजित करने के साथ भारत की एकता और अखण्डता को खंडित करने की कोशिश कर रहा है।

सिख समुदाय के लोग भी शांति चाहते हैं और अपने धर्म की आदर्श परम्पराओं को घूमिल होने से बचाने की कोशिश करते हैं। यही कारण है कि उन्होंने लांग आइलैंड गुरुद्वारे में उत्पाद मचाने की कोशिश करने वाले खालिस्तान समर्थकों को गुरुद्वारे से बाहर निकाल दिया। सिख समुदाय के लोगों ने यह साबित किया कि अवांछित हरकत करने वाले लोगों को सिख-प्रतिनिधि चेहरे के तौर पर नहीं देखा जा सकता। गिनती के कुछ लोग अगर खालिस्तान समर्थन के नाम पर मनमानी करने की उन्मादी कोशिश कर रहे हैं तो वे कामयाब नहीं होंगे। गुरुद्वारे के भीतर ही सिख समुदाय के लोगों ने राजदूत का जोरदार स्वागत करके खालिस्तान समर्थकों के मजसूबों पर पानी फैर दिया। वहां मौजूद राजदूत ने स्पष्ट किया कि भारत सरकार विदेश में बसे भारतीयों और सिख समुदाय के साथ करीबी रिश्ता कभी नहीं टूटने देगा। जाहिर है, अलगाववाद के झांसे में ज्यादातर सिख नहीं आ रहे हैं और उनकी प्राथमिकताओं में भारत की एकता, अमनचैन एवं सिखधर्म की मजबूत मयार्दाएं एवं शालीन परम्पराएं ही है। बावजूद इसके बड़ा सच यह भी है कि अमेरिका और खासतौर पर कनाडा में पिछले कुछ समय से खालिस्तान समर्थक गुटों ने अपने पांव पैलाए हैं और भारत पर दबाव बनाने की कोशिश कर रहे हैं, उसक प्रति लापरवाही भी नहीं बरती जानी चाहिए।

सिख समुदाय के लोगों को भी एकजुट होकर उनके धर्म के नाम पर होने वाली इन अमानवीय, आतंकी एवं हिंसक घटनाओं का विरोध करना चाहिए। क्योंकि सिख धर्म को कालजयी बनाने के लिए गुरु गोविन्द सिंह ने सभी धर्मों और जातियों के लोगों को गुरु-शिष्य-परम्परा में दीक्षित किया एवं राष्ट्रीय एकता के लिये बलिदान की भावनाओं को जगाया। उन्होंने आने वाली शताब्दियों के लिए एक नए मनुष्य का सृजन किया। यह नया मनुष्य जातियों एवं धर्मों में विभक्त न होकर धार्मिकता, मानवीयता, राष्ट्रीय एकता एवं देश के संरक्षण के लिए सदैव कटिबद्ध रहने वाला है। सबको साथ लेकर चलने की यह संरचना, निस्संदेह, सिख मानस की थाती है। फिर, सिख धर्म का परम लक्ष्य मानव-कल्याण ही तो है। इन आदर्श परम्पराओं को धुंधलाने वाले खालिस्तान समर्थक, आतंकी पन्नू और उसकी अलगाववादी सोच को निस्तेज करना ही वक्त ही बड़ी जरूरत है। इसी से कई दशकों से पंजाब में समय-समय पर खडे. किये जा रहे अलगाव, हिंसात्मक-जलजलों एवं निर्दयी विध्वंसों को रोका जा सकता है।

देशवासी भुला नहीं पाएंगे विश्व कप की यह हार

अहमदाबाद में फाइनल मैच से पहले भारतीय टीम सातवें आसमान पर थी। टीम के साथ ही देशवासियों का हौसला भी बढ़ा हुआ था। किसी ने कल्पना नहीं की होगी कि रोहित एंड कंपनी इस तरह हार जाएगी। 50 ओवर के मैच में 300 से कम का स्कोर जोखिम भरा माना जाता है। वनडे विश्व कप की हार से भारतीय खेल प्रेमियों का दिल टूट गया। अब यह मान कर संतोष करना पड़ेगा कि 19 नवम्बर 2023 का दिन भारत का नहीं था। पूरे विश्व कप में अपने शानदार खेल से टीम इंडिया वाहवाही लूट रही थी। लगातार 10 मैच जीत कर हम फाइनल में पहुंचे थे। मगर, अहम मुकाबले में ही किस्मत दगा दे गई। विश्व चैंपियन बनने का इतना सुनहरा मौका अब न जाने कब मिलेगा। अपने घर में और अपने दर्शकों के सामने खेल कर यदि हम नहीं जीत पाए तो कब जीतेंगे? आखिरी पावदान पर आकर अगर फिसल जाते हैं तो इसके लिए हम खुद जिम्मेदार हैं। उस दिन टीम प्रबंधन की कोई रणनीति काम नहीं आई। चेन्नई में अपने पहले लीग मैच में इसी ऑस्ट्रेलिया को भारत ने हराया था। इस हार की टीस कई सालों तक हमें कचोटेगी। इसे भुला पाना आसान नहीं होगा। भारतीय टीम पिछले आठ साल में नौंवी बार आईसीसी के खिताब की दहलीज पर आकर चूक गई। ऑस्ट्रेलिया ने छठवीं बार विश्व कप अपने नाम कर लिया। खेल जगत में रिकॉर्ड बनते हैं और टूटते हैं। विश्व कप-2023 को कई ऐसे रिकॉर्ड के लिए याद रखा जाएगा जिसे तोड़ना नामुमकिन तो नहीं मगर दुष्कर अवश्य कहा जाएगा। वनडे क्रिकेट में विराट कोहली के 50 शतक और अफगानिस्तान के खिलाफ कंगारू टीम के मैक्सवेल की 201 रनों की नाबाद पारी को कोई कैसे भूल सकता है। यह प्रदर्शन किसी चमत्कार से कम नहीं है। यह खेल अब मैदान में ही नहीं बल्कि दिमाग से भी खेला जाता है। विपक्षी टीम के हर दांव की काट के लिए रणनीति बनाई जाती है। मानसिक रूप से मजबूती एक अहम तथ्य है जिस पर सभी टीमें गंभीरता से काम करती हैं। पर, निर्णायक मुकाबले में भारतीय टीम की रणनीति कामयाब नहीं रही। कंगारू हमसे चतुर निकले। टास जीतकर पहले भारत से बल्लेबाजी करवाने का उनका दांव सफल रहा। मैच-दर-मैच जीत हासिल करते हुए हमारी टीम फाइनल में पहुंची। वनडे विश्व कप के इतिहास में टीम इंडिया चौथी बार फाइनल में पहुंची थी। हमारे प्रत्येक खिलाड़ी ने अपनी भूमिका बखूबी निभाई है। बस फाइनल मैच में हमारी टीम रंग में नहीं दिखी। आलराउंडर हार्दिक पांड्या चोटिल होकर प्रतियोगिता से बाहर हो गए लेकिन तनिक भी उनकी कमी महसूस नहीं हुई। वजह, उनकी जगह जब मोहम्मद शमी को मौका मिला तो उन्होंने विपक्षी खेमे में तूफान मचा दिया। पूरा देश शमी पर फिदा हो गया।

अहमदाबाद में फाइनल मैच से पहले भारतीय टीम सातवें आसमान पर थी। टीम के साथ ही देशवासियों का हौसला भी बढ़ा हुआ था। किसी ने कल्पना नहीं की होगी कि रोहित एंड कंपनी इस तरह हार जाएगी। 50 ओवर के मैच में 300 से कम का स्कोर जोखिम भरा माना जाता है। कप्तान रोहित ने शुरूआत तो अच्छी की लेकिन मध्य क्रम उसे भुना नहीं पाया। विराट कोहली या राहुल की साझेदारी भी लंबी नहीं चली। सूर्य यादव का बल्ला पूरे विश्व कप में खामोश रहा। लखनऊ में 29 अक्टूबर को इंग्लैंड के खिलाफ मैच में 49 रन उनका सर्वाधिक स्कोर रहा। कंगारू गेंदबाजी और उनकी फील्डिंग के आगे भारतीय बल्लेबाज असहाय दिखे। रन बनाना पहाड़ हो गया। किसी बैटर को टिक कर लंबी पारी खेलने की जरूरत थी तब 300 से अधिक का लक्ष्य हम दे पाते। मगर, 240 का मामूली स्कोर ही हम दे सके। इससे विपक्षी टीम पर कोई दबाव नहीं बन पाया। लचर बल्लेबाजी के कारण भारत को अहम मैच में पराजय झेलनी पड़ी। अपने घरेलू मैदान पर बड़ा खिताब जीतने का यह अवसर बार-बार नहीं मिलेगा। खिताबी मुकाबले में हारने की भारत की पुरानी आदत भी है।

विराट कोहली और शमी ने किया प्रभावित

कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली के लिए यह आखिरी विश्व कप था। अगले विश्व कप तक इन दोनों की उम्र 40 के पास पहुंच रही होगी। इस आधार पर कह सकते हैं कि ये दोनों शायद अगला विश्व कप नहीं खेल पाएं। 2023 का विश्व कप यादगार नहीं बन सका। मगर, विराट कोहली का जबर्दस्त फॉर्म देख कर भारतीयों को बहुत खुशी हुई। इस विश्व कप में सर्वाधिक 765 रन उन्हीं के बल्ले से निकले। इसमें तीन शतक और छह अर्धशतक हैं। इसके अलावा विराट कोहली वनडे मैचों में 50 शतक बनाने वाले दुनिया के पहले बल्लेबाज भी बन गए। सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड के खिलाफ खेलते हुए उन्होंने सचिन तेंदुलकर के 49 शतकों का रिकॉर्ड तोड़ दिया। विराट आज जिस मुकाम पर हैं वहां तक दूसरों के लिए पहुंचना कठिन है। अभी वह तीन साल तक आराम से खेल सकते हैं। हो सकता है, सचिन तेंदुलकर के कुल 100 शतकों का रिकॉर्ड भी वह तोड़ दें। मोहम्मद शमी को मौका तब मिला जब हार्दिक पांड्या घायल होकर विश्व कप से बाहर हो गए। शमी ने अपनी धारदार गेंदबाजी का शानदार नमूना पेश किया है। 7 मैचों में 24 विकेट लेकर शमी शीर्ष भारतीय गेंदबाज हैं। एक मैच में 5 विकेट लेने का कारनामा उन्होंने 3 बार किया। उनके मुकाबले जसप्रीत बुमराह और सिराज का प्रदर्शन बुझा-बुझा सा रहा। बुमराह ने 11 मैचों में 20 तो सिराज ने इतने ही मैचों में 14 विकेट हासिल किए।

कप्तान रोहित विश्व कप के 48 साल के इतिहास में छक्कों का अर्धशतक लगाने वाले पहले खिलाड़ी बने। वह 27 मैच में 55 छक्के लगा चुके हैं। रोहित इस साल अब तक 67 छक्के लगा चुके हैं। यह एक कैलेंडर वर्ष में छक्कों का रिकॉर्ड है। इसके अलावा वह विश्व कप में लगातार 10 मैच जीतने वाले पहले भारतीय कप्तान भी बन गए हैं। श्रेयस अय्यर अपने दो शतक को याद रखेंगे लेकिन फाइनल में सस्ते में आउट होकर उन्होंने टीम को मझधार में डाल दिया। यही हाल शुभमन गिल का रहा। उनके बल्ले से चार पचासे निकले, मगर फाइनल के मुजरिम वह भी हैं।

फिर चोकर्स साबित हुई दक्षिण अफ्रीकी टीम

दक्षिण अफ्रीका ने इस विश्व कप में शानदार शुरूआत की थी। उसके बल्लेबाजों ने कोहराम मचाया हुआ था। दिल्ली में एक मैच में उनके तीन बल्लेबाजों ने शतक ठोंक दिया। यह टीम सेमीफाइनल में भी पहुंच गई। मगर, कोलकाता के इडेन गार्डन में जब ऑस्ट्रेलिया से सामना हुआ तो अफ्रीकी बैटरों ने घुटने टेक दिए। इस टीम पर चोकर्स का ठप्पा लंबे अर्से से लगा हुआ है। यानी नाकआउट मुकाबलों में यह टीम पस्त हो जाती है। वही बात फिर साबित हो गई। सभी लोग अनुमान लगा रहे थे कि फाइनल में भारत का मुकाबला दक्षिण अफ्रीका से होगा।

पांच राज्यों के चुनाव में सब पर भारी पड़ी है कांग्रेस, परिणाम के बाद देश में बढ़ेगा राहुल गांधी का कद

राजस्थान में सबसे बड़ी आबादी जाट समाज की है जो पारंपरिक रूप से कांग्रेस के समर्थक रहे हैं। इस बार भी जाटों का कांग्रेस से जुड़ाव कांग्रेस के लिए एक नई संजीवनी साबित हो रहा है। हालांकि भाजपा ने सात सांसदों को चुनाव मैदान में उतारा था।

देश के पांव राज्यो के विधानसभा चुनावो में कांग्रेस ने अपनी ताकत का एहसास कराया है। कर्नाटक व हिमाचल प्रदेश विधानसभा के चुनाव में कांग्रेस ने भारी बहुमत से अपनी सरकार बनाकर भाजपा को जबरदस्त पटकनी दी थी। तभी से लगने लगा था कि कांग्रेस धीरे-धीरे अपनी स्थिति सुधार रही है। वहीं केंद्र में सत्तारुढ़ भाजपा का पराभव प्रारंभ हो चुका है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने जब भारत जोड़ो यात्रा प्रारंभ की थी तो किसी को सपने में भी गुमान नहीं था कि उनकी यात्रा को आमजन का इतना जन समर्थन मिलेगा। राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा ने कमजोर होती कांग्रेस में एक नई जान फूंकने का काम किया है।९

पांच राज्यों में चल रहे विधानसभा चुनाव को लोकसभा चुनाव के ट्रेलर के रूप में देखा जा रहा है। इन राज्यों के नतीजे का असर अगले वर्ष होने वाले लोकसभा चुनाव में देखने को मिलेगा। सबसे बड़ी बात 26 विपक्षी दलों द्वारा बनाए गए इंडिया गठबंधन अगले लोकसभा चुनाव में भाजपा को कितनी बड़ी चुनौती दे पाएगा इसका पता भी इन विधानसभा चुनाव के परिणामों से लग जाएगा। राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, मिजोरम में विधानसभा की कुल 679 सीटों के लिए हो रहे चुनाव में कांग्रेस प्राय सभी सीटों पर चुनाव लड़ रही है।

हिंदी भाषी बेल्ट माने जाने वाले राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ में तो कांग्रेस की भाजपा से सीधा मुकाबला है। पिछले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने इन तीनों प्रदेशों में सरकार बनाई थी। मगर भाजपा ने षड़यंत्र पूर्वक मध्य प्रदेश की सरकार को गिरकर शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में अपनी सरकार बना ली थी। अब इन तीनों ही प्रदेशों में एक बार फिर कांग्रेस व भाजपा में सीधा मुकाबला हो रहा है। यहां मतदान हो चुका है। मतदान के प्रारंभिक रुझानों से लगता है कि कांग्रेस मजबूत बनकर उभर रही है।

राजस्थान में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में कांग्रेस ने पिछले दो वर्षों में बहुत सी जनहितकारी योजनायें शुरू की थीं। जिसका असर इन चुनाव में भी देखने को मिला है। चुनाव के दौरान राजस्थान में कांग्रेस ने अपने घोषणा पत्र में प्रदेश की जनता से सात वायदे किए हैं तथा कहा है कि यदि फिर से कांग्रेस की सरकार बनती है तो वह इन वादों को लागू करेगी। यह सभी वायदे आम जन को खासा प्रभावित कर रहे हैं।

राजस्थाना में कांग्रेस ने कमजोर स्थिति वाले बहुत से विधायकों का टिकट काट कर नए लोगों को मौका दिया है। जिससे सरकार के प्रति व्याप्त नाराजगी समाप्त हुई है। राजस्थान विधानसभा चुनाव में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने इस तरह से चुनावी चक्रव्यूह की रचना की थी जिसमें भाजपा के दिग्गज नेता भी उलझ कर रह गए। कई बड़े जाट नेताओं के भाजपा में जाने के बावजूद कांग्रेस पार्टी ने जाट समाज के लोगों को बढ़ चढ़कर टिकट दिया थां जिसके चलते जाट समाज के मतदाता कांग्रेस से ही जुड़े रहे हैं।

प्रदेश में सबसे बड़ी आबादी जाट समाज की है जो पारंपरिक रूप से कांग्रेस के समर्थक रहे हैं। इस बार भी जाटों का कांग्रेस से जुड़ाव कांग्रेस के लिए एक नई संजीवनी साबित हो रहा है। हालांकि भाजपा ने सात सांसदों को चुनाव मैदान में उतारा था। मगर सभी सांसद चुनावी चक्रव्यूह में फंसे हुए नजर आये। उनके चुनाव लड़ने से भाजपा को कोई फायदा होता नजर नहीं आ रहा है। उसके उलट कांग्रेस ने संगठन से जुड़े कई नए लोगों को अवसर देखकर पार्टी कार्यकताओं में एक नए जोश का संचार किया है।

मध्य प्रदेश में कांग्रेस को भाजपा द्वारा करवाए गए दल-बदल का लाभ मिलता नजर आ रहा है। पिछले विधानसभा चुनाव में वहां कमलनाथ के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार बनी थी। मगर सवा साल बाद ही भाजपा ने ज्योतिरादित्य सिंधिया समर्थक विधायकों से दल-बदल करवाकर कमलनाथ सरकार को गिराकर भाजपा की सरकार बना ली थी। भाजपा ने वहां अपनी जोड़-तोड़ से सरकार तो बना ली थी। मगर कांग्रेस से भाजपा में आए सिंधिया समर्थक विधायकों व भाजपा के मूल कार्यकताओं का टकराव कभी समाप्त नहीं हो पाया। यहां तक की टिकट वितरण में भी भाजपा दोनों गुटों को एक जगह करने में असफल रही।

जिले में एक हजार गरीब पुत्रियों का हो रहा विवाहः सांसद

पीएम मोदी ने चलाई हैं तमाम गरीब कल्याण योजनायें, 184 जोडों का हुआ विवाह

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। समाज कल्याण विभाग से संचालित मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत राष्ट्रीय रामायण मेला सीतापुर में 184 जोड़ों का विवाह सम्पन्न हुआ। सांसद आरके सिंह पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव, डिस्ट्रिक्ट कोऑपरेटिव बैंक अध्यक्ष पंकज अग्रवाल, भाजपा जिलाध्यक्ष लवकुश चतुवेर्दी, सीडीओ अमृतपाल कौर, एडीएम वंदिता श्रीवास्तव ने गणेश चित्र पर दीप जलाकर कार्यक्रम शुरू कराया। गुरुवार को सांसद आरके सिंह पटेल ने मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह में वर-वधू को शुभकामनायें देते हुए कहा कि सात फेरों को लेकर नए जीवन की पारी खेलने जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने

शादी का प्रमाण पत्र देते सांसद आदि।

गरीब पुत्री की शादी को ये योजना लागू की है, ताकि गरीब लोग शादी के कर्ज से न जूझें। 51 हजार रुपए खर्च कर गरीब कन्याओं का विवाह जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों ने एक पंडाल में शामिल होकर करा रहे हैं। प्रत्येक वर्ष एक हजार गरीब पुत्रियों का विवाह कराया जा रहा है। संसदीय क्षेत्र में प्रत्येक वर्ष तीन हजार गरीब पुत्रियों की शादी हो रही है। प्रधानमंत्री जब से सत्ता में आए हैं, कई गरीब कल्याण योजनाओं का लाभ दे रहे हैं।

भाजपा जिलाध्यक्ष लवकुश चतुवेर्दी ने कहा कि प्रदेश सरकार की मंशा है कि लोगों की शादी का खर्च कम हो। मुख्यमंत्री ने सामूहिक विवाह योजना लागू कर प्रत्येक जिले में जनकल्याणकारी योजनाओं को लागू किया है।

योजनाओं का लोग लाभ लें। सांसद समेत जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों ने वैवाहिक जोड़ो को जयमाल दौरान पुष्प वर्षाकर शुभकामनायें दी। विवाहित जोड़ों को प्रमाण पत्र व अन्य सामग्री दी गई। गायत्री शक्तिपीठ व्यवस्थापक राम नारायण त्रिपाठी की टीम ने वैदिक मंत्रो से विवाह कराया। एक जोड़ा मुस्लिम समुदाय व सात जोड़ों का बौद्ध समाज से विवाह हुआ। संचालन शिक्षक साकेत बिहारी शुक्ल ने किया। सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के पंजीकृत दल मां भगवती संगीत पार्टी ने संगीत पेश किया। जिला समाज कल्याण अधिकारी ज्ञानेंद्र सिंह भदौरिया ने सांसद समेत जनप्रतिनिधियों के प्रति आभार जताया। दिव्यांगजनों ट्राई साइकिल बांटी गई। विवाह समारोह में ब्लाक प्रमुख पहाड़ी सुशील द्विवेदी, रामनगर प्रमुख गंगाधर मिश्रा, सांसद प्रतिनिधि शक्ति प्रताप सिंह तोमर, भाजपा नेता तीरथ प्रसाद, सुरेश अनुरागी, राजकुमार त्रिपाठी समेत एसडीएम सदर सौरभ यादव, डीसीएनआर एलएन ओमप्रकाश, डीएसओ आनंद कुमार सिंह, ईओ नगर पालिका लालजी यादव, ईओ मानिकपुर भारत सिंह आदि मौजूद रहे।

पराली प्रबंधन को सरकार करे किसानों की मददः संतोष पाण्डेय

किसानों ने प्रदर्शन कर सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भारतीय किसान संघ के जिलाध्यक्ष संतोष कुमार पाण्डेय की अगुवाई में किसानों ने पराली जलाने के विरोध में प्रदर्शन कर किसानों पर हो रही कार्यवाही को लेकर देश के प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री सम्बोधित ज्ञापन कलेक्टेज्ट में एसडीएम को सौंपा। गुरुवार को भारतीय किसान संघ के जिलाध्यक्ष संतोष कुमार पाण्डेय की अगुवाई में किसानों ने सडक में प्रदर्शन करते हुए कलेक्टेज्ट पहुंचे। यहां किसानों ने प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री सम्बोधित ज्ञापन एसडीएम को सौंपते हुए कहा कि पराली प्रबंधन को सुप्रीम कोर्ट की भावनानुसार राज्य सरकारों को किसानों को मल्चर, सुपरसीडर, एमबीप्लाऊ आदि मशीन निःशुल्क देने के निर्देश करे। इन मशीनों के प्रयोग में होने वाले ईंधन, जनशक्ति की श्रमराशि भी किसानों को दी जाये। किसानों की सम्पूर्ण पराली को सरकार न्यूनतम मूल्य निर्धारित करे। विश्व स्तरीय/भारतीय कार्बन क्रेडिट योजना से किसान को भी आक्सीजन उत्पादन को प्रोत्साहित धनराशि दी जाये। जब तक किसानों की पराली प्रबंधन की समुचित व्यवस्था सरकार न करे, तब तक किसानों पर कोई दंडात्मक कार्यवाही न की जाये।

ज्ञापन देते जिलाध्यक्ष व प्रदर्शन करते किसान।

इस मौके पर भारतीय किसान संघ के जिला मंत्री वंशगोपाल मिश्रा, सुनील मिश्रा, देवी प्रसाद, रामसुहावन, अवधेश पाण्डेय, सुरेश पाण्डेय, करन सिंह, रुद्र प्रसाद पाण्डेय, रितेश पाण्डेय, अनूप पाण्डेय, ललित व रामप्रकाश आदि मौजूद रहे।

सजा का दौर जारीः पुलिस को मिली सफलता

दुष्कर्म-पुलिस पर हमला-मारपीट-गैंगेस्टर के आठ लोगों को हुई सजा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले में विभिन्न न्यायालयों से अपराधियों को सजा का दौर जारी है। आज व कल मिलाकर आठ लोगों को विभिन्न मामलों में दोषसिद्ध होने पर सजा दी गई। इसे लेकर पुलिस खासी उत्साहित है।

गुरुवार को न्यायालय में लम्बित मामलों की पैरवी को पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के कडे निर्देश हैं। मऊ थानाध्यक्ष राजेश कुमार द्विवेदी व पैरोकार आनन्द कुमार ने मॉनीटरिंग सेल प्रभारी जय प्रकाश उपाध्याय की पैरवी से न्यायालय विशेष न्यायधीश पॉक्सो/अपर सत्र न्यायाधीश विनीत नारायण पाण्डेय ने पॉक्सो के आरोपी लाली पुत्र वीरन निषाद निवासी शिवपुर को बीस वर्ष की सजा व दस हजार रूपए जुमार्ना से दंडित किया है। ज्ञात है कि तीन अगस्त 2015 को मऊ थाने में पीड़िता के पिता ने लाली के खिलाफ लिखाई रिपोर्ट में कहा कि वादी के नाबालिक पुत्रों के साथ कुकर्म किया है। पुलिस ने मामला दर्जकर लाली की विवेचना दरोगा श्रीमती रीता सिंह ने की। 13 अगस्त 2015 को आरोपी को गिरफ्तार किया। चार सितम्बर 2015 को आरोपी के खिलाफ न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया था। इस मामले में विशेष लोक अभियोजक तेज प्रताप सिंह ने प्रभावी बहस की थी।

इसी क्रम में दुष्कर्म आरोपी राजेश पुत्र जगन यादव निवासी मरजादपुर कोतवाली कर्वी को न्यायालय विशेष अपर सत्र न्यायाधीश/पाक्सो विनीत नारायण पाण्डेय ने दस वर्ष की सजा व 22 हजार रूपए के जुमार्ना से दंडित किया। कर्वी कोतवाल अजीत कुमार पाण्डेय व पैरोकार अमरेन्द्र प्रताप सिंह तथा मॉनीटरिंग सेल प्रभारी जय प्रकाश उपाध्याय की टीम की पैरवी व सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता फौजदारी सुशील सिंह की प्रभावी बहस के चलते ये सजा हुई। बताया गया कि दस जुलाई 2017 को कोतवाली कर्वी में पीडिता ने रिपोर्ट लिखाई कि उसके घर में घुसकर जबरियां दुष्कर्म किया। विरोध पर गाली-गलौज व जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने उचित धाराओं में राजेश पुत्र जगन यादव के खिलाफ मामला दर्जकर निरीक्षक श्रीमती विजयलक्ष्मी को विवेचना सौंपी। 18 अगस्त 2017 को आरोपी के खिलाफ न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया था।

इसी क्रम में विशेष डकैती न्यायाधीश ने पुलिस पार्टी पर फायर करने के आरोपी डकैत भइयन उर्फ खरदूषण उर्फ टाइगर पुत्र हीरालाल निवासी नेउरा थाना मऊ को पांच वर्ष की सजा व पांच हजार रुपये के जुमार्ना से दंडित किया। बहिलपुरवा थानाध्यक्ष राम सिंह व पैरोकार महेश्वरीदीन तथा मॉनीटरिंग सेल प्रभारी जय प्रकाश उपाध्याय की टीम की पैरवी एवं सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता सुशील कुमार सिंह प्रभावी बहस के चलते न्यायालय विशेष न्यायाधीश डकैती कोर्ट/अपर सत्र न्यायधीश नीरज श्रीवास्तव ने ये सजा सुनाई। डकैत भईयन ने 19 अक्टूबर 2015 को गैंग के साथियों समेत पुलिस पार्टी पर जानलेवा फायर किया था। इस मामले की रिपोर्ट बहिलपुरवा थाने में दर्ज हुई थी। विवेचना निरीक्षक धर्मेन्द्र यादव ने कर 26 अप्रैल 2017 को आरोपी को गिरफ्तार किया था। 31 मार्च 2017 को उसके खिलाफ न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया था।

इसी क्रम में गाली-गलौज व जान से मारने की धमकी के आरोपी चन्द्रप्रकाश उर्फ टिकू शर्मा पुत्र प्रीतम शर्मा व प्रीतम शर्मा पुत्र शिवबालक शर्मा निवासी बबेरू जिला बांदा को 1500-1500 रुपए के जुमार्ना से न्यायालय ने दंडित किया। कोतवाली कर्वी के कोतवाल अजीत कुमार पाण्डेय व पैरोकार अबरार की पैरवी तथा अभियोजन अधिकारी बृजमोहन की प्रभावी बहस के चलते न्यायालय मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट सूर्यकान्त धर दुबे ने आरोपियों को सजा सुनाई। वादी उत्कर्ष कुमार ने कोतवाली कर्वी में रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि चन्द्रप्रकाश उर्फ टिकू शर्मा व उसके पिता ने गाली-गलौज कर जान से मारने की धमकी दी थी। पुलिस ने मामला दर्जकर विवेचना दरोगा राकेश कुमार यादव को सौंपी थी। उन्होंने आरोपियों के खिलाफ 19 जनवरी 2021 को न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया था।

इसी क्रम में गैगेस्टर आरोपियों को न्यायालय ने दो-दो वर्ष की सजा व पांच-पांच हजार रुपये के जुमार्ना से दंडित किया। न्यायालय में प्रभारी निरीक्षक मानिकपुर श्रीमती रीता सिंह व पैरोकार वेदान्त पाण्डेय की पैरवी व शासकीय अधिवक्ता सदन मिश्रा प्रभावी बहस के चलते अपर सत्र न्यायाधीश/एफटीसी न्यू चित्रकूट सुशील कुमार वर्मा ने गैंगेस्टर एक्ट के आरोपी छैला पुत्र गौरी पासी व मोनू पुत्र भारत पासी, रिंकू पटेल पुत्र सुरेन्द्र सिंह पटेल निवासी दुबे का तालाब थाना नैनी जिला प्रयागराज को ये सजा सुनाई। 25 मार्च 2009 को मानिकपुर थाने के थानाध्यक्ष बृजभूषण दुबे ने तीनों के खिलाफ गैंगेस्टर एक्ट का मामला दर्ज किया था। निरीक्षक हरिशरण सिंह यादव ने नौ जुलाई 2009 को आरोपी के खिलाफ न्यायालय में

महिला को कपडे देती पुलिस।

बुजुर्ग महिला को थानाध्यक्ष ने दिये गर्म कपड़े

महिला बोली, पुलिस अब कुर्सी में बैठाती है

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। मानिकपुर थाने के बराह कोटरा निवासी मटर्री देवी (60) थाने आई तो थानाध्यक्ष रीता सिंह ने कुर्सी पर बैठाकर कहा किस लिए आई हैं। बुजुर्ग महिला ने कहा कि दरोगा साहब बुलाये है। गुरुवार को थानाध्यक्ष रीता सिंह ने दरोगा को बुलाकर पूंछा कि किस लिए बुलाए हैं, पता चला कि बुजुर्ग महिला की कर्वी कोर्ट में गवाही है। उन्हें इसलिए बुलाया था, ठंड ज्यादा होने पर महिला के फटे कपड़े देखकर थाना प्रभारी ने तुरंत गर्म कपड़े मंगवाये। उन्हें खाना खिलाकर बुजुर्ग महिला को थाने की गाड़ी से बस स्टैंड भिजवाया। बुजुर्ग महिला कपड़ा व सम्मान पाकर प्रसन्न हुई। पुलिस की गाड़ी में बैठकर महिला ने कहा कि जब डकैत थे, तब पुलिस देखकर जंगलों में भाग जाते थे, अब अच्छा लगता है पुलिस कुर्सी में बैठाती है।

छात्रों को जागरूक करते अधिकारीगण।

यातायात माह समाप्त, सीडीओ-एएसपी ने बच्चों को किया जागरूक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। यातायात माह समापन पर संत थॉमस सीनियर सेकेंडरी स्कूल खुटहा में सीडीओ अमृतपाल कौर की अध्यक्षता में एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी, सीओ यातायात राज कमल, पीटीओ सन्तोष तिवारी की मौजूदगी में यातायात जागरुकता गोष्ठी हुई।

गुरुवार को सीडीओ व एएसपी ने दीप जलाकर कार्यक्रम शुरू किया। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने ओवर स्पीड एवं शराब पीकर वाहन चलाने विषयों पर नुक्कड़ नाटक पेश किया। सीडीओ व एएसपी तथा सीओ यातायात ने छात्र-छात्राओं से कहा कि सभी लोग यातायात नियमों का पालन करें। छात्रों को बताया कि समाज के सूत्रधार हैं। घर में जाकर परिजनों व रिश्तेदारों को यातायात नियमों के पालन करने को जागरुक करें। चारपहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट व दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट अवश्य लगायें।

टीएसआई शैलेन्द्र सिंह, टीएसआई धर्मेश त्रिपाठी, स्कूल के प्राचार्य डेनिस मस्करहेन्स (फादर), उप प्राचार्य सीजी जोसेफ, शिक्षक स्टाफ, यातायात पुलिस के कर्मचारी मौजूद रहे। संचालन पायनिर्यस क्लब अध्यक्ष केशव शिवहरे ने किया।

उप्र के लोगों को भी दें 450 में सिलेंडरः कुशल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर जिलाध्यक्ष कुशल सिंह पटेल एड की अगुवाई में राज्यपाल संबोधित ज्ञापन उप जिलाधिकारी को सौंपा।

गुरुवार को कांग्रेस जिलाध्यक्ष कुशल सिंह पटेल ने कहा कि जिन राज्यों में चुनाव हो रहे हैं, वहां भाजपा रसोई गैस सिलेंडर 450 रुपए में देने का वायदा व घोषणा कर रही है। लोगों को झूंठे भरोसे देकर सरकार बनाने की मंशा पाले है। रसोई गैस सिलेंडर 450 रुपए में मिलेगा तो उप्र व देश में भाजपा की सरकार है, उप्र में डबल इंजन की सरकार होते हुए भी यहां के लोगों को सिलेंडर एक हजार रुपये

ज्ञापन सौंपते कांग्रेसी।

में मिल रहा है। उन्होंने सवाल उठाया कि उप्र की जनता को क्यों ठगा जा रहा है। भाजपा की घोषणायें उप्र सरकार में क्यों नहीं लागू हो रही। साफ तौर पर जाहिर है कि भाजपा कहती कुछ है, करती कुछ है। सूबे के मुखिया का वायदा था कि सरकार बनने पर सभी सड़के गड्ढा मुक्त होंगी। आज भी प्रदेश में अधिकतर सड़के गड्ढों में तब्दील हैं। ज्ञापन में राज्यपाल से अनुरोध किया कि यूपी में गैस सिलेंडर 450 में दिया जाये। प्रदेश कांग्रेस कमेटी सदस्य रंजना बराती लाल पांडे ने कहा कि क्या प्रदेश के लोगों ने देश-प्रदेश में डबल इंजन सरकार को नहीं चुना। थोड़ी सी भी नैतिकता है तो उत्तर प्रदेश के लोगों को 450 रुपए में सिलेंडर दिया जाये। किसान सवेरे से शाम तक लाइन में खड़े होकर खाद लेने को मजबूर है। खाद की परेशान से किसानों को निजात दिलायें। नौजवान रोजगार को परेशान हैं। डबल इंजन सरकार हर मोर्चे पर फेल है। इस मौके पर अवधेश करवरिया, विजयमणि त्रिपाठी, पवन रजक, शिव गुलाम वर्मा, राज नारायण निषाद, आशीष मिश्रा, अतुल तिवारी, चुनवाद प्रसाद प्रजापति, मानवेंद्र पटेल, मेहंदी हसन, हरिओम पांडे आदि मौजूद रहे।

शराब अधिनियम के आरोपी को जेल में बिताई की सजा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सूबे के पुलिस महानिदेशक के निर्देश पर जारी ऑपरेशन कन्विक्शन के तहत न्यायालय में लम्बित वादों में पैरवी कर अपराधियों को सजा दिलाने को पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर प्रभारी निरीक्षक पहाड़ी श्याम प्रताप पटेल व पैरोकार मनीष कुमार की पैरवी से आबकारी अधिनियम के आरोपी को जेल में बिताई अवधि व पांच सौ रुपये जुमार्ना से दंडित किया।

गुरुवार को अभियोजन अधिकारी पीयूष कुमार यादव की प्रभावी बहस के चलते सिविल जज जूनियर डिवीजन सुश्री विदुषी मेहा ने थाना पहाड़ी में दर्ज आबकारी अधिनियम के आरोपी बालगिरी पुत्र इन्द्रपाल निवासी पिपरोदर को जेल में बिताई अवधि तथा पांच सौ रूपए के जुमार्ना से दंडित किया। ज्ञात है कि 27 अक्टूबर 2007 को पहाड़ी थाने में तैनात दरोगा मोहम्मद मुस्तिम की टीम ने बालगिरी को महुआ शराब बनाने व उपकरणों समेत गिरफ्तार किया था। थाने में मामला दर्जकर विवेचना दरोगा देशराज सिंह ने कर आरोपी के खिलाफ 20 जनवरी 2009 को न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया था।

विधायक ने सदन में उठाये सवालः बनायें महाविद्यालय

बरुआ बांध में बनायें लिंक नहर

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सदर विधायक अनिल प्रधान ने शीतकालीन सत्र के तीसरे दिन नियम 56 के तहत जिले के मऊ ब व कौंहारी-साईंपुर गांव के बीच एवं सरधुवा क्षेत्र में राजकीय महाविद्यालय खोलने की मांग पर सदन का ध्यान आकृष्ट कराया।

गुरुवार को सदर विधायक अनिल प्रधान ने कहा कि इन क्षेत्रों में तमाम ग्राम पंचायतों के बच्चों को शिक्षा से महाविद्यालय की स्थापना से लाभान्वित कराया जा

सदर विधायक अनिल प्रधान।

सकता है। क्षेत्र में छात्राओं को उच्च शिक्षा को दूर जाना पडता है। नियम 51 के तहत विधायक ने सदन का ध्यान रसिन बांध से बरुआ बांध तक लिंक नहर के निर्माण की ओर आकृष्ट कराया। कहा कि लिंक नहर बनने से बरुआ बांध से जुडे सैकडों गांवों की हजारों बीघा जमीन सिंचित हो सकती है। किसानों को समय से पानी मिल सकता है। नियम 301 के तहत ओरा नहर में कोठी बनाने की मांग की। इस नहर में कोठी न होने से किसानों की रबी एवं खरीफ फसलें सूख जाती हैं। समय से पानी देने को नहर में कोठी का निर्माण जनहित में जरूरी है। छात्रों की शुल्क प्रतिपूर्ति बाबत सरकार से जवाब मांगा। सरकार ने कहा कि प्रदेश एवं प्रदेश से बाहर पढने वाले सामान्य व अनुसूचित जाति के छात्रों को शुल्क प्रतिपूर्ति की जा रही है। विधायक ने नाराजगी जताते हुए कहा कि प्रदेश सरकार अन्य पिछडे वर्ग के छात्र-छात्राओं के साथ अन्याय कर रही है। ऐसा नियम बनायें कि किसी भी शिक्षार्थी के साथ भेदभाव न हो। सभी को समान रुप से शुल्क प्रतिपूर्ति का लाभ दिया जाये। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सपा सरकार में अखिलेश यादव के बनाये ग्रामीण अवस्थापना केन्द्रों को सुचारु ढंग से चलाया जाये। बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस-वे के विस्तारीकरण के जवाब में सरकार ने बताया कि एक्सप्रेस-वे को गोंडा गांव के जीरो से शुरू होकर रानीपुर खाकी गांव के पास से राष्ट्रीय राजमार्ग 135 के निकट अहमदगंज तक विस्तारित करना प्रस्तावित है।

चोर को दबोच बरामद किये 3200 रुपये

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अपराधों की रोकथाम को जारी अभियान में एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी व सीओ सिटी हर्ष पाण्डेय की देखरेख में चैकी प्रभारी जिला कारागार रगौली राजीव कुमार सिंह ने चोरी की घटना का खुलासा कर एक चोर को चोरी के 3200 रुपये समेत गिरफ्तार किया।

ज्ञात है कि 29 सितम्बर 2023 को जन्मेजय सिंह पुत्र ऊदल सिंह निवासी कसहाई रोड तुलसी नगर कोतवाली कर्वी ने सूचना दी थी कि उनके भाई के घर से नगदी व जेवरात अज्ञात चोर चुरा ले गये

पुलिस गिरफ्त में चोर।

हैं। पुलिस ने मामला दर्जकर कर्वी कोतवाल ने विवचेना चैकी प्रभारी जिला कारागार रगौली को सौंपी। चैकी प्रभारी ने शुभम त्रिपाठी उर्फ शीबू पुत्र बाबूलाल निवासी शंकर बाजार बनकट रोड को चोरी के 3200 रुपये समेत गिरफ्तार किया। माल बरामद कर मामला बढाया। टीम में चैकी प्रभारी राजीव कुमार सिंह व सिपाही संजय पाल शामिल रहे।

मराठा कालीन धरोहर को मिट्टी में मिला रहे योगी के नुमाइन्दे

योगी के अयोध्या की तर्ज पर चित्रकूट को पर्यटन हब बनाने का सपना हुआ ख्वाब

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने चित्रकूट को अयोध्या की तर्ज पर पर्यटन हब बनाने की गरज से श्री चित्रकूटधाम तीर्थ विकास परिषद का गठन किया है। योगी सरकार के नुमाइन्दे ऐतिहासिक मराठा कालीन धरोहरों को मिट्टी में मिलाने में तुले हैं। सभी नियम- कानून ताक में रखकर चित्रकूट के गौरवशाली इतिहास को नष्ट कर रहे हैं। गुरुवार को योगी-मोदी के विरासत को सहेजने की बजाय योगी के नुमाइन्दे मराठा कालीन ऐतिहासिक किले को ध्वस्त कर रहे हैं। मराठा कालीन किला नजूल भूमि गाटा संख्या 610 में

मराठा कालीन इमारत में चल रहा बुलडोजर।

बना है। इस इमारत का विनाश बिना किसी सक्षम अधिकारी के ध्वस्त करना बेहद शर्मनाक है। नजूल भूमि को फ्रीहोल्ड कराये बिना किस हैसियत से नगर पालिका गिरा रहा है, ये बात लोगों की समझ से परे है। बिना कोई ठोस कार्य योजना के ऐतिहासिक इमारत को जमीदोज करने के जिम्मेदारों के पास कोई जवाब नहीं है। जिम्मेदारों की खामोशी सरगोशी करती है- बडे घोटाले की गंध आ रही है।

इसे लेकर शहर के वाशिंदों के चेहरों पर कुछ-कुछ खीझ व मिश्रित गुस्सा है। सत्ता पक्ष के भय के चलते लोग सहमे हैं। योगी सरकार के चित्रकूट को पर्यटन हब बनाने के सपने कहीं ख्वाब बनकर न रह जायें, योगी के विरोधी मानसिकता के लोग गुलामी के चिन्हों को मिटाने की बजाय क्रान्तिकारियों के ठिकाने को ही मिटाने में तुल गये हैं। ऐसे में मेरी माटी-मेरा देश के तहत जगह-जगह आवाहन करने वाले लोग अब नजर नहीं आ रहे। अब ये अपनी माटी को भूलने का शर्मनाक स्वांग करते दिख रहे हैं। नजूल भूमि पर बनी मराठा कालीन इमारत में कोई भी कार्य करने का किसी को अधिकार नहीं है, जो भी अधिकार हैं, वे शासन से अनुमति लेकर ही किये जा सकते हैं। ऐसे में मराठा कालीन इतिहास को नष्ट करने वालों पर क्या योगी सरकार की नजरें टेढी होंगी?

मराठा कालीन इमारत को जमीदोज करना शर्मनाकः सुशील

सुशील नेता।

चित्रकूट। नगर पालिका के पूर्व वार्ड मेम्बर सुशील नेता ने कहा कि नगर पालिका के ईमानदार जनप्रतिनिधि व ईओ लालजी यादव ने शार्टकट धन कमाने की जुगत भिडाई है। शासन के नियम-कानून को ताक में रखकर चित्रकूट का गौरवशाली अस्तित्व मिटाने की व्यवस्था की है। नजूल भूमि को फ्रीहोल्ड कराये बिना ईद की गिफ्ट लेने को मन में लड्डू फूट रहे हैं। भाजपा में ऐसा होना, कोई ताज्जुब नहीं है। पुरानी कोतवाली को खाली कराना सराहनीय कार्य था, लेकिन इसे जमीदोज करना उससे ज्यादा शर्मनाक है। शासन की अनुमति बिना ये कैसे सम्भव हुआ? इस खेल में और भी खेल छिपे हैं- नजूल भूमि पर मार्केट बनाकर जमकर खेल होगा। ऐसे में योगी सरकार के श्री चित्रकूटधाम तीर्थ विकास परिषद के गठन का क्या औचित्य है।

भाजपा सरकार चित्रकूट का गौरवशाली इतिहास कर रही नष्टः अनुज

अनुज यादव।

चित्रकूट। सपा प्रदेश कार्य कार्यकारिणी सदस्य/पूर्व जिलाध्यक्ष सपा अनुज सिंह यादव ने सीधेतौर पर सरकार को आडे हाथों लेते हुए कहा कि ये सरकार चित्रकूट के गौरवशाली इतिहास को मिटा रही है। बेशकीमती ऐतिहासिक मराठा कालीन धरोहर को नष्ट कर रही है। इस धरोहर को संरक्षित करने की बजाय मिट्टी में मिला रही है। चेताया कि गौरवशाली इतिहास को नष्ट नहीं होने देंगे। सपा प्रदेश स्तरीय आन्दोलन करेगी।

चीन में कोयला खदान में विस्फोट से 11 लोगों की मौत

बीजिंग

चीन के पूर्वोत्तर हिलोंगजियांग प्रांत में मंगलवार को कोयले की एक खदान में जबरदस्त विस्फोट होने से 11 लोगों की मौत हो गयी। चीन के सरकारी प्रसारक सीसीटीवी ने इसकी पुष्टि की है।

रिपोर्ट के अनुसार खदान में जबरदस्त धमाका हुआ, जिसमें लोगों की जान चली गयी। स्थानीय मीडिया की खबरों के अनुसार, इस खदान का संचालन करने वाली शुयांगयाशान कोल कंपनी पर अतीत में कई सुरक्षा नियमों का उल्लंघन करने को लेकर जुमार्ना लगाया जा चुका है। सरकार समर्थित मीडिया कंपनी शांगयू न्यूज के अनुसार, इस साल भी उसपर दस बार जुमार्ना लगाया गया। चीन बार-बार होने वाले इन हादसों को रोकने के लिए खदान सुरक्षा में सुधार के लिए लगातार काम कर रहा है। अगस्त में चीन के शांक्सी प्रांत में एक अन्य कोयला खदान में विस्फोट में 11 लोगों की मौत हो गयी थी। सितंबर में गुइझोउ प्रांत में कोयला खदान में आग लग जाने से 16 लोगों की जान चली गयी थी।

नेपाल में पंजीकृत हुआ पहला समलैंगिक विवाह

काठमांडू। नेपाल के पश्चिमी लमजंग जिले में देश के पहले समलैंगिक विवाह का पंजीकरण किया गया है और इसे देश में लेस्बियन-गे-बाईसेक्शुअल-ट्रांसजेंडर (एलजीबीटी) समुदाय के अधिकारों की विजय के रूप में देखा जा रहा है।

पश्चिमी लमजंग जिले में औपचारिक रूप से माया गुरुंग (35) और सुरेंद्र पाण्डेय (27) के विवाह को बुधवार को पंजीकृत किया गया। देश के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा समलैंगिक जोड़ों के विवाह के पंजीकरण के संबंध में पांच महीने पहले दिये गये अंतरिम आदेश के बाद यह पंजीकरण किया गया है। एशिया में अभी तक ताईवान ही एकमात्र देश था जहां समलैंगिक विवाह को मंजूरी मिली हुई है।

विवाह के पंजीकरण के बाद श्रीमती गुरुंग ने बीबीसी से कहा ह्न आज का दिन केवल हमारे लिए ही नहीं बल्कि सभी लैंगिक अल्पसंख्यक समुदायों के लिए बहुत बड़ा दिन है। अपने अधिकारों की यह लड़ाई बिल्कुल भी आसान नहीं रही है लेकिन आखिरकार हमें जीत हासिल हुई । अब आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए राह आसान होगी। हमारे विवाह के पंजीकरण ने हमारे लिए बहुत सी सुविधाओं के दरवाजे खोल दिये हैं।

दंपती ने कहा कि वे एक संयुक्त खाता खोलना चाहते हैं और उनके द्वारा खरीदी गयी जमीन का सम्मिलित स्वामित्व भी लेना चाहते हैं लेकिन जैसे ही उनकी आर्थिक स्थिति कुछ और मजबूत होती है तो उनका सबसे बड़ा सपना एक बच्चे को गोद लेना है।

यह जोड़ा लगभग एक दशक से साथ है । इन दोनों ने एक मंदिर में 2017 में शादी कर ली थी और इस साल उनके साथ को कानूनी मंजूरी भी मिल गयी। श्रीमती गुरुंग एक ट्रांसजेंडर महिला हैं जिन्होंने आधिकारिक तौर पर अपना लिंग परिवर्तन नहीं किया है। श्री पाण्डेय का जन्म पुरूष के रूप में हुआ।

सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बावजूद इस मामले में नेपाल की राजधानी काठमांडू के जिला न्यायालय ने इन दोनों के विवाह के पंजीकरण करने की इजाजत नहीं दी थी जबकि सर्वोच्च न्यायालय ने अपने आदेश में सरकार को ऐसे मामलों में कानून के तहत जरूरी बदलाव किये जाने के दिशा निर्देश दिये थे

जिला अदालत ने तर्क दिया था कि निचली अदालतें आदेश का पालन करने के लिए बाध्य नहीं थीं क्योंकि यह केवल सरकार पर निर्देशित था लेकिन बुधवार को, डोरडी ग्रामीण नगर पालिका के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी हेम राज काफले ने रॉयटर्स को बताया ह्न हमने सुप्रीम कोर्ट के आदेश और संबंधित सरकारी अधिकारियों के निदेर्शों पर विचार करते हुए जोड़े को विवाह पंजीकरण प्रमाण पत्र जारी किया है।

प्रमुख एलजीबीटी अधिकार कार्यकर्ता सुनील बाबू पंत ने इस ह्यऐतिहासिकह्न क्षण को यौन और लैंगिक अल्पसंख्यकों की जीत बताया। उन्होंने कहा, ह्न अब हम अपनी शादी को आम जोड़ों की तरह पंजीकृत करा सकते हैं लेकिन अन्य अधिकार पाने के लिए हमें अभी और भी बहुत कुछ करना होगा।ह्न

ओहियो में एक गैराज में धमाके के बाद लगी आग, तीन की मौत

हिल्सबोरो। ओहियो में एक गैराज में धमाके के बाद लगी भीषण आग में तीन लोगों की मौत हो गई और एक घायल हो गया। घायल को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हिल्सबोरो, ओहियो में जिम्बो ऑटो रिपेयर नाम के गैराज में मंगलवार दोपहर धमाके बाद आग लग गई थी। इस धमाके का प्रभाव पेंट क्रीक जॉइंट ईएमएस सहित आसपास के कई इलाकों तक महसूस किया गया। आग लगने के बाद उठे धुएं के गुबार को कई किलोमीटर दूर देखा गया था। मॉन्टगोमरी काउंटी कोरोनर के कार्यालय की ओर से फिलहाल मृतकों की संख्या के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है। अस्पताल में भर्ती घायल व्यक्ति की हालत स्थिर बनी हुई है। आग लगने के कई घंटे बाद आधी रात तक आग की लपटें उठती रहीं। आग पर काबू पाने के लिए दमकल के कर्मचारियों को काफी मशक्कत करनी पड़ी।

मोदी-प्रचण्ड की दुबई में हो सकती है अनौपचारिक मुलाकात

काठमांडू,

जलवायु परिवर्तन संबंधी संयुक्त राष्ट्र के 28वें सम्मेलन (सीओपी-28) में सहभागी होने के लिए नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल प्रचण्ड बुधवार की देर रात दुबई के लिए रवाना हुए।

इस सम्मेलन में प्रधानमंत्री प्रचण्ड का सम्बोधन शनिवार को होने वाला है। प्रधानमंत्री की स्वकीय सचिव गंगा दाहाल ने बताया कि इस सम्मेलन के संबोधन से पहले प्रधानमंत्री नेपाल यूएई बिजनेस समिट को भी सम्बोधित करने वाले हैं। साथ ही उनकी यूएई की बिजनेस कम्यूनिटी और वहां रहने वाले नेपाली कम्यूनिटी से भी मुलाकात होने वाली है। सीओपी-28 सम्मेलन में सहभागी होने आने वाले कुछ देशों के राष्ट्राध्यक्ष और प्रधानमंत्री सहित अन्य विशिष्ट व्यक्तित्वों से भी मुलाकात का समय तय किया गया है। प्रधानमंत्री सचिवालय की तरफ से बताया गया है कि चार दिनों के दुबई भ्रमण के दौरान प्रधानमंत्री प्रचण्ड की भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से साइडलाइन मुलाकात होने की भी संभावना है।

चीन के बाद दूसरे देशों में भी फैली निमोनिया महामारी

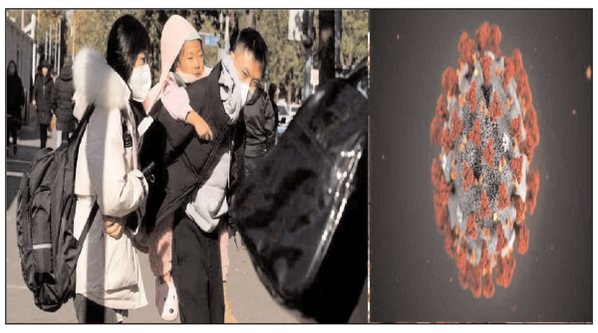

नई दिल्ली। चीन के बाद डेनमार्क और नीदरलैंड बच्चों में निमोनिया के प्रकोप की रिपोर्ट करने वाले नए देशों में शामिल हो गए हैं।

एक संक्रामक रोग समाचार ब्लॉग, एवियन फ़्लू डायरी पर एक पोस्ट से पता चला है कि माइकोप्लाज्मा निमोनिया संक्रमण महामारी स्तर तक पहुंच गया है। इसमें वृद्धि गर्मियों में शुरू हुई लेकिन पिछले पांच सप्ताह में काफी बढ़ गई है।

डेनमार्क के स्टेटेंस सीरम इंस्टीट्यूट के अनुसार, "यह संख्या अब इतनी अधिक है कि यह एक महामारी है।"

स्टेटेंस सीरम इंस्टीट्यूट की वरिष्ठ शोधकर्ता हेने-डोर्थे एम्बॉर्ग ने कहा, "पिछले पांच सप्ताह में नए मामलों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है, और अब हम सामान्य से काफी अधिक मामले देख रहे हैं, और पूरे देश में व्यापक संक्रमण है।"

सप्ताह 47 में, माइकोप्लाज्मा निमोनिया संक्रमण के 541 नए मामले सामने आए, जो कि सप्ताह 42 से तीन गुना से अधिक है, जब पाए गए मामलों की संख्या 168 थी।

मामलों की वास्तविक संख्या संभवतः बहुत अधिक है, क्योंकि हल्के लक्षणों वाले हर व्यक्ति का परीक्षण नहीं किया जाता है।

हालाँकि, एम्बॉर्ग ने कहा कि ये मामले डेनमार्क के लिए "असामान्य नहीं" हैं, जो ऐतिहासिक रूप से लगभग हर चार साल में माइकोप्लाज्मा निमोनिया संक्रमण की राष्ट्रव्यापी महामारी का सामना करता है।

उन्होंने कहा कि यह घटना आम तौर पर शरद ऋतु और शुरूआती सर्दियों में सबसे अधिक होती है।

एम्बॉर्ग ने कहा, "पिछले चार वर्षों से, माइकोप्लाज्मा संक्रमणों की संख्या बेहद कम रही है, और इसलिए यह असामान्य नहीं है कि हमारे समक्ष अब एक महामारी है। कोविड-19 महामारी के बाद देश में लॉकडाउन लगाने के बाद हम वास्तव में इसका इंतजार कर रहे थे।"

यह रोग अक्सर हल्के फ्लू जैसे लक्षणों के साथ थकान, सिरदर्द, गले में खराश और लंबे समय तक सूखी खांसी, विशेष रूप से रात में होने वाली खांसी के रूप में आता है।

विशाल बहुमत को बुखार है, लेकिन अक्सर इन्फ्लूएंजा और अन्य क्लासिक निमोनिया जितना तेज बुखार नहीं होता है।

पोस्ट में कहा गया है कि इसने इसे 'कोल्ड निमोनिया' या 'एटिपिकल निमोनिया' उपनाम दिया है, क्योंकि नियमित पेनिसिलिन का भी संक्रमण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

संक्रामक रोग समाचार संदेश बोर्ड फ़्लूट्रैकर्स पर एक सरकारी निगरानी रिपोर्ट के अनुसार, पिछले सप्ताह नीदरलैंड ने अगस्त के बाद से बच्चों और युवाओं में निमोनिया के मामलों में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की।

अमेरिका के पूर्व विदेश मंत्री हेनरी किसिंजर का सौ साल की उम्र में निधन, विवादों से रहा गहरा नाता

वाशिंगटन

अमेरिका के विदेश मंत्री और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जैसे अहम पदों पर काम कर चुके हेनरी किसिंजर का बुधवार को कनेक्टिकट स्थित आवास पर 100 साल की उम्र में निधन हो गया। उन्हें राजनेता व सफल राजनयिक के तौर पर जाना जाता है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मामलों पर कई किताबें लिखीं।

जर्मनी में पैदा हुए किसिंजर, यहूदियों के खिलाफ नाजी अभियान से पूर्व परिवार सहित अमेरिका आ गए थे। आगे चलकर 1943 में अमेरिकी नागरिक बने और कई अहम वैश्विक घटनाक्रमों में अमेरिकी गतिविधि का प्रमुख हिस्सा रहे। वियतनाम के साथ शांति समझौते में हेनरी ने सक्रिय भूमिका निभाई थी।

हालांकि वे कई बड़े विवादों में भी रहे जिसमें 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान उनपर आरोप था कि उन्होंने बांग्लादेश के लोगों के नरसंहार में पाकिस्तान का साथ दिया था। उन्होंने इराक पर अमेरिका के हमले में जॉर्ज बुश सरकार का समर्थन किया था। चीन के साथ अमेरिकी संबंधों के हिमायती किसिंजर को चीन के साथ अमेरिका की कूटनीतिक वार्ता की शुरूआत का श्रेय दिया जाता है। किसिंजर को 1973 में शांति का नोबेल पुरस्कार देने की पेशकश हुई, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया। नोबेल पुरस्कार चयन के लिए यह सबसे विवादास्पद घटनाक्रम माना जाता है।

इजराइल-हमास के बीच युद्धविराम 24 घंटे के लिए बढ़ा

तेल अवीव

इजराइल और हमास के बीच जारी युद्ध विराम एक और दिन के लिए बढ़ा दिया गया है। दोनों पक्ष युद्धविराम को 24 घंटे और बढ़ाने पर सहमत हुए हैं। बताया जाता है कि हमास की तरफ से 10 बंधकों की लिस्ट इजराइल को सौंपी गई है।

हमास की तरफ से कहा गया है कि इजराइल के साथ युद्ध विराम एक दिन के बढ़ गया है और ये सातवें दिन भी लागू रहेगा। इजराइल और हमास पिछले बुधवार को चार दिनों के युद्धविराम पर सहमत हुए थे और बीते शुक्रवार से यह समझौता लागू हुआ। इस दौरान हमास की तरफ से 58 बंधकों को रिहा किया गया जिसमें 40 इजराइली और 17 थाई नागरिक थे। इसके बाद युद्धविराम को दो और दिनों का विस्तार दिया गया जिसमें 28 नवंबर को 10 इजराइली व दो थाई नागरिकों की रिहाई हुई। 29 नवंबर को 10 इजराइली व 4 थाई नागरिकों की रिहाई हुई।

इस दौरान इजराइल की तरफ से तय फिलिस्तीनी कैदियों को अपनी जेलों से रिहा किया जा रहा है।

इस युद्ध विराम का दुनिया भर के देशों ने स्वागत किया है। इस दौरान युद्ध विराम पूरी तरह लागू है। मदद और दवाओं से भरे ट्रक गाजा में प्रवेश कर रहे हैं।

इराक में 170 शरणार्थी शिविरों में से 144 बंद

बगदाद। इराकी सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में देश भर में चल रहे 170 में से 144 शरणार्थी शिविरों को बंद करने की घोषणा की है।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ ने उप मंत्री करीम अल-नूरी के मीडिया से हवाले से कहा, "170 में से केवल 26 शिविर बचे हैं और शेष अधिकांश शिविर कुर्दिस्तान के अर्ध-स्वायत्त क्षेत्र में हैं।"

समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, उन्होंने जोर देकर कहा कि इन शिविरों में अधिकांश विस्थापित लोग उत्तरी प्रांत निनेवेह की राजधानी मोसुल से लगभग 120 किमी पश्चिम में सिंजर शहर के निवासी हैं।

सिंजर में क्षेत्र पर प्रशासनिक नियंत्रण हासिल करने के सरकार के प्रयासों के बावजूद कई सशस्त्र समूह शहर पर नियंत्रण करने के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

उन्होंने कहा, "प्रवास एवं विस्थापित मंत्रालय कठिन चुनौतियों के बावजूद इस संकट को समाप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है, ताकि इराक को शरणार्थी शिविरों से छुटकारा मिल सके।"

संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी एजेंसी के अनुसार, इराक लगभग 300,000 शरणार्थियों और शरण चाहने वालों की मेजबानी करता है, जिनमें से 90 प्रतिशत से अधिक इराक के कुर्दिस्तान क्षेत्र में रहते हैं।

ईरान, तुर्की, फि?लिस्तीन और अन्य देशों के शरणार्थियों और शरण चाहने वालों के अलावा, 260,000 से अधिक सीरियाई, मुख्यतः कुर्द हैं।

असुरक्षा, आजीविका की कमी और उनके घरों के नष्ट होने या क्षति के कारण उन्हें अपने घरों में लौटने में बाधा उत्पन्न हुई है। वर्तमान में, 1 मिलियन से अधिक इराकी इस्लामिक स्टेट (आईएस) विद्रोह के कारण आंतरिक रूप से विस्थापित हैं, जबकि 5 मिलियन अन्य अपने मूल क्षेत्रों में लौट आए हैं।

सभी विस्थापन शिविरों को बंद करने की इराक की योजना तब आई जब सुरक्षा बलों द्वारा 2017 में आईएस आतंकवादी समूह से देश की पूर्ण मुक्ति की घोषणा के बाद देश में सुरक्षा स्थिति में नाटकीय रूप से सुधार हुआ है।

काठमांडू में गुटखा व तंबाकू पदार्थों पर पूर्ण प्रतिबन्ध, सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान निषेध

काठमांडू

नेपाल की राजधानी काठमांडू में गुटखा सहित सभी तम्बाकू पदार्थों की बिक्री व वितरण पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने का फैसला किया गया है। साथ ही सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान निषेध का कड़ाई से पालन किए जाने की बात कही गई है।

काठमांडू महानगरपालिका ने सूचना जारी करते हुए आगामी 13 दिसम्बर से किसी भी प्रकार के गुटखा, पान मसाला एवं तम्बाकू पदार्थों की बिक्री व वितरण पर रोक लगाने की घोषणा की है। महानगरपालिका के स्वास्थ्य विभाग के तरफ से जारी अधिसूचना में कहा गया है कि खुला, पैकेजिंग या रीब्रांडिंग सहित किसी भी रूप में गुट्खा, पान मसाला या अन्य तम्बाकू पदार्थ के बिक्री व वितरण पर पूर्ण रोक लगा दी गयी है। इससे जुड़े सभी व्यवसायियों, होलसेलर और खुदरा दुकानदारों से 13 दिसम्बर से इसकी बिक्री-वितरण या भण्डारण नहीं करने को कहा गया है।इसके अलावा महानगरपालिका ने सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान निषेधित संबंधी कानून का सख्ती से पालन करने की बात कही है। जारी अधिसूचना के मुताबिक नेपाल के कानून के मुताबिक बसअड्डा, हवाईअड्डा, शिक्षण संस्थान, बाल कल्याण गृह, सार्वजनिक शौचालय, होटल, रेस्टोरेंट, छात्रावास, जिम, डिपार्टमेंटल स्टोर, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, सिनेमाघर, धर्मशाला, सार्वजनिक प्रतीक्षालय, धार्मिक स्थानों, सभा, सम्मेलन, जुलूस-प्रदर्शन जैसे सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान करने पर पूर्ण प्रतिबन्ध है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।